Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

3. C. 58. Hindi Vids 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Sītā-vanavāsa.

Seeta Banbaas

सीताबनबास

سیتابن باس

जो

बंगला से स्वदेशीय भाषा में मुन्शी हरबंशलाल
ने पंडित तारा चरण रत्न की सहायता से अनुवाद किया

और

श्री बाबू अविनाशी लाल की आज्ञानुसार गोपी नाथ
पाठक ने बनारस लाइट प्रेस में मुद्रित किया था

अब

भाषानुरागियों के सुखबोध और पाठ निमित्त यह
पातिव्रत प्रकाशक और राजनीति संयुक्त ग्रंथ

पहली बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया

फ़रवरी सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् फ़रवरी सन् १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
संस्कृत की पुस्तकें	जातका लङ्कार स०	शार्ङ्गधर संहिता	४ चौथे हिस्सा में
लघु कौमुदी	जातका भरण	पाराशरी सटीक	शान्ति पर्व्व, दान धर्म्म
सिद्धान्त चन्द्रिका	होरा मकरन्द	शीघ्र बोध सटीक	अश्वमेध आश्रम
अमरकोष तीनों का स०	जातक चन्द्रिका	लघु जातक	वासिक पर्व्व, व मौसल
पञ्च महा यज्ञ	जातका लङ्कार	षट् पञ्चाशिका	पर्व्व, व वानप्रस्थान स्वर्गारोहन पर्व्व
निर्णय सिन्धु	दैवज्ञा भरण	सामुद्रिक	हरिवंश पर्व्व
संग्रह शिरोमणि	ज्ञान स्वरोदय	भाषा (इतिहास)	महा भारत पर्व्व अ-
भगवद्गीता सटीक	रमलसार	महा भारत	लेहदा भी है
दुर्गा पाठ सटीक	इन्द्रजाल	१ पहिले हिस्सा में	१ आदि पर्व्व
विष्णु भागवत	संस्कृत उर्दू टी० स०	आदि पर्व्व, सभा पर्व्व	२ सभा पर्व्व
भविष्योत्तर पुराण	मनुस्मृति	बन पर्व्व ॥	३ बन पर्व्व
अपराध भञ्जन स्तो०	विष्णु हारीत	२ दूसरे हिस्सा में	४ विराट पर्व्व
दुर्गा स्तोत्र	सहिष्णु स्तोत्र	विराट पर्व्व, उद्योग	५ उद्योग पर्व्व
कायस्थ कुल भास्कर	संस्कृत भा० टी०	पर्व्व, भीष्म पर्व्व,	६ भीष्म पर्व्व
कायस्थ धर्म्म निरूपण	अमरकोष	द्रोण पर्व्व ॥	७ द्रोण पर्व्व
तथा छोटा	याज्ञवल्क्य स्मृति	३ तीसरे हिस्सा में	८ कर्ण पर्व्व
मथुरा सभा	सन्ध्या पद्धति	कर्ण पर्व्व, शल्य प-	९ शल्य पर्व्व व गदा
ज्योतिष	व्रतार्क	र्व्व, गदा पर्व्व, सौप्ति-	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व
मुहूर्त्त गणपति	भगवद्गीता टी० ह० वं०	क पर्व्व, योषिक प-	मय योषिक व वि-
मुहूर्त्त चक्र दीपिका	भगवद्गीता टी० आ० गि	र्व्व, विशोक पर्व्व,	शोक व स्त्री पर्व्व
मुहूर्त्त चिन्तामणि स०	गीत गोविन्द	स्त्री पर्व्व, शान्ति प-	१० शान्ति पर्व्व राज
मुहूर्त्त मार्त्तण्ड स०	कथा सत्यनारायण	र्व्व में राज धर्म्म आ-	धर्म्म व आपद धर्म्म
मुहूर्त्त दीपक	परमार्थ सार	पद धर्म्म मोक्ष धर्म्म	
बृहज्जातक सटीक			

भूमिका ॥

आर्य्यावर्त निवासी महाशयों पर विदित है कि प्राचीन समय में सहस्रों वर्ष तक यह भारतखण्ड भूमि विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम और श्रेष्ठाचार में सर्व भूमण्डल में प्रसिद्ध और अतिविख्यात थी विशेषतः यह मध्यदेश कुरुक्षेत्र से हरिहरक्षेत्र पर्य्यन्त ऐसा अनूपम और इस के निवासी सर्व्व प्रकार की विद्या नीति धर्म्म और तत्वज्ञान शास्त्र में ऐसे अद्वितीय रहे कि कभी किसी प्रदेश में वैसे न हुये और अब तक कहीं नहीं होते हैं कुछ थोड़ीसी अस्थिमात्र जो रह गई है उस्से बोधहोता है कि उन के सत्य धर्म्म और अलौकिक नियम धारण करना इतर मनुष्यों से दुस्तर है ऐसे गुणों से सम्पन्न सुरसरि तीर निवासी जन अपने को सुर और अन्यदेश बासियों को असुर जानतेथे। फलतः संस्कृत विद्या और अमृतरस सनी संस्कृत मिली मनोरम भाषा इस देश की ऐसी अनूपम रही कि जिसे सुनकर देवता लोग चत्कृत होते थे। यहां की जैसी साधारण बोल चाल थी वैसी कहीं की काव्य रचना न हुई। इस्से जैसे यहां के साधारण प्रजा स्वतंत्रता और सुख भोग करते और मान मर्य्यादा पाते रहे वैसे अन्य प्रदेश के महाराजों को अप्राप्त और दुर्लभथा। सत्य है शिष्ट और सभ्यलोगोंका शिष्टाचार और सभ्यता वर्णनकरना अनदेखे सभ्यता रहित पुरुषोंको आश्चर्यमेंडालना और निष्फल पौराण सुनाना है। पर कालकराल की विचित्र गति से यह देश अब ऐसा उजड़ प्रदेश और मनुष्य शून्य हो बनमानुषों से भर गया है, कि एक एक की बात न सुनता और न समझता न अपने आत्मीय बन्धुवर्ग की प्रतीत करता और न उनमें सत्य स्नेह रखता है इन सब सत्याचरणों से यहां वाले यहां तक अनजान होगये हैं कि अपने बड़ों की शुद्धरीति वो प्रीति का बरताव और बुद्धि वो पराक्रम का प्रचार परस्पर स्वदेशियों से भूल गये हैं कि महानुभाव संस्कृत

फारसी और इङ्गलैण्डीय भाषा के पण्डित लोग अपने देश की शुद्ध भाषा कोई नहीं बोलते और न लिखसक्ते बरन इतना नहीं जानते कि जो हम बोलते हैं देशीय भाषा है वा प्रदेशीय भाषा है फिर कैसे परस्पर प्रीति और सत व्यवहार प्रचार हो और कैसे बुद्धि और विद्या जो सर्व कुशल औरमङ्गल के मूल हैं उन्हें प्राप्त हों कदापि चार शब्द की बात अपनी भाषा में शुद्ध नहीं कहसक्ते कि उसमें दो शब्द अन्य भाषा की न मिले हों यही कारण है कि यहां की बोली पांच २ क्रोश पर छिन्नभिन्न हो गई जिस्से स्वजातीयबिजातीयकी नाईं दरशनेलगे, और आपसकी रीति वो व्यवहार सब छूटगये विशेषत:इस सर्व्व नाशघटना का कारण परस्पर विरोध, एक मत से अनेक मत का होना, इस्से बल, बुद्धि, पराक्रम और स्वतंत्रता का मिटना, परदेशियों का इसदेश में आना, स्वदेशियों को पराजय करना, सत्य विद्या का नष्ट होना, मिथ्या ब्यौहार का प्रचार पाना, और परदेशीय भाषाका उत्पन्न होना, इन सब न्यूनता और अभाग्य का मूल जो हम सब भोग कर रहे हैं, अपनी भाषा से बियोग होना, भासमान है जो दग्ध शल्य की नाईं सर्वदा दहन करता है ॥

सत्य है उत्तम भाषा से मनुष्य उत्तम बिद्यामान, बुद्धिमान और पराक्रमी होता है और बनमानुष्य वो पशुवों से श्रेष्ठ गिनाजाता और अक्षय सुख भोग करता है ॥

यही कारण है कि इङ्गलिण्डीय न्याय प्रवर्तक लोग आर्य्यावर्त्त के अन्य २ देशों में जहां जो भाषा बोली जाती और जो अक्षर लिखे जाते हैं वहां उसी भाषा और लेख में न्याय प्रबंध निर्म्मित और प्रचार कियाहै यहां कुछ नियत न होने से अब तक नहीं किया पर बड़े आश्चर्य की बात है कि चिरकाल व्यतीत हुआ कि हमारे देश में यमन महाराजों का राज्य गत हो गया अर्थात् मृतकवत उठ गया, अबलों वह भाषा और अक्षर मृतकवत वर्त्तमान है इस विषय में बर्त्तमान राजा और प्रजा कुछ प्रबन्ध और उद्योग नहीं करते जिसमें यह कंटक मृतक दूरहो और शुभकार्य का प्रवेश, प्रजागण की उन्नती और राजाका अचल राज्य और जैजैकार हो ॥

यह बात समुदाय राजा और प्रजागणों को सर्वदा ध्यान में रखने और स्मरण करने के योग्य है कि जब लौं इस मध्यदेश में जो सबसे श्रेष्ठ है यह दुराचार और दुष्टों का व्यापार मध्यवर्ती रहेगा तबलौं परस्पर प्रीति और आनन्द न उत्पन्न होगा, जब लौं आर्य्यावर्त निवासीसित संस्कृत और अपनी साधु भाषा में उद्योग और प्रीति न करैगें तब लौं अन्य प्रदेशीय भाषा में व्यर्थ परिश्रम कर सर्वदा ऋणी बने रहैंगे कभी ज्ञान को प्राप्त हो मुक्त न होंगे, उत्साह उत्सव और उन्नती का मुंह न देखैंगे आगे हरि इच्छा बलवान, जोही पर ईश्वर की कृपा से अब हमारे पूर्वदेश निवासी जिधर मे सूर्य्य उदय होता है बङ्गाली भ्रातृगण को बुद्धि प्रकाश हुई है कि ऐसे घोरअन्धकार और बिपरीत समय में सतबिद्या और बुद्धि का प्रकाश सूर्य्य की नाईं हम से पहिले देखा और आगंतुक बिपरीत का बर्ताव और पशु वत् ब्योहार त्याग शिष्टाचार और देव बाणी का अवलम्ब ग्रहण किया जिस्से अल्प काल में बहुत सी उत्तम और अनूपम रचना सत्य रससनी साधु भाषा में प्रस्तुत हुई हैं कि उन को देखतेही अन्तः करण काअन्धकार निवृत हो जाता है, बिद्या वो बुद्धि का यथार्थ निर्मल स्वरूप प्रकाशमान हो आनंद जनक होता है। अब क्रम से भाग पाने में हम भी उन से अधिकार रखते हैं इस लिये प्रथम मङ्गल सौभाग्य संचार के हेतु सर्व गुण सम्पन्न अद्वितीय पुरुषोत्तम महाराज राम और सीता देबी का सम्वाद जिसे सत महा कवि पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बंगला भाषा में अत्यंत सत्य और मनोरम काव्य रचना किया है मैंने तद अनुसार आर्य्यावर्त की साधु भाषा में अनुवाद किया इस हेतु से कि सत्यनाम और सत्य कथा के प्रभाव से इस देश का दुःख दूर और सुख की समृद्धि हो, और यह ललित मनोहर कथा जो सर्व आर्य्यावर्त देश में निश्चित् धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष दायिनी और अत्यन्त सर्व जन मन रंजन और प्रियतम प्रसिद्धि है बिख्यात हो। इस लिये श्री ५ काशिराज द्विजराज महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह सर्वगुण निधान, दयावान, शीलसागर और धर्म में उजागर परम भक्त हैं उन के पबित्र नाम पर यह अनूपम रचना अर्पण और समाप्त करता हूं परस्पर प्रेम

से महाराज की सत कीर्ति और इस पवित्र कथा की स्मृती हो सत जनों के हृदय में सर्वदा उभय निवास करैं जिस्से कल्याण हो ॥

निवेदन पत्र हरिबंशलाल ॥

श्रीमहाराजरामचन्द्रायनमः ॥

सीता बनबास ॥

श्रीमहाराज रामचन्द्र राजपदपर प्रतिष्ठित हो निर्विघ्न अप्रतिहतप्रताप से राजशासन और पुत्रवत् प्रजा पालन करने लगे ॥ १ ॥

उनके शासन प्रबंध में थोड़े दिन में समस्त कोशल राज्य में सर्वत्र सर्व प्रकार से सुख समृद्धि परिपूर्ण होगई, फलितार्थ उनके राज्य अधिकार में प्रजा लोगोंका सब अंश में इतना सौ भाग्य संचार हुआ कि भूमण्डल में किसी समय किसी राजा के शासन समय में, इस प्रकार का न्याय सुख, नहीं लक्षित होता वे प्रतिदिन ठीक समय पर अबाहित चित से राज काज परियालोचन कर तीनों भाई और जनक सुता के सहवास सुख से समय व्यतीत करते रहे। काल पाकर जानकी को गर्भ प्रगट हुआ। यह देखने से राम और राम जननी कौशिल्या के अह्लाद की सीमा न रही, समस्त राजभवन उत्सव से परिपूर्ण हुआ, और पुरवासी गण मनके हुल्लासमे कि राज कुमार का दर्शन अति शीघ्र करेंगे अपनेर गृह में नाना प्रकार की उत्सव क्रिया करने लगे ॥ २ ॥

कुछ दिन पीछे महर्षि ऋष्य शृङ्ग ने यज्ञ अनुष्ठान उत्सव में राजा रामचन्द्र को समस्त परिवार सहित अपने आश्रम में उपस्थित होनेके हेतु निमंत्रण किया उस समय जानकी जीका गर्भ प्रायः पूर्ण अवस्था में रहा इस कारण वे और उनके अनरोध से राम और लक्ष्मण निमंत्रण रक्षा करने में असमर्थ्य हुए, केवल सब बड़ी महारानी गण, वशिष्ठ मुनि, उनकी स्त्री अरुंधती ने अपनायत व्योहार करन के हेतु जामात यज्ञ में गमन किया। यद्यपि ए लोग भी जानकी को पूर्ण गर्भिणी घरमें छोड़ किसी प्रकार से यज्ञ में जाने की सम्मति न हुई तौ भी केवल जामात का निमंत्रण उलंघन करना अविधेय जान निदान अनिच्छा पूर्वक यज्ञ दर्शन के निमित्त गमन किया। कुछ दिन पहिले राजा

जनक लड़की और जामात को देखने के हेतु अयोध्या में आए थे और कौशिल्यादि के निमंत्रण में जाने के पहिलेही मिथिला को गमन किया, प्रथम श्वसुरजन बिरह द्वितीय पित्र बिरह दोनों बिरहसे जानकी अत्यंतशोकसे व्याकुलहुईं पूर्णगर्भ अवस्था में शोक मोहादि द्वारा अभिभूत होने से अनिष्टा पातकी संभावना होती है इसलिये रामचन्द्र को सर्वकर्म परित्याग कर सीता का सम्बोधन करने हेतु नित्य उनके निकटअवस्थित होना पड़ा ॥ ३ ॥

एक दिन रामचन्द्र जानकी के समीप बैठे रहे उससमय प्रतिहारी ने आकर बिनय और नम्रता पूर्वक वाक्य से निवेदन किया कि महाराज महर्षि ऋष्य शृंग के आश्रम से अष्टावक्र मुनि कुछ संदेश लेकर आये हैं, राम और जानकी ने श्रवण मात्र अतिशय व्यग्र हो कहा उन्हे शीघ्र इहां ले आवो द्वारपाल तुरत आज्ञानुसार प्रस्थान पूर्वक पुनर्बार अष्टावक्र जी के साथ उनके सन्मुख उपस्थित हुआ अष्टावक्र जीने आकर दीर्घ आयुष्य कह हाथ उठा आशिर्वादकिया, राम और जानकी ने प्रणाम कर बैठने के हेतु आसन प्रदान किया, ऐसे मुनि नाथ उपबिष्ट हुए, तब रामचन्द्र ने उनसे जिज्ञासा किया कहिए भगवान ऋष्य शृङ्ग कुशल से हैं और उनका यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न होता है फिर सीता जीनेभी पूछा कहिए हमारे गुरु जन और आर्य्याशांता अर्थात् सासु लोग कुशल से हैं वे लोग हम लोग कोस्मर्ण करतेहैं व एकही बार बिस्मृत होगये ॥ ४ ॥

अष्टावक्र जीने सबका कुशल मंगल बिज्ञापन कर जानकी जीसे संभाषण पूर्वक कहा देवी भगवान बशिष्ठ देवने आपको कहा है कि भगवती बिश्वम्भरा देवीने तुमको प्रसव किया और साक्षात् प्रजापति राजा जनक तुम्हारे पिता हैंतुम सर्व प्रधान राज कुल की बधू हुई हो तुम्हारे विषय में और कुछ प्रार्थितव्य नहीं देखते रात्रि दिन केवल यही प्रार्थना करते हैं कि तुम बीर प्रसवनी हो। सीता जी यह सुनकर किंचित् संकुचित हुई, इस पर रामचन्द्र ने हर्षित हो कहा कि इस्से बढ़कर कोई बात नहीं जो भगवान बशिष्ठदेवने अब इस प्रकार

की अभिलाषा की है तो अवश्य हम लोगों का मनोर्थ सम्पन्न होगा, फिर अष्टावक्रजी ने रामचन्द्र जीको सम्बोधन करके कहा कि महाराज भगवती अरुन्धती देवी और वृद्ध महिषी गण कल्याणिनी शान्ताने बारम्बार कहा है कि सीता देवी अबजो अभिलाष करेंगी सो अवश्य ही उनको सम्पादन करना होगा, तब रामचन्द्र ने कहा कि आप उन लोगों से हमारा प्रणाम सूचन कराके कहियेगा कि उन्हों ने अब तक जो अभिलाष किया है तत्काल वह संपादित हुआ है इस विषय में हमको किंचित् मात्र आलस्य और उदास्य नहीं तदनन्तर अष्टावक्रने कहा देवी जानकी आपके ननाद्रि पति ने आदर और स्नेह से संभाषण पूर्व्वक कहा है कि वत्स्य तुम पूर्ण गर्भा हो इस हेतु से तुम को न बुला सके इस लिये तुम हम पर विरक्त मत होना हमने राम और लक्ष्मण को तुम्हारे चित्त बिनोदार्थ छोड़ दिया है आरंभ यज्ञ समाप्त होते ही हम सब अयोध्या में आय तुम्हारा गोद एकही बार बीरनव कुमार से सुशोभित देखेंगे रामचन्द्र ने यह सुन कर सस्मित मुख और हर्षित हो अष्टावक्र से जिज्ञासा किया कि भगवान वशिष्ठ देवने हमारे प्रतिक्या आदेश किया है। अष्टावक्र ने कहा महाराज वशिष्ठ देवने आपको कहा है कि वत्स जामात यज्ञ में हम लोग फसे हैं इस्से कुछ दिन इस स्थान पर अवस्थित करना पड़ा तुम बालक अल्प दिन से राज्य पद पर प्रतिष्ठित हुए हो प्रजारञ्जन कार्य में सदा सावधान रहना क्योंकि प्रजा रक्षण जनित यशोधन रघुबंशियों के हेतु परम धन है। राम ने कहा कि मैं भगवान के इस आदेश से सविशेष अनुग्रहीत हुआ उनका आदेश और उपदेश सर्वदा हमारे शिर माथों पर है आप उनके चरणार्बिंदमें हमारा साष्टांग प्रणिपात निवेदन कर कहियेगा यदि प्रजा लोग के अनुरक्षणार्थ हमको स्नेह दया वा सुख भोग सर्वांग बिसर्जन करना पड़े अथवा प्राण प्रिया जानकी को भी परित्याग करना हो उसमें भी हम किंचितमात्र कातर न होंगे इस बातसे वे निश्चिन्त और निरउद्वेगरहें हम प्रजा रक्षण कर्य्य में एक मुहूर्त मात्रभी आलस्य वा उदास्यनहीं, सीता जी यह सुनकर अतिशय हर्षितहो कहने लगीं कि इस प्रकार न होनेसे आर्य पुत्र रघुकुल धुरंधर कैसे होंगे॥ ५॥

अनन्तर रामचन्द्रने सन्निकट परिचारक प्रति आदेश प्रदानकिया कि अष्टावक्रजी के हेतु यथा योग्य विश्राम स्थान सम्पन्न करदो, अष्टावक्र समुचित संभाषण वो आशिर्वाद प्रयोग पूर्व्वक बिदा हो बिश्रामार्थ प्रस्थान किया राम औ जानकीने फिर बार्ता आरंभकिया, उसी समय में लक्ष्मण ने आकर कहा आर्य मैंने जो चित्रकारको आप लोगों का चरित्र चित्रित करनेको कहाथा सो यह आलेख्य प्रस्तुत करके लाया है अवलोकन कीजिये राम ने कहा बत्सदेवी के दुर्मनाय मान होने पर किस प्रकार से उनका चित्त बिनोदन सम्पादन करना होता है सो तुम भली भांति से जानते हो इस लिये यह जिज्ञासा करते हैं इस चित्र पट में कहां पर्यंत चित्रित हुआ है लक्ष्मण ने कहा आर्य्य जानकी के अग्नि परि शुद्धि काण्ड पर्यंत ॥ ६ ॥

रामने सुनकर सातिशय उदासीनहो कहा बत्स तुम हमारे साम्हने फिर ऐसी बात मुख पर मत लाना यह बात सुन अथवा मन में लाकर मैं अत्यन्त कुंठित औ लज्जित होता हूं क्या दुःख का बिषय है जिनके जन्म परिग्रह करने से जगत पवित्र हुआ उन्हें भी अग्निपावन द्वारा पवित्र होना पड़ा, हाय लोक रंजन कैसा दुःख का व्रत है सीता ने कहा नाथ यह सब बातें आप मनन कर क्यों अकारण व्यग्र होते हैं आप ने उस समय सद्विवेचना से यह कर्म किया था और इस भांति न करने से चिर निर्मल रघुकुल में कलङ्क स्पर्श होता और हमारा भी अपवाद बिमोचन न होता सीता के वाक्य श्रवन कर रामचंद्र ने दीर्घ निश्वास परित्याग पूर्व्वक कहा प्रिय और बात का आवश्यक नहीं आवो इस समय आलेख्य दर्शन करें ॥ ७ ॥

फिर सब आलेख्य दर्शन में प्रवृत्त हुए सीताने किंचित् काललों इधर उधर दृष्टि संचारन कर जिज्ञासाकिया नाथ आलेख्य के ऊपर भागमें यह समस्त क्या चित्रित किया है राम ने कहा प्रिय यह सब समंत्र जन्मक्रास्त्र ब्रह्मादि प्राचीन गुरुगणने वेदरक्षाकेनिमित्त सहस्रों वर्ष तक तपस्याकरि सब तेजपुंजतपो मयअस्त्र लाभकिया सो गुरु परंपरा भगवानकृशाश्वके निकट समागतहुए राज ऋषि विश्वामित्रने उनके पाससे यह समस्त महा अस्त्र लाभ किया परम कृपालु राज ऋषिने सविशेष

कृपा प्रदर्शन पूर्व्वक ताड़का निधन के समय मुझको वह समुदाय प्रदान किया तद अवधि वह सब हमारे ही अधिकार में हैं, तुम्हारे पुत्र होने पर, उन लोगों के आश्रय करेंगे॥ ८॥

लक्ष्मण ने कहा देवी इधर मिथिलाका वृतांत अवलोकन करिये सीता ने देख कर यत्परो नास्ति अह्लादित हो कहा यही तो ठीक यह आर्य्यपुत्र शिव धनु उठाकर तोड़ने को उद्यत हुये हैं हमारे पिता विश्मय पन्न हो अनिमिष नयन से निरीक्षण कर रहे हैं क्या चमत्कार चित्र रचा है इधर विवाह काल की सभा उस में तुम चारोभाई कालानुसार भेष से भूषित वो अलंकृत हो कैसी शोभा पाये हो चित्र देख कर बोध होता है कि यह चित्रकार उस प्रदेश वो समय में विद्यमान रहा है, यह सुन कर पूर्व्व वृत्तांत स्मर्ण करने मे राम ने कहा प्रिय यथार्थ कहती हो जब महर्षि शतानन्द ने तुम्हारा कमनीय कोमल कर पल्लव हमारे करमें समर्पण किया वह यही वर्तमान समय जान पड़ता है॥९॥

चित्र पट में नीचे उंगली निर्देश करके लक्ष्मण ने कहा यह आर्य्या यह आर्य्या माण्डवी यह वधू श्रुतकीर्ति परंतु लज्जा बस हो उन्होंने उर्मिलाका उल्लेख नहीं किया सीता ने समुझ कर कौतुक करनेके निमित्त हास्य मुख हो उर्मिला की ओर उंगली प्रयोग कर लक्ष्मण से जिज्ञासा किया वत्स इधर यह क्या चित्रित है लक्ष्मण ने कुछ उत्तर न दिया मुसकरा कर कहा देवी देखो २ हर शरासन भंग होने की वार्ता सुन कर क्रोधमें, अधीर हो क्षत्रीय कुलांतकारी भगवान भृगु नन्दन अयोध्या गमन पथ हम लोगों का रोक कर खड़े हैं इधर देखिये भुवन विजयी आर्य्य उनका दर्पसंहार करनेके निमित्त शरासन पर शर संधान किया है, रामआत्म प्रशंसा वाद सुन कर अतिशय लज्जित हुए इसकारण लक्ष्मण से कहा इस चित्र में और नाना दर्शनीय विषयहैं केवल इसी अंश में क्यों भूले भ्रमण करते हो सीता ने राम वाक्य श्रवण कर अह्लादित हो कहा नाथ ऐसा न होनेसे संसारी लोग क्यों एक वाक्य हो आपकी इतनी प्रशंसा करते॥ १०॥

फिर अयोध्या में प्रवेश समय का चित्र देखने में आया राम अश्रु पूर्ण लोचन हो गदगद वचन कहने लगे हम लोगों के विवाह वर

आने पर कितने दिन तक उत्सव में व्यतीत हुए पित्र देव को कैसा आमोद और अह्लाद रहा मातृदेवी अभिनव बधुओं को पाकर कितनी अह्लाद सागर में मग्न हुई थीं सर्वदा उन के प्रति क्या २ और कैसी २ ममता प्रदर्शन करती रहीं राज भवन निरन्तर अह्लादमय और उत्सव से पूर्णथा, हा वह सब अह्लाद और उत्सव का दिन हीं जाता रहा लक्ष्मणने कहा आर्य्य यही मंथरा रामने मंथरा का नाम सुन कर अंतःकरण में विरक्त हो कुछ उत्तर न दिया अन्य दिशा में दृष्टि संचारन पूर्व्वक कहा प्रिय देखो २ शृंगवेर नगर में जो तापस तरु तले परम बन्धु निषाद पति सहित समागम हुआथा वह कैसा सुन्दर चित्रित हुआ है ॥ ११ ॥

सीता ने देख हर्ष प्रदर्शन कर कहा नाथ इधर जटा बन्धन और वलकल धारण बृतांत देखिये लक्ष्मणने, आक्षेप प्रकाश करकहा इक्ष्वाकु बंशीय वृद्ध वयस में पुत्र को राज लक्ष्मी समर्पण कर आरण्य बास आश्रय करते रहे, परन्तु आर्य्य को बाल्यही काल में वह कठोर आरण्य व्रत अवलंबन करना पड़ा फिर रामको सम्बोधन करके कहा आर्य्य महर्षि भरद्वाज हम लोगों को चित्र कूट जानेका पथ देखाकर जिसकी कथा कही थी वहयही कालिन्द्री तटवर्ती बट वृक्ष है तब सीता ने कहा क्यों नाथ इस प्रदेश की कथा आप को स्मर्ण है राम ने कहा हे प्रिये कैसे विस्मृति होगी इस स्थल में तुम पथ श्रम से क्लांत वा कातर हो हमारे बक्षस्थल पर माथ दे सोगई थी ॥ १२ ॥

सीता ने अन्यदेश में अंगुली निर्देश करके कहा नाथ देखो २ इधर से हम लोगों का दक्षिण आरण्य प्रवेश आरंभ हुआ है हम को स्मर्ण होता है इस स्थान पर मैं सूर्य्य के प्रचण्ड आतप से क्लांत हुई, तब आपने हाथ का पंखा, हमारे मस्तक पर धारण कर आतप निवारण किया, राम ने कहा प्रिय ये सब, वही गिरि तरंगिणी तीरवर्ती तपोबन है गृहस्थगण बानप्रस्थ धर्म अवलंबन पूर्वक इन्हीं २ तपोबनके बृक्ष तले कैसे विश्राम सुख से समय व्यतीत करते हैं लक्ष्मण ने कहा आर्य्य यह वही जनस्थान मध्यवर्ती प्रश्रवन गिरि है इस गिरि के शिखर देश में सर्वदा बहते हुए नव जलधर समूह संयोग से निरंतर

निविड़ श्यामता करि अलंकृत ऊपरी भाग घन सन्निविष्ट नाना प्रकार बन वृक्ष समूह आवृत रहने पर सर्वदा शीतल औ रमनीय नीचे भाग में प्रसन्न सलिल गोदावरी तरंग विस्तार पूर्व्वक, प्रवल वेगसे बहती है, राम ने कहा प्रिया तुमको स्मर्ण है कि इस स्थान में कैसे मनोरम सुखमे कुटी में रहते थे और लक्ष्मण इधर उधर भ्रमण कर आहार उपयोगी फल मूलादि लातेथे गोदावरी तीर मृदुमन्द गमन से भ्रमण करि सवेरे और सायंकाल सलिल कणवाहि शीतलवायु स्पर्श करते रहे हा! ऐसी अवस्था में कैसे सुखमे समय व्यतीत हुआ और वाह्य पदार्थ के साथ सुखोत्पत्तिका कितना सम्बन्ध है इसी में वह सम्पूर्ण रूप से प्रतीय मान होता है॥ १३॥

लक्ष्मणने आलेख्य के अपर देश में उङ्गली निर्देश करि कहा आर्य्य यह पंचवटी, यह शूर्पनखा, मुग्ध सुभावा सीता ने यह देख कर, फिर वही अवस्था आई यह शोच म्लानवदन हो कहा हा! नाथ यहीं तक देखना सुना निवृत हुआ राम ने हास्यमुखहो सांत्वना पूर्व्वक कहा हे विरह शंकिते यह चित्र पटहै। पंचवटी और पापिनी शूर्पनखा दोनों बास्तव नहीं। लक्ष्मण ने इधर उधर देख कर कहा कैसा चमत्कार। इसचित्र दर्शन से जन स्थान बृतांत वर्तमानवत् प्रतीय मान होताहै। दुराचार निशाचरगण ने सुवर्णमय मृग के छल से अति विषम अनर्थ घटना कियाथा। यद्यपि समुचित शत्रु विमर्द्दन हो वा सम्पूर्ण प्रकार से निवारण हुआ तथापि जब वह स्मर्ण होता तब मर्ण वेदन उपस्थित होता है हा! उस घटना के अनन्तर आर्य्यजन समागम शून्य जनस्थान भूमि में विकल चित हो कैसे कातर हुए थे वह देखने से पाषाणका हृदयभी द्रवित और वज्र विदीर्ण होताहै १४॥

सीता लक्ष्मण के मुख से यह सब कथा श्रवण करि अश्रु पूर्णनयन हो कहने लगी हा! मुझ अभागिनी के निमित आर्य्य पुत्र को कितना क्लेश भोग करना पड़ा उस समय राम के भी दुगुल नैन से, अश्रु धारा गिरने लगी। यह देख कर लक्ष्मण जी ने कहा आर्य्य चित्र देख कर आप क्यों इतने शोकाकुल हुए। राम ने कहा वत्स। उस काल में मेरी जो विषम अवस्था हुई थी यद्यपि यह संकल्प सर्वदा मेरे अन्तः-

करण में नहीं रहता कि शत्रु को नाश करूंगा तो मैं कभी प्राण रक्षा न कर सका चित्र दर्शन मे वह अवस्था स्मर्ण होते ही बोध होता है कि मेरी सब मर्म्म ग्रन्थी शिथिल हो गई । तुम बत्स यह सब अपनी आंखों देखकर फिरक्यों ऐसी मूर्खवत् बात कहते हो ॥ १५ ॥

लक्ष्मण यह सुन कर किंचित् संकुचित औ लज्जित हो कथान्तर से राम की चित्तवृति का, भावांतर संपादन करना उचित विवेचना करि कहा आर्य्य । इधर दण्डकारण्य भूमि देखिये यहां भयंकर कबन्ध राक्षस रहता था । इधर ऋष्यमूक पर्वत में मतङ्ग मुनि का आश्रम है। यह वही सिद्धश्वरी अर्थात् सेवरी धर्मना है उधर पम्पा सरोवर है। रामने पम्पाशब्द श्रवणकर सीताको सम्बोधन करि कहा प्रिये । पंपा परम रमणीय सरोवर है मैंने तुमको खोजते हुए पम्पातीर जाकर देखा कि सब प्रफुल्लित कमलगण मंद मारुत संयोग से थोड़ा २ हिल कर सरोवर की अनिर्वचनीय शोभा संपादन करते हैं । उन कमलों के सुगन्ध से चारो दिशा आमोदित उस में मधुकरगण मधुपान से मत्त गुन २ शब्द से गान करि उड़ते फिरते थे । हंस सारस आदि विहंगमगण आनन्द, पूर्व्वक निर्मल जल में, केलि करते रहे । उस समय मेरे युगल नैनमे स्वतः अश्रु धारा पात होने लगी । इस कारण मैं सरोवर को सम्यक् शोभा भली रूप से न देख सका । तथापि एक धारा जो गिरती और दूसरी उठतीथी उसमें जो अवसर मिलता उस मुहूर्तमात्र में किंचित् यह शुभ शोभा देखने में आई । सीता ने चित्र पट के अन्य भाग में दृष्टि संयोग करि लक्ष्मण से जिज्ञासा किया बत्स । उस पर्वत के प्रफुल्लित कदम्ब तरु शाखा में मदमत्त मयूर औ मयूरीगण नृत्य करते हैं उसकि नीचे शीर्ण कलेवर आर्य्यपुत्र मूर्छित हो पड़े हैं । और तुम रोते २ उनको धर रहे हो उनका क्या नाम है । लक्ष्मण नेकहा उस पर्वतका नाम मालवान् है यह वर्षा कालमें परम सुन्दरदिखाई पड़ता है । देखिये नवीन मेघ के संयोग से शिखर देश में कैसी अनिर्वचनीय शोभा है इसी स्थान में आर्य्य अत्यन्त कातर हुए थे । रामने यह सुन पूर्व अवस्था स्मर्णकरि अत्यन्त व्याकुल हो कहा बत्स । बस विराम करो और माल्लवान् का नाम मतलो सुन कर मेरा शोकसागर अनिवार्य्य

बेग से सीमा लंघन करता है, और जानकीका विरह फिर नवीन होता है उस समय जानकी में आलस्य का लक्षण प्रगट हुआ। यह देख कर लक्ष्मण ने कहा आर्य्य। और चित्र दर्शन का प्रयोजन नहीं, आर्य्या जानकी को क्लेश बोध होता है अब इनको विश्राम करना उचित है यह कह कर विदाले प्रस्थान किया। सीता ने राम से भाषण करि कहा नाथ मुझे चित्रपट दर्शन करते २ एक अभिलाषा उत्पन्न हुई है सो आप को पूर्ण करनी होगी राम ने कहा प्रिये वह क्या अभिलाषा है कहो झटित सम्पादित होगी तब सीताने कहा मुझे अत्यन्त अभिलाषा है कि फिर मुनि पत्नियों के साथ मिल कर तपोवन में विहार और भागीरथि के निर्मल जल में स्नान करूं। सीता की अभिलाषा सुन कर राम ने लक्ष्मण से कहा बत्स। अभी गुरु जन ने आदेश कह पठाया है कि जानकी जब जो अभिलाष करें तत्काल उसका संपादन करना उचित है अतएव शीघ्रही साथ जाने योग्य यावत् वस्तु आयोजन करो। कल प्रभातही इनको अभिलाषित प्रदेश में प्रेरण करना है। सीता सातिशय हर्षित हो कहने लगीं नाथ। आप भी संग रहें राम ने कहा हे प्रिये क्या यह भी तुमको कहना पड़ेगा। क्या हम तुमको आंख से अन्तराल करके एक मुहूर्त भी स्वस्थ रह सक्ते हैं॥ १६॥

पश्चात् लक्ष्मण ने गमन उपयोगी आयोजन करने के निमित्त प्रस्थान किया इतने में सीता को नींद आने लगी तो उठीं। तब राम ने कहा प्रिये यदि क्लान्त बोध होता हो तो हमारे गल देश पर भुज लता देकर कोई क्षण विश्राम करो सीता ने कोमल बांह लतासे राम का गल देश अवलंबन किया। वे अनिर्वचनीय सुख स्पर्शअनुभव करके कहने लगे प्रिये। तुम्हारी बांह लता के स्पर्श से हमारे सब शरीर में, ऐसी अमृत धारा वर्षा हो रही है और सब इन्द्रियां पूर्व अनन्य भूत रसावेश से बेवश होती हैं कि चेतन भी लुप्तहो रहा है। इस्से हमारे कुछ समझ में नहीं आता कि निद्रावेश वा मोहावेश अथवा मदावेश हमको हुआ है, सीता ने रामके मुख से,यह अमृत रूप बचन सुनकर हास्य मुखहो कहा आप मेरे ऊपर सर्वदा से अनुकूल और प्रसन्न हैं। और जो बात आपने कही स्त्री जाति का सौभाग्य

इससेबढ़े कर और क्या है । अतएव अब मेरी यही प्रार्थना है कि आप सर्वदा मुझपर ऐसाही स्नेह और अनुग्रह करते रहो ॥ १७ ॥

सीता का मृदु मधुर और मोहन वाक्य श्रवण करि राम ने कहा प्रिये तुम्हारा बचन सुनकर मेरा शरीर शीतलाकर्ण अमृत रस से परिपूर्ण और सब इन्द्रियां मुग्ध होगईं अन्तःकरण सजीव हुआ जीवरूप पुष्पजो मलिनथा सो प्रफुल्लित होगया सीताने लज्जितहो कहानाथ । इसी से आपको लोग प्रियाम्बुद कहते हैं जोहो श्रेष्ठ इस अभागिनी के भाग्य में इतना सौभाग्य था यह स्वप्न में भी न जान पड़ा । ऐसा कहकरि सोनेके हेतु उत्कंठित हुईं रामने कहा प्रिये इसस्थान में अन्य प्रकार की शय्या नहीं है अतएव अनन्य साधारण राम बाहु बिवाह समय से लेकर क्या बन क्या घर क्या शिशुकाल और क्या यौबन काल में उपधान स्थान में रहा सो आज भी तुम्हारा उपधान कार्य्य संपादान करै यह कहकर रामने बाहु बिस्तार किया औरसीता उसपर शिर देकर लेटीं और नींद में आ गईं राम ने स्नेह से बड़ीबेर तक सीता का मुख कमल बिलोकन करि प्रीति मे प्रफुल्लित नयन हो कहा । हा प्रिये तो अब सोगई कैसा चमत्कार है कि जब प्रिया का चन्द्र मुख देखता हूं तत्काल मेरा चित्त चकोर कृतार्थ और अंतरआत्मा अनिर्बचनीय आनन्द रस मे परिपूर्ण होता है । यथार्थ यह मेरे घरमें लक्ष्मीरूपा हैऔर नयन के लिये रसांजन रूपिणीहैं इनका स्पर्श चन्दन रसमे भी बढ़कर है । बाहुलता कण्ठमें पड़नेसे शीतल सुन्दर मुक्ताहार की शोभा देती है । क्या आश्चर्य है किप्रिया सब प्रकारसे अलौकिक सुख देती है । राम मनमें ऐसा कल्पना कर रहेहैं कि सीतानेस्वप्न देख निद्रामें कहा हा ! नाथ आप कहां हो ॥ १८ ॥

सीता का स्वप्न वाक्य श्रवण करि राम ने कहा क्या चमत्कार है, कि चित्र दर्शन मे प्रिया के अन्तःकरण में जो भूत विरह भावना उत्पन्न हुई थी सो वर्तमान हो अब दुख देती है यह कहकर सीताका शरीर सहलानेलगे । कहा हा ! स्वभाविक प्रेम कैसा परमपदार्थ है । सुख दुख सम्पति विपत्ति यौवन और बारद्विक अवस्था में एक रसरह-

ता है कभी विकृत नहीं होता ऐसे प्रणय सुख का अधिकारी होना स्वल्प भाग्य का फल नहीं किन्तु यह आक्षेपका विषय है । कि जगत में ऐसा प्रेम दुर्लभ है ॥ १९ ॥

राम का वाक्य समाप्त होते होते प्रतिहारी ने आकर हाथ जोड़ निवेदन किया । महाराज दुर्मुख द्वारपर खड़ा है, क्या आज्ञा होती है, (दुर्मुख अन्तः पुरवारी विश्वास पात्रहै) राम ने नवीन राज्य शासन विषय में पुरवासी और राज्य के लोगों का अभिप्राय जानने के हेतु उसे नियुक्त किया था । प्रतिदिन वह परिछिन्न वेष करि सब विषयोंका अनुसंधान करता और जो कुछ देखता सुनता राम से आकर कहता था उसका आगमन सुन रामने प्रतिहारी से कहा उसे तुरतबुलालाओ दुर्मुख आतेही प्रणाम करि हाथजोड़ सम्मुख खड़ा हुआ । रामने उसे देखकरि कहा, कहो आज क्या समाचार ज्ञात हुआ दुर्मुख ने निवेदन किया महाराज आपके अधिकार में प्रजा लोग बड़े सुख से काल व्यतीत करते हैं ॥ २० ॥

राम ने यह सुनकर कहा तुम प्रति दिन मेरेप्रशंसा बादका सम्बाद लाते हो यदि कोई कुछ दोष कहता हो तो वहभी कहो । मैंने तुम को केवल स्तुति वाक्य श्रवण करने के हेतु नहीं नियुक्त किया । दुर्मुख जो और दिन स्तुतिवाक्य श्रवण कर आता यथार्थ कपट रहित हो निवेदन करता था । उस दिन सीता सम्बन्धीय दोष वाक्य सुन आया था । अप्रिय सम्बाद कहना अनुचित जानकर गोपन किया । अब जब रामने दोष कथन की आज्ञादी तो वह चकित और हत बुद्धि हो किंचित्काल मौन हो रहा । फिर बुद्धि स्थिर करि शुष्क मुखहो विकृत स्वरसे कहा महाराज मैंने आपका कोई दोष कीर्तन नहीं सुना परंतु उसके आकार से राम को संदेह उत्पन्न हुआ इसकारण बारंबार आग्रहसे राम ने जिज्ञासा किया ॥ २१ ॥

राम का आग्रह देख शंकित हो दुर्मुख अपने मनमें चिन्ता करने लगा कि आज मैं कैसे बड़े संकट में पड़ा मैं कैसे राज्यमहिषी संबन्धीय जन अपवाद महाराज से निवेदन करूं । मैं बड़ा अभागा हूं नहीं तो क्यों ऐसा काम स्वीकार करता । परंतु आगा पीछा न सोच करजब

ऐसा काम स्वीकार किया तो प्रभु के निकट अवश्यही यथार्थ कहना उचित है। यह निश्चित कर कम्पित गात्रही निवेदन किया महाराज यदि अब मुझको यथार्थ कहनाही पड़ा तो आप किसी दूसरे निर्जन स्थान में चलिये क्योंकि मेरा प्राणान्त भी होतो ऐसी बात यहां नहीं कह सक्ता। राम ने सुनने के हेतु अति उत्कंठित हो सीताके जाग्रन की अपेक्षा त्याग कर धीरे २ उनका मस्तक अपने हाथसे उतार दुर्मुख के साथ दूसरे घर में प्रवेश किया। राम ने व्यग्र हो पूछा तुमने क्या सुना है क्षिप्र कहो। तुम्हारा आकार देखते ही मेरे मन में नाना प्रकार के संशय उपस्थित हुए हैं दुर्मुख ने विनती की महाराज मैंने जो अनिष्ट वार्ता सुनी है, सो महाराज से कहता हूं परंतु यह चिन्ता जब मेरे मनमें उदय होती है तब मेरे शरीरका रक्त सूख जाता है क्या करें बिना शोचे जब ऐसा काम स्वीकार किया तो अवश्यही कहना पड़ा मैंने जो सुना वह निवेदन करता हूं मेरा अपराध क्षमा कीजिये हे रघुकुलतिलक प्रायः सर्वजन एक वाक्य हो आप को धन्य वाद देते और कहते हैं कि हम लोग राम राज्य में परम सुख से काल व्यतीत करते हैं। किसी राजा ने कौशल देश में ऐसी नीति की रीति कभी नहीं प्रबन्ध किया। परंतु कोई २ राज्य महिषी का नाम लेकर निन्दा करते और कहते हैं। हमारे महाराज का चित्त अत्यन्त निर्विकार है कि सीता इतने काल तक रावण के घरमें एकाकिनी रहीं तौ भी महाराज ने उनका कुछ दोष न समझ अनायास अपने घरमें लेलिया। इसमें यही दोष देख पड़ता है कि हम लोगों कि स्त्रियां कुछ दुश्चरित्रा हों तो उनका शासन करना कठिन होगा क्योंकि जब हम लोग उनके शासन में उद्यत होंगे उसी समय वे सीता का दृष्टान्त देकर हमारा मुंह बन्द करैंगी और भी राजा धर्माधर्म का कर्ता जिस धर्म में चलेगा हम प्रजा भी देख सुन कर वही धर्म अवलम्बन करैंगे। महाराज जो मैंने सुना था यथार्थ निवेदन किया मेरा अपराध क्षमा हो हा! विधाता इतने काल पीछे तू ने मेरे दुर्मुख नाम को यथार्थ किया वह यह कहता हुवा रोते २ वहां से बाहर निकला ॥ २२ ॥

दुर्मुख के मुख से यह सीताका संक्रांत अपवाद वृतांत सुन कर राम ने हा ! हतोस्मि कहि, छिन्न तरु की नाईं भूतलमें गिर पड़े और गलित अश्रु लोचन हो आकुल वचन से विलाप औ परिताप करते २ कहा, हा ! कैसी सर्व नाश की बात सुनने में आई। इससे मेरे शरीर पर वज्राघात होना अच्छा था मैं अब तक क्यों जीता हूं मैं बड़ा अभागा हूं नहीं तो क्यों उपस्थित समय राज लक्ष्मीको छोड़ बनाश्रय करता। और क्यों दुर्वृत्त दशानन पञ्चवटी में प्रवेश करि प्राणप्रिया जानकीको हर निर्मल रघुकुल को पूर्व अभूत अपवाद से दूषित करता और फिर वह अपवाद अद्भुत उपाय से निवारित हो दैव विडम्बना करि नए शिर से चारा ओर प्रगट होता। अतएव मेरा जन्म लेना और शरीर धारण करना केवल दुःख भोग के हेतु हुवा। अब क्या करें कुछ बुद्धि में नहीं आती यह लोकापवाद दुर्निवार होकर उठा है। अतएव इसको अमूलक समझ कर उपेक्षा करना उचित है अथवा निर अपराधा जानकी को त्याग कर कुलका कलंक विमोचन करना उचित है। कुछ निश्चय नहीं कर सका हूं हा ! कभी कोई हमारी नाईं ऐसे उभय संकट में न पड़ा होगा। इस प्रकार के आक्षेप करि किंचित् काललों अधो दृष्टि हो मौनहोरहे। फिर दीर्घ निश्वास परित्याग करकहा अथवा इस विषय में करतव्य औ अकर्तव्य विचार का प्रयोजन है या नहीं क्योंकि जब मैंने राज्य का भार ग्रहण किया तब सब प्रकार से लोक रंजन करना मेरा परम धर्म और कर्तव्य कर्म है। अतएव जानकी को परित्याग करना सिद्धांत हुआ। हा ! हत बुद्धे तेरे मन में यही था यह कहि कर मुर्छित हो भूतल में गिरे॥ २३ ॥

किञ्चित् काल पीछे चेतन हो रामने अत्यन्त करुणा स्वरसे कहना आरंभ किया। यदि मैं और चेतन न होता तौ मेरा परम मङ्गल होता। निर अपराधा जानकी को परित्याग कर दुर्वारनीय पाप पङ्कमें लिप्त होना न पड़ता। अभी अष्टावक्र जीके साम्हने मैंने प्रतिज्ञाकी कि लोक रंजनके हेतु यदि जानकी को भी परित्याग करना पड़े तो करूंगा। ऐसी घटना प्रगट होने के लिए मेरे मुख से ऐसी दारुण प्रतिज्ञा निर्गत हुई हा ! प्रियेजानकी। हा ! प्रिय वादिनी। हा ! राममयजीविते।

हा ! आरण्य वासमहचरी । अंत में तुम्हारी यह अवस्था होगी यह स्वप्नमें भी किसीने न देखा था तुम ऐसे दुराचार, ऐसे नराधम, ऐसे हत-भाग्यके हाथपड़ीं कि किंचित्कालतो भी तुम्हारे भाग्यमें सुखभोग न था । तुमने सुतनके मिसमें विष वृक्षका आश्रय लिया, यद्यपि मैंने परम पवित्र राजवंश में जन्म ग्रहण किया तथापि व्योहार में मैं चंडालसे भी अधमहूं नहीं तो बिना अपराध तुम्हारे त्याग करने में क्यों उद्यत हुआ । हा ! यदि इसी मुहूर्त मेरा प्राण वियोग हो तो इस विपत्ति से छूट जाऊं । विशेष बचने का फल क्या है जीवन का प्रयोजन शेष होगया । जगत शून्य और आरण्य की नाईं देख पड़ता है । ऐसा कहते २ अत्यन्त आकुल हृदय और कम्पित हो किंचित् काल पर्य्यंत जड़ हो रहे । पश्चात् दीर्घ निश्वास परित्याग कर हा ! क्या हुआ यह कह कर कौशल्यादि को उद्देश कर कहने लगे । हा ! मात । हा ! तातजनक । हा ! देवी वसुन्धरे । हा ! भगवति अरुन्धती । हा ! कुलगुरु वशिष्ठ । हा ! भगवान विश्वामित्र । हा ! प्रियबंधु विभीषण । हा ! परम उपकारी सखे सुग्रीव । हा ! वत्स हनुमान । तुम सब कहां हो और कुछ नहीं जानते कि इस स्थान पर दुरात्मा मैं तुम लोगोंका सर्व नाश करने में उद्यत हुआ । कदापि इन महात्मा लोगोंके नामउच्चारण करने में अधिकारी नहीं मुझ ऐसे पातकीके नामग्रहण करनेसे निश्चित इन लोगोंके नाममें पापस्पर्श होगा । जबमैं सरल हृदया शुद्धाचारिणी पति प्राणा कामिनी को अत्यन्त निरअपराधिनी जान कर अनायास परित्याग करने में उद्यत हुआ तो मुझसे बढ़कर अन्य कौन महा पातकी है । हा ! राममय जीविते प्राणप्रिये जानकी पाषाण हृदय निष्ठुर राम से अंत में ऐसी दुर्गति होनी तुमने कभी स्वप्न में भी न सोची थी निश्चित मेरा हृदय पाषाण से निर्मित है नहीं तो क्यों नहीं विदीर्ण हुआ । अथवा विधाता ने जान सुन कर मेरा हृदय ऐसा कठोर बनाया यदि वह न बनाता तो मैं कैसे ऐसा भयंकर और निष्ठुर कर्म कर सक्ता ॥ २४ ॥

यह कह कर गद्गद्श्रु नयनमें फिर घरमें जानिद्रित जानकी के सम्मुख जा खड़े हुए और हाथ जोड़ सम्बोधन कर उन्हें कहा । प्रिये मैं इस जन्म के लिये तुम से बिदा हुआ । पश्चात् पृथ्वी को सम्बोधन कर

कहा हे देवी वसुन्धरे दुरात्मा राम ने तो जानकी को परित्याग किया अब पश्चात् तुम अपनी तनया को आपही रक्षा करो यह कह कर दुर्विसः शोकाग्नि में दग्ध हृदय हो उस गृह से बहिर्गत हुए। फिर भाइयों से परामर्श के निमित्त मंत्र भवन में प्रस्थान किया ॥ २५ ॥

इति प्रथमपरिच्छेद समाप्तः ॥ १ ॥

राम मंत्र भवन में प्रविष्ट हो राजासन पर उपविष्ट हुए और सन्निहित परिचारक को भर्त, लक्ष्मण, और शत्रुघ्न के बोलाने के लिए सपदि आज्ञा दिया। अपरान्ह समय महाराज रामचंद्र जानकी के साथ काल व्यतीत करते थे ऐसे समय मंत्र भवन में क्यों गमन किया और अकस्मात् हम लोगों को बुलाया है यह निश्चय न होने से भर्तादि भ्रातृ गण अत्यन्त सन्दिग्ध और व्याकुल हो सपदि मन्त्र भवन में गए। देखा तो राम हाथ पर सिर दिए अकेले बैठे और क्षण २ दीर्घ निश्वास परित्याग करि रहे हैं युगल नयन से जल धारा गिर रही है। राम को इस अवस्था में देख कर भ्रातृगण विषाद सागर में मग्न हुए। क्योंकर यह अवस्था प्राप्त हुई यह न ज्ञात होने से जड़वत और हत बुद्धि हो मकुरुख खड़े रहे कोई अत्यन्त अनिष्ट घटना हुई है शंका कर तीनों भाइयों में से किसी ने कारण जिज्ञासा करने में साहस न किया। पश्चात् वे लोग भयंकर विपत्ति निश्चय कर और राम की तादृश अवस्था देख अश्रुपात करने लगे। किंचित् काल पीछे राम ने भ्रातृ गण को उपस्थित देख धैर्य्य अवलम्बन पूर्वक वर्द्धमान शोकसागर को निवारण और नयन अश्रुधार से मार्जन कर स्नेह पूर्वक वाक्य से बैठने के लिए आज्ञा दिया। वे लोग आसन पर बैठे और कातर नयन से रामचंद्रका मुखारविंद मलिन देखा। उस समय राम के युगल नयनसे अश्रुधारा पतित होने लगी। भ्रातृगण ने देख कर अश्रुविमोचन किया पश्चात् लक्ष्मण घबरा कर चुप न रह सके विनय वाक्य से जिज्ञासा किया। आप की ऐसी अवस्था देख कर हम लोग मृतवत् हो रहे हैं स्वरूप दर्शन से स्पष्ट प्रतीत होता है अवश्य कोई अनिवार्य्य अनिष्टघटना हुई है नहीं तो गंभीर महासागर अल्प कारण से आकुल नहीं होता। और साधारण वायु के वेग से हिमाचल कभी चपल नहीं

होता । अतएव आप किस कारण से ऐसे कातर हुए हैं । यह सविशेष आज्ञा कर हम लोगों की प्राण रक्षा करनी उचित है । आप का मुखारविंद सायंकाल के कमल और प्रभात के चन्द्रमा से भी बढ़कर मलिन है । तुरत आज्ञा कीजिए और विलंब करना उचित नहीं । नहीं तो हम लोगों का हृदय विदीर्ण होता है ॥ २ ॥

लक्ष्मण के अतिशय आग्रह से कारण जिज्ञासा करने में राम ने दीर्घ निश्वास परित्याग कर दुसह शोक से अभिभूत हो अत्यन्त कातर स्वर से कहना आरंभ किया । वत्स भर्त, वत्स लक्ष्मण, वत्स शत्रुघ्न । तुम लोग मेरे जीवन और सर्वस्व धन हो, तुम लोगों के हेतु मैं दुर्वह राज काज का क्लेश सहन किए हूं । हित साधन और अहित निवारण में तुम लोग मेरे प्रधान सहायक हो । मैं अब विषम विपत्ति में पड़ा हूं और इस विपत्ति से उद्धार होने के हेतु तुम लोगों को कुसमय मैंने बुलाया है उपस्थित अनिष्ट निवारण के लिए एक ही उपाय है सो मैंने बहुत सोच समझकर कि अंत में वही उपाय अवलंबन करना सर्व प्रकार से उचित है सिद्धांत किया है । अब तुम लोग सावधान हो सुनो और सब विषय का संपूर्ण वृत्तांत तुम लोगों को सुनाकर यथा उचित अनुष्ठान कर उपस्थित विपत्ति से शान्ति लाभ करने का उपाय देखेंगे । यह कह कर राम निवृत्त हुए और प्रबल वेग से अश्रुधारा विसर्जन करने लगे । भ्रातृ लोग यह देख कर पहिले से भी अधिक कातर हो सोचने लगे । आर्य्य का लक्षण देखने से विलक्षण बोध होता है अवश्य कोई विषम अनिष्ट घटना हुई है । नहीं जान पड़ता आर्य्य कौन सी सर्वनाश की बार्ता कहेंगे । अनुभव द्वारा कुछ निरूपण न होने से श्रवण के हेतु अत्यन्त व्यकुलता से आकुल हृदय हो उनका मुख कमल अवलोकन करने लगे ॥ ३ ॥

राम ने किंचित् काल मौन हो पश्चात् निश्वास परित्याग कर कहा, भ्रातृ गण सुनो । हम लोगों से पहिले इक्ष्वाकु वंश में जो जो महानुभाव नृपति गण उत्पन्न हुए वे सबने अप्रतिहत प्रभाव से प्रजा पालन एवं नाना प्रकार अलौकिक कर्म समुदाय साधन कर इस परम पवित्र सूर्यवंश को त्रिलोक में विख्यात करादिया । अब मेरे ऐसा हत भाग्य और कौन है कि

जन्म ग्रहण कर इस परम पवित्र वंश को दारुण कलंक पंक में लिप्त किया । लक्ष्मण तुम सब जानते हो जब हम तुम तीनों जन पंचवटी में थे तब दुर्वृत्त दशानन ने हम लोगों के न होने से जानकी को बल पूर्वक हरण किया। और सीता अकेली बहुकाल तक उसके घरमे रहीं पश्चात हम लोगों ने सुग्रीव की सहयता से उस दुराचारी को उचित दंड दे सीता को उद्धार किया फिरमैं उस एकाकिनी पर गृह वासिनी जानकी को ग्रहण करि गृह में लाया। इस्से प्रजा गण अत्यन्त असन्तुष्ट होकर मेरा अयश कीर्तन करते हैं इसलिये मैंने प्रतिज्ञा किया कि जानकी को परित्याग करूं क्योंकि सब प्रकार से प्रजा रंजन करना राजा का परम धर्म है । यदि मैं इस में समर्थ न होऊं तो अधम की नाईं वृथा जीवन धारण करने का क्या फल है अतएव तुम लोग प्रसन्न चित हो इस विषय को अनुमोदन करो तो मैं उपस्थित विपत्ति से परित्राण पाऊं ॥ ४ ॥

ज्येष्ठ से कनिष्ठ गण यह वाक्य सुनकर अत्यन्त कातर हो भय वा विस्मय से अभिभूत हुए और इस विषय में क्या कहना चाहिए यह निश्चित न कर सकने से किंचित् काल लौं मौन हो अधोमुख हो रहे। पश्चात लक्ष्मण ने अत्यन्त कातर स्वर से विनय पूर्वक निवेदन किया आर्य्य, आपने जब जो प्रतिज्ञा की तब हम लोगों ने उसमें कोई तर्क वा उक्ति नहीं प्रकाश किया और अब भी आपकी आज्ञा पालन करने में समथ और प्रवृत्त हैं परंतु आप की यह प्रतिज्ञा सुन कर हम लोगों का प्राण पयान किया चाहता है । आप के निकट आकर ऐसी सर्व नाश कथा सुनेंगे किंचित् मात्र भी हमारे मन में यह शंका न हुई थी । जो कुछ हो, परन्तु इस विषय में मुझे कुछ कहना अवश्यही पड़ा, यदि आपकी अनुमति हो तो निवेदन करूं ॥ ५ ॥

लक्ष्मण का यह विनय पूर्ण और कातर वाक्य सुनकर राम ने कहा, वत्स क्या कहना चाहते हो कहो, तब लक्ष्मण ने निवेदन किया कि आर्य्या, जानकीएकाकिनी रावण के घर अवस्थितरहीं यथार्थ है और रावण अति दुर्वृत्तिथा इसमें भी कोई संशयनहीं परंतु दुराचार कासमुचितदंड विधान पूर्वकहो पश्चात् आर्य्या आप के सन्मुख लाईगईं

आप अपवाद के भय से पहिलेही उनके ग्रहण करने में सम्मति न हुए तब अलौकिक परिक्षा द्वारा उनके शुद्धाचारिणी निश्चित होने पर आपने ग्रहण किया और घर लाए वह परिक्षा भी सब के साम्हने समाहित हुई थी हम आप दोनों और हमारी समस्त सेना औ सेनापति गण, एवं यावत् देव, देवऋषि, औ महर्षिगण परिक्षा के समय उपस्थित थे। सब ने साधुवाद प्रदान पूर्वक आर्य्या को अत्यन्त शुद्धाचारिणी जान कर अंगीकार किया फिर और उनको पर गृह बास के हेतु अपवाद मे दूषित करना उचित नहीं। अतएव, आप ने किस कारण अब ऐसी विषम प्रतिज्ञा की है वह नहीं जान पड़ता। अलौकिक लोकापवाद सुन कर आप ऐसे महानुभाव को विचलित होना उचित नहीं और सामान्य लोगों का न्याय अन्याय विवेचना करने के योग्य नहीं। क्योंकि उनकी बुद्धि और सोच अति सामान्य है। उनके मनमें जो उदय होता है वही कहें अथवा सुनें संभव असंभव विचार न करें और उसे निश्चित समझ कर विश्वास करें तो उनकी बात के अनुसार संसार यात्रा सुख से निर्वाह नहीं होती। आर्य्या जैसी सब प्रकार से शुद्धाचारिणी हैं उन के विषय में जहां तक हम जानते हैं किंचित मात्र भी आप के अंतःकरण में उनकी ओर से संशय नहीं एवं अलौकिक परिक्षा मे उत्तीर्ण हो उन्हों ने अपना निश्चित शुद्धाचार प्रगट किया जिस्से किसी के अंतःकरण में उस विषय का अनुमात्र संदेह नहीं हो सक्ता तो इस स्थल में आर्य्या को त्याग करने मे लोग हम लोगों को अत्यन्त तुच्छ बुद्धि कहेंगे। एवं धर्म विचार से विवेचना करने में हम लोग अत्यन्त अधर्म पंक में लिप्त होंगे अतएव आप सब विषयों का सविशेष जो पर्य्यालोचन कर जो करतव्य हो सो कीजिए। हम लोग आप के सब प्रकार से आज्ञाकारी हैं जैसी आज्ञा कीजिएगा उसे निःसंदेह चित से सिरपर धर सिद्ध करने में उद्योग करेंगे॥ ६॥

लक्ष्मण यह कह कर निवृत हुए। राम ने किंचित् काल मौन हो पश्चात् दीर्घ निश्वास परित्याग करि कहा बत्स, सीता अत्यंत शुद्धाचारिणी है इस विषय में मुझे कुछ संदेह नहीं। साधारण लोग

इसी विषय का सविशेष न समझ कर जैसा सुनते हैं वैसाही उनके मन में उदय होता है और उस पर विश्वास करते हैं और उसीका चर्चा रखते हैं यह भी मैं निश्चय जानता हूं। परंतु इस विषय में प्रजा लोगों का कुछ दोष नहीं। हम लोगों ने परिणाम न देखा और विवेचना पूर्वक काम नहीं किया। इस्से यह विषम सर्व नाशक घटना होती है। यद्यपि हम लोग अयोध्या में आकर प्रजा लोगों को बुला उनके साम्हने परिक्षा करते तो उनके अंतःकरण का संदेह दूर हो जाता सीता देव परिक्षा से उत्तीर्ण हुई और अपनी शुद्धता कीसब प्रकार से परिचय दी यह निश्चित है परंतु उस परिक्षा का प्रजा लोगों को वास्तव रूप से विश्वास नहीं होता और यह भी जान पड़ता है कि बहुत से लोगों ने परिक्षा का नाम भी नहीं सुना इसलिए सीता के चरित्र में उन लोगों का संशय दूर नहीं हुआ। इस स्थल में उनलोगों का कुछ दोष नहीं। एवं रावण का चरित्र और सीताका एकाकिनी बहुकाल पर्य्यंत उसके घर में बास इन दोनों विषयों के विवेचना करने में सीता के चरित्र पर संदेह करना कुछ आश्चर्य्य नहीं। अतएव मैं प्रजा लोगों का कुछ दोष नहींदे सकता। मेरेही भाग्य से ऐसी घटना हुई और होती है। यद्यपि मैं राज्य का भार ग्रहण न करता और धर्म को साक्षी कर प्रजा रंजन व्रत में प्रवृत न होता तो ऐसे अमूलक लोकापवाद में घृणाकारि अनायास संसार यात्रा सुख से व्यतीत करता यद्यपि राजा हो प्रजा रंजन न कर सके तो राजा के जीवन धारण का क्या फल है। देखो प्रजा लोगों ने सीता को असती निश्चय किया और उन लोगों के मन से यह निश्चय दूर करना संभव नहीं अतएव ऐसी अवस्था में सीता को घर में रखने से हम को व्यभिचारणी संसर्गी कह कर प्रजा लोग घृणा करेंगे तो चिरकाल निन्दित होने से प्राण त्यागकरना अच्छा है। और मैं प्रजा रंजन के हेतु प्राण भी त्याग कर सक्ता हूं तुम लोग प्राण से भी अधिक हो यद्यपि प्रजा के कारण तुम लोगों को भी परित्याग करना पड़े तो उसमें भी मैं कातर नहीं। अतएव जानकी को त्याग करना कोई बड़ा कार्य नहीं तुम लोग जितना चाहो कहो और जो अन्याय हो सो हो परंतु

मैं जानकी को परित्याग कर कुलका कलंक दूर करूंगा यह सिद्धांत किया है। यद्यपि मेरे ऊपर तुम लोगों की दया और प्रीति है तो इस विषय में और कोई आपत्य करना उचित नहीं, चाहे सीता को नहीं तो हमको परित्याग करो इन दोनों में से एक करनाहीं पड़ेगा ॥७॥

यह कह कर दीर्घ निश्वास परित्याग करि राम ने किंचित् काल अश्रु पूर्ण नयन से सिर नीचे करि मौन हो पश्चात् कहा वत्स मन से सब आक्षेप दूर करि मेरी आज्ञा पालन करो किंचित् पहिले सीता ने तपोवन दर्शनकी अभिलाषा की थी उसी छलसे तुमउन्हे ले जाकर महर्षि बाल्मीक के आश्रममें त्याग करचले आओ ऐसाकरने से मैं प्रसन्न हूंगा। और इस विषयमें कोई आपत्ति करोगे तौमैं अत्यन्त असन्तुष्ट हूंगा तुमने कभी मेरी आज्ञा उल्लंघन नहीं किया। अतएव हे वत्स। कल्ह प्रातःकालही मेरी आज्ञानुसार काम करो किसी प्रकार से इसे अन्यथा करना उचित नहीं। और एक मेरा विशेष अनुरोध यह है कि मैंने उन्हें परित्याग किया यह बात भागीरथी के इस पार तक किसी प्रकार से जानकी को न जान पड़े तुम बड़े दयावान हो इसलिये तुमको पहिलेही सावधान किए देताहूं ॥८॥

यह कहि कर रामचन्द्र सिर नीचे कर अश्रु विसर्जन करने लगे और तीनों भाई जानकी के परित्याग विषय में राम को दृढ़ प्रतिज्ञा देख कोई आपत्य करने से विरत हो मौन अवलम्बन पूर्व्वक अश्रु विसर्जन करने लगे। किंचित् काल पश्चात् रमा ने लक्ष्मण को सीता के बनबास की आज्ञा तुरत सफल करने के हेतु फिर आज्ञा दे सब को विदा किया और आप विश्राम भवन में गये। वह रात चारों भाइयों ने अति दुख से व्यतीत किया प्रभात होतेही लक्ष्मण ने सुमंत्र को बुला कर आज्ञा दिया कि तुरत रथको सजा कर ले आवो आर्य्या जानकी तपोवन दर्शन के हेतु गमन करेंगी। सुमंत्रने आदेश पातेही शीघ्र रथ सजने के हेतु प्रस्थान किया पश्चात् लक्ष्मण ने जानकी के बास भवन में जाकर देखा कि जानकी जी तपोवन गमन के उपयोगी समस्त द्रव्य आयोजन करि प्रस्तुति हो रथ की प्रतिक्षा करतीहैं। लक्ष्मण ने सम्मुख जाकर प्रणामकिया सीताने वत्सचिरजीवी

और चिरसुखी हो कहि कर अकृत्रिम स्नेह से आशीर्वाद दिया। लक्ष्मण ने कहा आर्य्य। रथ प्रायः प्रस्तुत है और गमन काल में विलम्ब नहीं। सीता परम सन्तोष को प्राप्त हो प्रसन्न बदन हो कहा। बत्स, आज प्रातःकाल तपोवन दर्शन के हेतु जायंगे इस आनन्द से मुझे रात को नींद न आई, मैंने यावत् द्रव्य प्रस्तुत कर रक्खी है। रथ आतेही आरोहन करनेमें कुछ विलम्ब नहीं। मन में मैंने सोचा था कि इस समय मेरे तपोवन दर्शन में आर्य्यपुत्र सम्मत न होंगे परन्तु प्रसन्न वदन से सम्मत हो जाने की सम्मति दी है इससे मैं इस आनन्द और प्रीति लाभ को नहीं कह सकती हूं। मैंने जन्मान्त में कितनी तपस्या की थी जिसके फल से मुझे ऐसा पति अनुकूल मिला जैसा कभी किसी को न मिला होगा। आर्य्य पुत्र का स्नेह, दया, और मित्रता की बार्ता स्मर्ण करनेसे मेरे मनमें अपने सौभाग्य का गर्व उत्पन्न होता है। मैं देवतों के निकट सर्वदा काय, मन और वाक्य से यही प्रार्थना करती हूं यदि जन्मांत में फिर मेरा नारि जन्म हो तो आर्य्य पुत्र को अपना पति पाऊं। यह कह कर प्रसन्न नयन से कहा बत्स। बनबास काल में मुनि पत्नियों के साथ अत्यन्त प्रणय हुआथा उनलोगों को देखने और यह समस्त विचित्र बसन औ भूषण देने के हेतु ले लिया है ॥ ६ ॥

यह कह कर लक्ष्मण को सब बसन औ भूषण देखाने लगीं ऐसे समय में प्रतिहारी ने आकर सम्बाद दिया कि सुमंत्र रथ प्रस्तुत कर द्वार देश पर लाया है। सीता तपोवन दर्शन के हेतु ऐसी उत्कंठित हुई थीं कि सुनतेही अत्यंत व्यग्र हो समुदाय द्रव्य लेकर लक्ष्मण के साथ तुरत रथ पर आरोहनके लिए खड़ी हुईं। थोड़ेकाल में रथ अयोध्यासे बाहर हो जनस्थानमें प्रविष्ट हुआ। सीताने मनऔर नयनका आनंददायक वह सकल स्थान देखकर कहा बत्स लक्ष्मण, मैं जो यह सब मनोहर प्रदेश देखती हूं यह केवल आर्य्य पुत्र के प्रसन्नता का फल है वे प्रसन्न मन हो यदि हमको आज्ञा न देते तो मैं कदापि ऐसा आनन्द और प्रीति लाभ न कर सकती। मैंने जैसे आनंद से प्रार्थना की उन्होंने वैसेही अनुकूल हो आज्ञा दी। लक्ष्मण सरल सुभाव और कोमल

हृदया जानकी का यह आनंद देख और रामचन्द्र के हृदय का भाव स्मर्ण करि मन में मृतकवत् हुए । और बड़े कष्ट से मन का शोक सम्बर्ण कर भाव गोपन किया एवं जानकी की नाईं आनन्द प्रकाश करना आरम्भ किया ॥ १० ॥

ऐसेही भाव में किंचित् दूर सीता ने गमन कर फिर तुरत मलिन वदनही लक्ष्मण से कहा बत्स, अबलौं मैं आनन्द चित से आती थी परन्तु आकस्मात् अब मेरे मनमें अन्य भाव क्यों उत्पन्न होता है । दहिनी ओर की आंख फड़कती है और सब शरीर कम्पायमान और मन विकल होता जाता है । पृथ्वी शून्य देख पड़ती है आकस्मात इस प्रकार से क्यों चित चंचल और क्लेश उदय हुआ कुछ समझ नहीं पड़ता न जाने आर्य्य पुत्र कैसेहैं उनपर कोई अशुभ घटना हुईहो वा भर्त और शत्रुघ्न का कुछ अनिष्ट हुआहो अथवा भगवान ऋषि शृङ्गके स्थान से कोई अमङ्गल सम्बाद आया है । वहां गुरुजन में से कौन कैसे हैं कुछ समझ नहीं पड़ता । जो होय, अवश्यही कोई भयंकर अनिष्ट घटना हुई नहीं तो ऐसे आनन्द के समय क्यों मेरा चित्त चंचल और दुखित हुआ है । बत्स, क्यों ऐसा होरहाहै मेरा प्राण कैसा कर रहाहै चलो और तपोबनमें न जायंगे अयोध्या फिर चलें । और एक बात मैं तुमसे पूछती हूं आर्य्य पुत्र ने मेरे साथ आने को कहा था क्यों नहीं आए । रथपर चढ़ते समय मैं आनन्द में भूल गई तुमसे नहीं पूछा। उनके न आनेसे मेरे मनमें नाना प्रकार का संदेह उपस्थित होताहै । कहो क्या करें, मेरे चित का चांचल्य क्रमसे बढ़ता जाता है दुरात्मा दशानन ने जब मुझ को हरण किया था उससे कुछ पहिले ऐसा ही मेरा चित चपल हुआ था । क्या फिर कोई वैसाही उताप उपस्थित होगा । न जाने आज कैसे सर्वनाश का दिन है । ऐसा मन में होता है कि तपोबन में न आते तो अच्छा होता । आर्य्यपुत्र के निकट रहते तो कभी ऐसा दुःख न प्रगट होता और यह भी मनमें आता है कि आर्य्यपुत्र के साथ फिर मेरा मिलन न होगा ॥ ११ ॥

सीता का ऐसा चित्त चांचल्य देख और कातर वाक्य श्रवण कर लक्ष्मण अत्यन्त शोकाकुल हुए । परंतु अति कष्ट से भाव गोपन कर

शुष्कमुख और विकृत स्वर से कहा आर्य्ये, आप कातर मत हो रघुकुल देवता कुशल करेंगे । ऐसा अनुमान होताहै कि सबको छोड़आये और इहां कोई निकट नहीं इस कारण से आप का चित्त चपल हुआ । धीर्य्य धरो किंचित काल में यह भाव आप का निवृत्त हो जायगा । कभी २ सब का चित्त योंहीं अकारण विकल हो जाता है । यह चित्त स्वभाविक चपल है इसलिए सर्वदा इसमें एक भाव नहीं रहता तो आप इसके हेतु इतना उत्कंठित मत हो ॥ १२ ॥

सीताने लक्ष्मण का शुष्क मुख देख और विकृत स्वर सुन अत्यन्त कातर हो जिज्ञासा किया वत्स, तुम्हारे भाव दर्शन से मेरे अंतःकरण में महा संशय उत्पन्न होता है । तुम्हें मैंने कभी ऐसा मलिन रूप नहीं देखा । यदि कोई अनिष्ट हुआ हो तो स्पष्ट कहो । हमारे आर्य्यपुत्र तो अच्छे हैं मैं बिना उनको देखे हुए व्यग्रता से चली आई । अपरान्ह के पश्चात् फिर उनसे साक्षात् नहीं हुआ । बोध होता है आर्य्यपुत्रको देखती तो मुझे इतना दुःख न होता तब लक्ष्मण ने कहा आर्य्ये इतनी व्याकुल मत हो आप का उत्कंठा और दुःख देख मैं भी अत्यन्त उत्कंठित हुआ था इसीसे आपने मेरा मुख शुष्क और स्वर विकृत अनुमान किया नहींतो वास्तविक कोई उत्कंठाका कारण नहीं आप कोई विपरीत भाव न सोचिए जितनाहीं सोचोगी उतनाहीं उत्कंठा और दुःख होगा ॥ १३ ॥

यह कहते सुनते रथ गोमती तीर जा पहुंचा । उस समय में सर्व भुवन प्रकाशक भगवान सूर्यनारायण अस्ताचल में जा विराजमान हुए। संध्याकाल में गोमती तीर परम रमनीय शोभा होती है । उसे देखकर अत्यन्त व्यग्र चित्त वाले जन भी प्रसन्न हो आनन्द लाभ करते हैं। अतएव सीता जीने भी अपने उपस्थित दुःख को संपूर्ण निवारण किया । लक्ष्मण यह देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए उस रात्री को वहीं पर वास किया । जानकी जी पथ श्रम और मन की उत्कंठा से अत्यन्त कातर होगईं थी अतएव लेटतेही नींद में आगईं जब लों वे जागती रहीं तबलों लक्ष्मण ने नाना प्रकार की मनोहर कथा से ऐसा उन्हें स्थिर चित्त रक्खा कि किसी प्रकार से उनका मन उत्कंठित न होने पाया ।

फलित: दिन को जैसा जानकी के चितमें दुख रहा रात को उसका चिन्ह मात्र भी न जान पड़ा ॥ १४ ॥

प्रभात होतेही वे लोग गोमती तीर से चले सीता ने बाम और दक्षिण दोनों ओर सब स्थान परम रमनीय अवलोकन कर अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुईं । पहिले दिन जो उन्हें उत्कंठा और दुःख हुआ था उसका कुछ भी चिन्हन रहा ॥ १५ ॥

ऐसे सब नाना रमनीय देश दर्शन और लक्ष्मण के विचित्र कहनूत कथन करते २ रथ भागीरथ तीर पहुंचा । भागीरथ पार जानकी को जन्म पर्य्यन्त त्याग करना पड़ेगा यह सोचकर लक्ष्मण का शोक सागर अत्यन्त वर्द्धमान हो उठा। और भाव गोपन न कर सके रोदन करने लगे। सीता ने दुःखित हो जिज्ञासा किया वत्स, कहो तो तुम क्यों ऐसा भाव करते हो तब लक्ष्मण ने नयन जल मार्जन कर कहा आर्य्ये आप व्याकुल मत हो बहुकाल पश्चात् भागीरथी का दर्शन होने से मेरे अंतःकरण में कैसा एक अनिर्वचनीय भाव उदय हुआ कि जिस्से मेरे आंख से आंसू गिरने लगा । हम लोगों के पितामह गण महर्षि कपिल देव के श्राप से भस्म हुए थे और भगीरथ बड़ी तपस्या कर गङ्गा देवी को भू मण्डल में ले आए । और उन लोगों का उद्धार किया तो जान पड़ता है कि भागीरथ के दर्शन से मुझे वह भाव स्मर्ण हुआ इस्से चित विकल होगया । सीता अत्यंत कोमल हृदया और सरल सुभावा थीं अतएव यह कपट वाक्य भी सुन कर तुष्ट हुईं । और गङ्गापार उतरने के लिए व्यग्र हो लक्ष्मण से बारम्बार उसके उद्योग करने के लिए कहने लगीं परंतु गङ्गा पार होतेही कैसे दुस्तर शोक सागर में पड़ेंगी यह उनके मनमें कुछ न अनुमर्न हुआ। किञ्चित काल पश्चात् नाव आई तो लक्ष्मण ने सुमंत्र को इसी पार रथ रखने के लिए आज्ञा दे सीता को नाव पर चढ़ाया और थोड़े काल में भागीरथ पार पहुंचाया। सीता ने तपोबन दर्शन के हेतु अत्यन्त उत्कंठित हो उस ओर चलने का उद्योग किया तब लक्ष्मण ने कहा आर्य्ये किंचित ठहरो मुझे कुछ कहना है यह कहकर शिर निहुरा रोने लगे सीता ने चकित हो जिज्ञासा किया । वत्स कुछ कहेंगे यह कह कर क्यों इतना व्याकुल

हुए। जो कहना हो तुरत कहो तुम्हारा भावान्तर देख मेरा चित्त अत्यन्त घबराता है जो कहना चाहते हो शीघ्र कहो मेरा प्राण व्याकुल होता है। तुमने आते समय आर्य्यपुत्र का कुछ अनिष्ट देखा है अथवा और कुछ सर्वनाश हुआ है। क्या हुआ शीघ्र कहो तब लक्ष्मण ने कहा देवी कहने में मेरे मुख से वाक्य नहीं निकलता है। हा! आर्य्य-पुत्र के आज्ञाकारी होने में मेरे भाग्य में ऐसी दुर्घटना होगी यह मैं स्वप्न में भी नहीं जानता था। जैसी दुर्घटना हुई है उसे स्मर्ण करने से मेरा हृदय विदीर्ण होजाता है। यद्यपि इससे पहिले मैं मर जाता तो अच्छा होता अथवा मृत्यु से भी बढ़कर अनिष्ट होता तो मेरे मङ्गल का कारण था क्योंकि ऐसा होने से आर्य्य की ऐसी धर्म विरुद्ध आज्ञा पालन न करनी पड़ती। हा! विधाता मेरे भाग्य में यही था यह कह-कर छिन्न तरु की नाईं भूतल में पतित हो हाहाकार करने लगे॥ १६॥

सीता लक्ष्मण का ऐसा असंभावनीय भावान्तर देख किंचित् काल जड़वत और हतबुद्धि हो खड़ी रहीं। पश्चात् लक्ष्मण का हाथ पकड़ भूमि से उठाय अपने अंचल से उनका नयनाश्रु मार्जन किया। लक्ष्मण जब किंचित शान्त हुए तब सीता ने कातर वाक्य से जिज्ञा-सा किया। वत्स क्यों तुम इतने कातर हुए और क्यों तुमने अपनी मृत्यु की कामना की मैं तुमको अत्यन्त व्याकुल देखती हूं। तुम कभी अल्प कारण से ऐसे व्याकुल नहीं हुए अवश्यही कोई बड़ी अ-निष्ट घटना हुई है। क्या आर्य्यपुत्र पर तो कोई अनिष्ट घटना नहीं हुई क्योंकि तुम्हारा उन्हीं में प्राण है। भावान्तर देखने से निश्चय होता है प्रायः उन्हीं की कोई अमङ्गल घटना हुई है, जान पड़ता है कि कल्ह अपरान्ह में इसी से मेरा चित्त कातर हुआ था। जो हो तुम तुरत कहकर मुझे प्राणदान दो। मुझे बड़ा दुःख होता है शीघ्र कहो और विलम्ब न करो मेरा प्राण जाता है मैं निश्चय जानती हूं कि मेरा सर्वनाश हुआ चाहता है नहीं तो ऐसे समय में तुम क्यों ऐसे व्याकुल होते। सीता की यह व्याकुलता और कातरता देख ल-क्ष्मण का शोकानल अत्यन्त प्रचण्ड हुआ और युगल नयन से अन-र्गल अश्रुजल गिरने लगा। कंठरोध और वाक्य बन्द होगया जो कुछ

निष्ठुर वाक्य हो परन्तु हमको कहनाही पड़ेगा । यह सोचकर लक्ष्मण ने बारम्बार कहने का उद्योग किया किन्तु किसी प्रकार से मुख से न निकला । लक्ष्मण की यह अवस्था अवलोकन कर सीता उनका हाथ पकड़ कातर वचनसे बारम्बार कहने लगीं । वत्स और विलम्ब मत करो आर्य्यपुत्र ने जो आदेश किया हो वह कैसाही निष्ठुर हो सङ्कोच मत करो शीघ्र कहो मैं अनुमति देती हूं तुम्हारी बात सुन और तुम्हारा भाव देख मुझको स्पष्ट प्रतीत होता है कि मेराही कपाल फूटा है । क्या हुआ शीघ्र कहो विलम्ब मत करो । मैं अब क्षण भर नहीं बच सकी शीघ्र कह कर मेरी प्राण रक्षा करो । भला पूछती हूं आर्य्यपुत्र तो अच्छे हैं उनका अनिष्ट छोड़कर जो सर्वनाश हुआ हो उसके सुने मे मैं कातर न हूंगी । मेरा माथा खाव और आर्य्यपुत्र का तुमको सपथ है शीघ्र कहो और विलम्ब करने में मुझको क्षणभर जीते न देखोगे यदि याचना करके मेरा प्राण वध करना उचित न समझो तो शीघ्र कहो विलम्ब मत करो ॥ १७ ॥

सीता की यह अवस्था देख लक्ष्मण ने सोचा कि और विलम्ब करना अच्छा नहीं तब बहु यत्न से चित्त स्थिर करि अत्यन्त दुःखमे वाक्य उच्चारण किया । आर्य्या क्या कहें कहनेमे मेरा हृदय विदीर्ण होता है आप जो अकेली रावण के घरमें रहीं इस लिए प्रजागणने आप के चरित्र में सन्दिग्ध हो कलंक लगाया । आर्य्य ने यह सुनकर स्नेह दया और ममता छोड़ अपवाद विमोचनार्थ आप को परित्याग किया । एवं हम को आज्ञा दी कि तुम तपोवन दर्शन के छल से लेजाकर बाल्मीक के आश्रम में छोड़ आओ । वह साम्हने बाल्मीक का आश्रम है ॥ १८ ॥

यह कह कर लक्ष्मण भूमि में गिर मूर्छित होगए । सीता भी श्रवण मात्र से हत चेतना हो छिन्नमूला लता की नाईं भूतल शायनी हुईं । किंचित काल पश्चात् लक्ष्मण चैतन्य हुये और बहु यत्न से जानकी को भी चैतन्य किया । जानकी ने चेतना लाभ कर उन्मत्ता की नाईं स्थिर नयन से लक्ष्मण का मुंह देखने लगीं । लक्ष्मण हतबुद्धि हो छली की नाईं सिर नीचे करि अश्रु विसर्जन करने लगे किंचित काल पीछे जानकी ने प्रबल वेग करि आंखों से आंसू, कंठ से दीर्घ निश्वास

निकलने लगा और शरीर कम्पित हुआ ॥ यह देख कर लक्ष्मण अत्यन्त व्याकुल हो सीता को प्रबोध देने के हेतु यत्न करने लगे परंतु किस प्रकार से प्रबोध देना उचित है यह न समझ में आने से केवल अश्रु विसर्जन करने लगे ॥ १६ ॥

इस प्रकार से कुछ काल व्यतीत हुआ पश्चात् सीता ने स्वाभाविक धीर्य्य बल से किंचित् स्थिर चित हो कहा लक्ष्मण मैं किसको दोष दूं यह सब मेरे अदृष्ट का फल है नहीं तो मैं राजकन्या, राजबधू और राजमहिषी होकर ऐसी चिर दुःखिनी हुई हूं जैसी कभी कोई मेरी नाईं नहीं हुई। इससे निश्चित जान पड़ता है कि जीवन पर्य्यंत दुःख भोग करने के हेतु मेरा जन्म हुआ है अंत में मुझपर ऐसा दुःख पड़ेगा यह कौन जानता था। सच है विधाता का लेख कौन खण्डन कर सका है। बहुत काल पीछे आर्य्य पुत्र के साथ मिलन होने से मैंने निश्चय किया कि मेरे दुःख की अवधि होगई परंतु विधाता ने मेरे भाग्य में उससे सहस्र गुण अधिक दुःख लिख रक्खा था। यह स्वप्न में भी मुझे न जान पड़ा। हा! विधाता तेरे मन में यही था यदि मुझको चिर दुःखिनी करना ही तेरा अभिप्राय था तो क्यों थोड़े दिन के लिए मुझे सुखी किया। अथवा इस अधिक और असह्य दुःख भोग करने के हेतु थोड़ा सा सुख भोग करने का अवकाश दिया था। लक्ष्मण मैं नहीं कहि सकती हूं कि जन्मांतर में मैंने कितना महापातक किया था नहीं तो विधाता ने मेरे कपाल में कहां से इतना दुःख लिखा जैसा मैंने जन्मांतर में कर्म किया था वैसा ही इस जन्म में फल मिला जान पड़ता है कि जन्मांतर में मैंने किसी पतिप्राणा कामिनी को पति वियोगिनी किया था उस महा पाप से आज मैं अति विरहिनी हुई, नहीं तो आर्य्य पुत्र का हृदय स्नेह, दया और ममता से परिपूर्ण है, और मैं भी पतिप्राणा शुद्धाचारिणी हूं। यह आर्य्य पुत्र भी निश्चय जानते हैं फिर ऐसे समय में जो आर्य्य पुत्र ने मुझको परित्याग किया सो केवल मेरे पूर्व जन्मार्जित कर्म का फल है। बत्स मैं बनबास करने में कातर नहीं हूं। आर्य्य पुत्र के संग बहुत दिन तक बनमें रही उस समय एक दिन वा एक मुहूर्त भर

भी मेरे अंतः करण में दुःख का लेश नहीं हुआ और आर्य्य पुत्र के साथ जीवन पर्य्यंत बनबास करने में भी मुझे कुछ दुःख न होता परंतु अब मेरे मन में यह दुःख होता है, कि जब मुनि पत्नीगण मुझ से जिज्ञासा करेंगी कि आर्य्य पुत्र ने तुमको किस अपराध से त्याग किया तब मैं उन्हें क्या उत्तर दूंगी, वे लोग आर्य्य पुत्र को करुणा सागर जानती हैं यथार्थ कारण कहने से वे लोग मेरा कभी विश्वास न करेंगी, अवश्यही वे सब मेरा कोई गुरुतर अपराध समझेंगी। बत्स, अधिक क्या कहूं यदि मैं गर्भवती न होती तो इसी क्षण तुम्हारे सामने गङ्गा में डूब कर प्राण त्याग करती। भला कहो मेरे जीते रहने का अब क्या फल है ऐसी अवस्था में भी कभी प्राण रखना उचित है। मुझे यह आश्चर्य होता है कि आर्य्य पुत्र ने मुझे त्याग किया यह सुनकर भी अबतक मेरा प्राण बचा है इससे जान पड़ता है कि मेरी नाईं किसी का प्राण कठोर नहीं, नहीं तो अब तक मैं कैसे जीती हूं अथवा विधाता ने मुझे चिर दुःखिनी रखने के लिये सङ्कल्प किया है, यदि मैं प्राण त्याग करूं तो वह सङ्कल्प कैसे सुफल हो इस कारण से बची हूं २० ॥

इसी प्रकार विलाप करते२ दीर्घ निश्वास पूर्व्वक हा! क्या हुआ यह कह कर फिर मूर्छित हो भूतल में पतित हुईं शीलवान् लक्ष्मण यह देख सुन अत्यन्त कातर और शोका विभूत हो रोदन करने लगे और रामचन्द्र का यह लोकानुराग जैसा किसी ने कभी न देखा न सुना जो इस अनर्थ का मूल है सोच कर अत्यन्त दुःखी और मृतवत हो कहने लगे यदि पहिले मैं मर जाता तो ऐसा लोक व्यर्गर्हित और धर्म विवर्जित यह विषम विपति देखनेमें न आती। आर्य्य के आज्ञा पालन में सम्मति हो मैंने बड़ा अनिष्ट कार्य्य किया है मैं अत्यन्त निष्ठुर और पाषाण हृदय हूं नहीं तो ऐसे निष्ठुर काम का भार मैंने कैसे ग्रहण किया मैंने कैसी सरल हृदया शुद्धाचारिणी पति प्राणा कामिनी को ऐसा निष्ठुर वाक्य सुनाया। यदि आर्य्य की आज्ञा उल्लंघन करि मुझे जन्म भर विराग पात्र और जन्मान्तर में नर्क गामी होना पड़ता वह भी मेरे पक्ष में परम मङ्गल होता मैंने सब प्रकारसे

अत्यन्त असत् कार्य्य किया । हा ! विधाता तू ने क्यों मुझे ऐसे निष्ठुर काम करने में प्रवृत किया । हा ! हत हृदय तू अभी तक क्यों नहीं विदीर्ण होता । हा ! कठिन प्राण तू क्यों नहीं प्रस्थान करता । हा ! दग्ध कलेवर तू क्यों नहीं अबतक जल गया मैं आर्य्या की यह अवस्था नहीं देख सका । हा ! आर्य्य तुम ऐसे कठिन हृदय हो यह मैं स्वप्न में भी न जानता था । यदि तुम्हारे मन में यही था तो आर्य्या के उद्धार करने में इतने यत्न का क्या प्रयोजन था । दशानन के हरण पश्चात् तुमने क्यों उन्मत और हत चेतन हो हाहाकार करि भ्रमण किया अंत में यही काम करने के हेतु हम लोगों ने लंका समर में दुस्सः क्लेश राशि सहन किया था। जो हो तुम्हारी नाईं निर्दय और निष्ठुर हृदय कोई नहीं २१॥

किंचित् काल यह आक्षेप और रामचन्द्र की निन्दा करि लक्ष्मण शोक समुद्र का वेग निवारण करि सीताकी चेतना सम्पादन करने में प्रवृत हुए । सीता चेतन हो किंचित् काल लों जड़वत् रहीं फिर स्नेह पूर्व्वक लक्ष्मण से कहने लगीं, वत्स धीर्य्य धरो विलाप मत करो सब भाग्य के अधीन है। मेरे भाग्य में जो था सो हुआ। तुम और मत कातर हो शोक निवारण करो मेरी चिंता परित्याग करि आर्य्य पुत्र के निकट जाओ । क्योंकि वह मुझ को परित्याग कर, अवश्य ही कातर और क्षोभित चित हुए होंगे जिस्से उनका शोक निवारण और चित्त की स्थिरता हो वह यत्न करो और उनसे कहना कि मुझको परित्याग किया इसमें कोई दुःख करने की आवश्यकता नहीं। यह अच्छे सोच समझका काम किया है । प्राण अर्पण करनेसे भी प्रजा रंजन करना राजा का प्रधान धर्म है। हमको परित्यागकरि उन्होंने यथार्थ राज्य धर्म प्रतिपालन किया, मैं उनके मनको जानती हूं उन्होंने केवल लोकापवाद के भय से यह कर्म किया है । इस विषय में मुझ को कुछ सन्देह नहीं इसमें वे कुछ शोक और क्षोभ न करें प्रसन्न मन हो प्रजा पालन करें । और उनके चरण में मेरा प्रणाम करना कि मुझ को यद्यपि लोकापवाद के भयसे अयोध्या से दूर किया परंतु चित वृत्तिसे सर्वथा दूर न करना और मैं तपोबन में रहि एकाग्र मन हो इस उद्देश से तपस्या करांगी कि फिर जन्मान्तर में वह मेरे पति हों और उनसे

विशेष करि कहना यद्यपि भार्य्याभाव से मुझको परित्याग किया, परंतु साधारण प्रजा भाव से मुझको प्रतिपालन करना हीं पड़ेगा। क्योंकि वे सागर पर्य्यंत पृथ्वी के राजा हैं, मैं जहां रहूगीं कभी उनकी प्रजा से अलग न हो सकूंगी ॥ २२ ॥

यह कह कर लक्ष्मण का हाथ पकड़ अश्रुपूर्ण लोचन और कातर वचन से कहने लगीं। बत्स मेरे भाग्य में जो घटना हुई उस्से मैं विशेष दुःखिनी नहीं हूं परंतु आर्य्य पुत्र मुझको छोड़ यद्यपि कातर हुए हों तो इस चिन्ता से मेरा चित कातर होता है इस लिये उनसे विनय पूर्व्वक कहना कि शोक निवारणकरि तुरत प्रसन्न हो जांय। मुझको यद्यपि अत्यंत क्लेशहुआ परन्तु मैं उनको इस विषयमें किंचित् मात्र दोष नहीं दे सक्ती। मेरे जो भाग्य में था वैसी घटना हुई इसमें उनका क्या दोष है। बत्स और एक विषय में मैं तुमको अनुरोध करती हूं कि तुम सर्वदा उनके निकट रहना कभी उन्हें अकेले न रहने देना क्योंकि अकेले रहने से उनका उत्कंठा और दुःख बढ़ेगा। उनके मङ्गलमे मेरा मङ्गलहै। अतएव जिस्से वे सुखी रहें तुम सर्वदा उनमें यत्न करना तुम मुझसे सपथ कर कहो कि इस विषय में कभी उल्लंघन तो न करोगे मैं तपोबन में बास कर यदि किसीसे सुनोगी कि आर्य्य पुत्र कुशलमे हैं तो इस्से मेरा सबदुःख शान्त हो जायगा। यह कहते २ सीता रोने लगीं तब उनकी पति भक्ति देख और प्रमाण युक्त वाक्य सुन लक्ष्मण के शोक का वेग प्रवल हो उठा और आंसुओं से वक्षस्थल भीग गया। सीता लक्ष्मण को शांतिकरि कहने लगीं। बत्स शोक दूर कर तुरत आर्य्य पुत्र के निकट जाओ और विलम्ब करना उचित नहीं। बारम्बार यह कह कर लक्ष्मण को बिदा देने के लिये व्यग्र हुईं लक्ष्मण प्रणाम और प्रदक्षिण कर हाथ जोड़ सम्मुख खड़े हुए एवं साश्रुलोचन हो कातर वचन से कहने लगे, आर्य्ये आप पूर्वापर भली भांति से देखती हो कि मैं आर्य्य का चिरकाल से आज्ञाकारी हूं जब उन्हों ने जो आज्ञा की मैं ने बिना सोचे तत्कालही पालन किया, प्राण अन्त होने पर भी बड़े भाइयों की आज्ञा उल्लंघन करनी कनिष्ठ को उचित नहीं सो मैंने कनिष्ठ का धर्म प्रतिपालन करने के हेतु यह विषम आज्ञा पालन की। मैंने पाषाण हृदयवत् कर्म करनेके

लिए जो भार ग्रहण किया था सो सम्पन्न हुवा अब मेरी यही प्रार्थना है कि आप का जो मेरे ऊपर अत्यन्त स्नेह और बात्सल्य है, सो कभी अन्यथा न हो। आर्य्य के आज्ञानुसार यह निष्ठुर व्यवहार कर जो मैं अपराधी हुआ सो कृपा कर उसको क्षमा कीजिए ॥ २३ ॥

लक्ष्मण को इस प्रकार से कातर देख सीता कहने लगीं वत्स तुम्हारा क्या अपराध है, तुम क्यों अकारण कातर होते हो तुम्हारे ऊपर रोष वा असंतोष करना दूर हो मैं काय मन औ वाक्य करि देवताओं से सर्वदा यह प्रार्थना करती हूं कि जन्मान्तर में फिर तुम्हारे सदृश मुझे देवर मिले। तुम चिरजीवी हो और अयोध्या में जाकर आर्य्य पुत्र के चरण में मेरा प्रणाम कहि भर्त, शत्रुघ्न और हमारी भगिनीगण से और श्वशुरगण जब २ भगवान ऋषि शृङ्ग के आश्रम से फिर आवें वाक्य स्नेह पूर्व्वक आशीस कहना उनके चरण में मेरा साष्टांग प्रणिपात निवेदन करना। बत्स और एक बात मैं तुमसे कहती हूं विधाता ने मेरे कपाल में कोई सुख नहीं लिखा इसलिये मेरी यह सर्व नाश घटना हुई इससे मैं कुछ दुःखी नहीं हुई पर एक बात अवश्य करना कि जिस्से मेरी भगिनीगण दुःख न पावें। वे लोग हमारे हेतु अत्यन्त शोकाकुल होंगी जिस्से उनका शोक तुरत निवृत्ति हो उस विषय में तुम तीनों भाइयों को सर्वदा यत्न करना उचित है, उनके सुख में रहने से मेरा दुःख निवृत्ति होगा। और यह भी कहना, कि मैं अदृष्ट का फल भोगती हूं इसलिये वे कातर न हों २४ ॥

यह कहकर स्नेह से बारम्बार आशिर्बाद कर लक्ष्मण को प्रस्थान करने के लिए आज्ञा दी लक्ष्मण ने अश्रुपूर्ण लोचन हो गद्गद वचन से हाथ जोड़कर यह निवेदन किया। आर्य्या हमारा अपराध क्षमा करना, फिर प्रणाम और प्रदक्षिणा करके नाव पर आरोहन किया। सीता अविचलित नयन हो उन्हें देखती रहीं थोड़ी देर नाव भागीरथ के इस पार पहुंची लक्ष्मण तीर पर उतरे। एवंकुछबेर तक जानकी को अनिमिष नैन से निरीक्षण करी और आंसू मार्जन करते २ स्यन्दन पर आरोहन किया फिर रथ वहां से चला, जहां तक देख पड़ता था लक्ष्मण अनिमिष नैन से सीता को निहारतेही रहे और सीता भी

अनन्य नयन हो उसी रथ पर दृष्टि पात करती रहीं और रथ क्रम क्रम से दूरवर्ती होता चला यहां तक कि लक्ष्मण सीता को न देख सक्ते थे । तब हाहाकार कर सिर पीटर रोने लगे और सीता भी रथके नयन पथ से अतीत होते ही अपना गोल छोड़े हुए कुररी पक्षी की नाईं उच्च स्वर से विलाप करने लगीं ॥२५॥

सीता का रोना सुन कर, संनिहित ऋषिकुमार शब्द के अनुसार रोदन स्थान पर उपस्थित हुए । देखा कि, एक कुल कामिनी हाहाकार कर सिर पीटती रोदन करती है । यह देख कर उनके कोमल हृदय में अत्यन्त करुणा रस उत्पन्न हुवा तब उन लोगों ने तुरत बाल्मीकि जीके पास जाकर विनय वचन से निवेदन किया महाराज हम लोग फूल फल लेने के हेतु भागीरथ तीर बनमें भ्रमण करते थे । अकस्मात् एक स्त्री का रोदन सुन्ने में आया । किंचित काल ढूंढ़तेर देखा कि एक लोकातीत रूपवती कामिनी अनाथा की नाईं कातर हो उच्चस्वर से रोदन करती है । उसके देखनेसे बोध हुआ कि कमला देवी भू मण्डल में उतर आई है । वह कौन है और क्यों रोती है । यह हम लोगों को कुछ न जान पड़ा किन्तु उसका कातर भाव देख और विलाप सुनि हम लोगों का हृदय विदीर्ण हुआ परन्तु भयसे कुछ न पूछा निदान आपको सम्बाद देना उचित समझ कर यहां आए, अब आप जो उचित समझिये सो कीजिये महर्षि बाल्मीकि ऋषिकुमार के मुखसे यह बात श्रवण करतेही तुरत भागीरथ तीर गए और सीता के साम्हने जाकर मधुर संभाषण मे धीरेर कोमल वचन से कहने लगे । बत्से विलाप त्याग करो जिस कारण से तुम तपोबन में आईं तुम्हारे आनेसे पहिलेही मुझे तपोबल से जान पड़ा कि तुम मिथिलाधिपति महाराज जनक की कन्या हो अयोध्याधिपति महाराज दशरथकी बधू और राजाधिराजरामचन्द्र की महिषी । रामचन्द्र ने मिथ्या लोकापवाद श्रवण करि चंचल हो सद असत् विवेचना हीन होकर निरअपराध तुमको त्यागकिया । इस्से खेदकरना आवश्यकनहीं । सीताने महर्षि वाक्य श्रवणकर अश्रुमार्जन किया एवं पवित्र मूर्त्ति महर्षि का दर्शन कर गलेमें कपड़ा डाल उनके चरणपर गिर पड़ीं । तब बाल्मीकि

ने कहा कि तुम रघुकुल तिलक तनयको प्रसव करो यह मेरा आशि-र्बाद है । फिर कहनेलगे बत्से और यहां रहना उचितनहीं मेरे आश्रममें चलो मैं अपनी पुत्री की नाईं, तुमको पालन करूंगा । वहां रहने से तुम किसी प्रकार का क्लेश न पावोगी । नग्र वासी गण यद्यपि बन के नाम से डरते हैं परन्तु तपोबन आनन्द बन है उसमें किंचित् मात्र डर नहीं । हम लोगों के तपोबल प्रभाव से हिंस्र जन्तुगण स्वभाविक हिंसा छोड़ सुहृद भाव से विश्राम करते हैं तपोबन की ऐसी अनिर्वचनीय महिमा है कि किंचित्काल रहनेसे चित स्थिर होजाताहै । मैं तुम को पूर्ण गर्भवती देखताहूं सन्तान होनेपर सब संस्कार विधि पूर्व्वक करूंगा किसी प्रकार से अङ्गहीन न होगा । समान बयस वाली मुनि कन्या लोग तुम्हारी सहचरी होंगी उनके संग से तुम्हारा चित दुःखरहित और प्रसन्न मन होगा । तुम्हारे पिता मेरे परम मित्रहैं इस्से तुम तपोबन में पितृ गृह बास का सुख पाओगी । और मैं अपने संतान की नाईं तुम्हारा पालन करूंगा । अतएव बत्से मेरे साथ चलो और विलम्ब मत करो ॥ २७ ॥

यह कहकर सीता को साथ ले महर्षि महाराज ने तपोबन में प्रवेश किया । एवं जो कहना उचित था कहकर मुनि कन्याओं के हाथ सीता को सौंप दिया वे लोग सीता के मिलापमे परमानन्दितहुईं और जिस्से सीता का चित तुरत प्रसन्न होजाय वह उपाय करने लगीं ॥ २८ ॥

इति द्वितीय परिच्छेद ॥ २ ॥

राम सीता को बन में प्रेरण कर दोष परिहारि, शोकसागर में मग्न हुए । यद्यपि वह जानकी को पतिप्राणा औ शुद्धाचारिणी जानते थे और पृथ्वी में यावत् प्रिय पदार्थ हैं सब से उन्हें अधिक प्रिय बोध करते रहे । फलितः सीता राम को प्राण अपेक्षा करके प्रिय थीं उभय का एक प्राण और एक मनरहा केवल शरीर मात्र भिन्न था । सीता जैसी साधु शीला औ सरल हृदया थीं राम भी वैसेही सब प्रकार से निपुण रहे, जैसी वह पति प्राणा पति हितैषी और पतिके सुख से सुखी थीं राम भी वैसेही सीतागत प्राण सीता हिताकांक्षी और सीता

के सुख से सुखी थे। बनबास काल में दोनों निकट रहते थे इस-लिये कोई क्लेश पड़ने से भी उस समय क्लेश न बोध होता था। घर में राज भोग में रहने से जैसे रामचन्द्र का सुखने समय व्यतीत होता बनबास में सीता के सन्निधान से उससे अधिक सुख समय व्यतीत हुआ। फलितः पतिप्राणा कामिनी के अलौकिक अनुराग में कैसी अनिर्वचनीय महिमा और अद्भुत मोहनी शक्ति है वह सतचरित्र पति से भिन्न और कोई नहीं अनुभव कर सता। बनबास निवृत्त होने पर राम और सीता दोनों का परस्पर अनुराग औ प्रणय सहस्र गुन बढ़ गया था कि मुहूर्त मात्रभी दोनों एक दूसरे को बिना देखे नहीं रह सक्ते थे, राम ने केवल लोकापवाद के भय से अत्यन्त निर्दय हो सीता को बनबास दिया परन्तु सीता के त्याग का शोक उन्हें अत्यन्त असह्य हुआ ॥ १ ॥

सीताको रथपर आरूढ़ कर लक्ष्मण के प्रस्थान करने से पश्चात राम अत्यन्त अधीर हुये। एवं अहार विहार राज काज पर्य्यालोचनादि समस्त व्यवहार औ व्यापार परित्याग कर एकाकी अपने बास भवन में अवस्थित हुये सर्वदा केवल हाहाकार और अश्रुजल विसर्जन करने लगे उस समय उनके हृदय में दुःख की सीमा न रही। यह सोचने लगे कि क्यों मैंने राज वंशमें जन्म लिया और क्यों मैं बनसे फिर आया क्यों मैंने राज कार्य ग्रहण किया क्यों मैंने दुर्मुख को लोगों का अभिप्राय जानने के हेतु नियुक्त किया क्यों मैंने लक्ष्मण का हित वाक्य नहीं सुना क्यों मैंने अत्यन्त निष्ठुर हो सीता को बनबास दिया क्यों मैं राज छोड़कर उनके साथ न गया अब कैसे मन की शान्ति करूं और कैसे प्राण बचाऊं। प्रिया के बनबास देनेसे मुझे आत्मघात करना अच्छा था। इस प्रकार से दिन रात विलाप करने लगे। इससे दुसह शोकानल बढ़बढ़ कर उनका शरीर शुष्क होने लगा। तीसरे दिन मध्यान्ह समय लक्ष्मण अत्यन्त क्षीण और कातरहो अयोध्यामें अकेले फिर आए। पहिले रामचन्द्र के बास भवन में प्रवेश कर हाथ जोड़ सन्मुख खड़े होकर विलाप करते २ कहने लगे। आर्य्य मैं दुरात्मा लक्ष्मण आप की आज्ञा पालन कर आया। राम उन्हें देख और उनका

वाक्य सुन हा ! प्रिये कहकर मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़े लक्ष्मण यद्यपि शोकाकुल थे तथापि राम को यह अवस्था देख व्यग्र हो अनेक यत्न से उनके चेतन करने में प्रवृत्त हुए । पश्चात् राम चेतन हो किञ्चित्काल स्थिर नयन से लक्ष्मण को निहार हाहाकार कर और दीर्घ निश्वास त्याग कहा भैया तुम जानकी को कहां छोड़ आए । अब मैं उनके विरह से कैसे प्राण बचाऊंगा । यह दुःख सहन नहीं कर सक्ता ऐसा कह कर लक्ष्मण का गला पकड़ उच्चस्वर से विलाप करने लगे तब लक्ष्मण बहु यत्न से अपने शोक का वेग संवरण कर उनके शांति करने में तत्पर हुए । फिर राम किंचित् शान्ति होकर लक्ष्मण के मुख से सीता की सब अवस्था जिज्ञासा करने लगे । सुनते २ आंसुओं से हृदय भर गया दीर्घ निश्वास से मुख मलिन हुआ कंठरोध से वाक्य बन्द होगया और पूर्वकाल का सब वृतान्त स्मर्ण कर हृदय में ऐसा शोक वेग बढ़ा जिस्से फिर राम मूर्छित हो भूतलशायी हुए ॥ २ ॥

लक्ष्मण राम को अनेक यत्न से चेतन कर मन में यह सोचने लगे कि आर्य्य जो दुस्तर शोकसागर में पड़े हैं इस जन्म में इस्से उद्धार होने का और इनके संभव नहीं यद्यपि शोक दूर करने का कोई उपाय नहीं देखताहूं जो होय परन्तु शान्ति का उपाय करना उचित है । यह मन में सोच विनय से प्रणयपूर्वक कहने लगे । आर्य्य आपको ऐसे शोक और मोह में पड़ना उचित नहीं आप सब समझते हो जो विधाता ने निर्बन्ध किया था सो हुआ नहीं तो आपने क्यों अकारण वा सामान्य कारण से आर्य्या को बनबास दिया यह कौन जानता था कि आप ऐसा काम करेंगे सोचकर देखिये कि संसार में कोई विषय चिरकालके लिये स्थायी नहीं जो बढ़ासो क्षय हुआ ऊंचा हुआ फिर नीचे गिरा संयोग में वियोग और जन्ममें मरण है । यह नियम चिरकाल से चला आता है इस्से अन्यथा संसार में कभी नहीं होता । यह सब सोच कर शोक त्याग करना उचित है । आप ने सब के हित करने का भार ग्रहण किया इसलिए जानकी को परित्याग किया । अतएव आप को शोकाभिभूत होना उचित नहीं । मूर्ख लोग शोक और मोहमें पड़ते हैं यद्यपि प्रिय वियोग और अप्रियसंयोग दोनों शोक का कारण है इस में

सन्देह नहीं परन्तु आप से महात्मा लोगों को चिरकाल लों इस में मग्न रहना उचित नहीं जो होना था सो होगया अब वृथा सोचने से क्या होगा यह सोच धीर्य्य अवलम्बन कर अंतःकरण से महा अनिष्ट कारक शोक परित्याग कर राजकार्य्य में नियुक्त हो और यह भी आप को सोचना उचित है कि आपने केवल लोगोंकी प्रसन्नताके हेतु कि मुझ पर असन्तुष्ट न हों आर्य्याको बनबास दिया तो अब उनके शोकसे अभिभूत होने में लोग फिर आप की निन्दा करैंगे । अतएव जिस दोष से छूटनेके लिए आपने यह दुष्कर कर्म किया फिर वही दोष पूर्व से प्रबल उत्पन्न होगा आर्य्याको त्यागकर फिर आपको कौनसा फल प्राप्त हुआ विशेषतः जब तक आप शोकाकुल रहोगे तब तक राजकार्य्य बन्द रहेगा और प्रजा पालन में विघ्न पड़ेगा अंतमें राजधर्म से भ्रष्ट होना पड़ेगा । अतएव इन सब विषयों का विवेचना कर धीर्य्य अवलम्बन करना उचित है और अधिक शोक वा मनस्ताप करना मङ्गलकारी नहीं देख पड़ता अतीत विषय में पश्चाताप कर चिरकाल व्यतीत करना सत पुरुषों का काम नहीं ॥ ३ ॥

लक्ष्मण यहकहकर निवृत हुए और रामकिंचित्काल मौनहोपश्चात् स्नेह वाक्य से कहने लगे । बत्स तुम्हारे उपदेश से मेरा अज्ञान नष्ट और ज्ञान उत्पन्न हुआ तुमने यथार्थ कहा मैंने जिस कारण से राक्षस की नाईं निष्ठुर हो जानकी को बनबास दिया अब उनके लिये शोकाकुल होनेसे मेरे सब कर्म निष्फल हो जायंगे अब और शोक का चिन्ह प्रकाश न करूंगा और कल्ह से राज कार्य में प्रवृत्त हूंगा शोक का यही स्वभाव है कि इसमें आशक्त होने से नित्यर इसकी वृद्धि होतीहै और शोकाकुल मनुष्य के सब सत् कार्य्य नष्ट होतेहैं । अतएव अब से मैं शोक निवृत्त करने में प्रवृत्त होता हूं और प्रतिज्ञा करता हूं कि फिर शोक से अभिभूत न हूंगा । अमात्य लोगों से कह दो कि मैं कल्ह से राजकार्य्य में प्रवृत्त हूंगा वे लोग नियमित समय पर अपने कामों के हेतु विचारालय में उपस्थित हों ॥ ४ ॥

यह कह कर रामचन्द्र किञ्चित्काल सिर नीचे कर मौन हो रहे पश्चात् अश्रु पूर्ण लोचन और आकुल वचन से कहने लगे हा ! राजधर्म

कैसा भयङ्कर कार्य्य है। मनुष्य लोग कौन से सुखभोग केलिये राज की बासना करते हैं यह मेरी समझ में नहीं आता। राज भार ग्रहणकर मुझको इस जन्म में सब सुख छोड़ना पड़ा। अत्यन्त निष्ठुर हो निर अपराधिनी प्राणप्रिया को बनबास दिया। अब उनके लिये किंचित अश्रुपात भी नहीं करसक्ता राज्य लाभ से यही मुझको फल हुआ स्नेह, दया और ममता त्याग करना पड़ा। अवश्य पीछे लोग कहेंगे कि मेरी नाईं निष्ठुर राक्षस वा विवेचना हीन मूर्ख कोई दूसरा नहीं। यह आक्षेप कर पश्चात रामने लक्ष्मण को बिदा किया। एवं धीर्य्यावलम्बन और शोक निवारण के हेतु दूसरे दिन प्रभात से राजकार्य करने लगे। यद्यपि रामचन्द्र राजकार्य पर्य्यालोचन करते थे और लोग भी उनके स्वरूप दर्शन से निश्चय करते कि महाराज धीर्यशील हैं अनायास ऐसे विषम शोक को तुरन्त निवारण किया परन्तु उनका अंतःकरण निरन्तर असह्य शोकाग्नि से जलता था। अत्यन्त निरपराधिनी प्रिया को बनबास दिया इस शोक और क्षोभ से युक्त हो दग्ध शल्य की नाईं सर्बदा मर्म बेदना देने लगा। केवल लोक के असन्तोष के भय से उन्हों ने जानकी को बनबास दिया और अब उसी डरसे वाह्य में शोक सम्बर्ण किया। जब रामचन्द्र राजसिंहासन पर बैठ मूर्तिमान् धर्म की नाईं स्थिर चित्तमे राज कार्य करते थे तब उनको देख लोगों के मन में निश्चय होता था कि भूमण्डल में इनके सदृश और पुरुष धीर्य्यवान नहीं॥ ५॥

परन्तु राजकार्य से नबृत्त हो जब बिश्राम भवनमे जाते थे तब उनका हृदय शोकानलमे दग्ध होताथा। लक्ष्मण सर्बदा निकटवर्ती हो उनका चित शांति करने के लिए अनेक यत्न करते थे पर उनके प्रबोध वाक्य से और भी उनका शोकानल प्रबल वेग से प्रज्वलित होता था। फलितः वे केवल हाहाकार औ अश्रुमोचन औआत्मनिन्दा और सीता का गुण कीर्तन कर बिश्राममसमय व्यतीत करते रहे। इसप्रकार सीताके विरह से कातर हो दिन २ कृषित मलिन औ दुर्बल और सब विषय से निरउत्साह होने लगे। वस्तुतः प्रजा पालन छोड़ और किसी विषय में उनको उत्साह वा प्रवृती न होती थी। इधर किंचित् काल पश्चात्

जानकी ने युगल कुमार प्रसव किया । महर्षि बाल्मीकि ने वेद विधि से उभय कुमार का समस्त कर्म सम्पादन कर बड़े का नाम कुश और छोटे का नाम लव रक्खा मुनि तनयागण सीता के कुमारों को परमानन्द से देखने लगीं और समस्त आश्रम बड़े आनन्द और कोलाहल से पूर्ण हो गया । सीता दुसह प्रसव वेदना से अभिभूत होकर किंचित् काल अचेत रहीं । पश्चात् जब चेतना लाभ किया, तब मुनि तनयागण आनंदित हो प्रीति पूर्व्वक कहने लगीं कि जानकी आज बड़े अह्लाद का दिन है तुमने सौभाग्यसे दो परम सुंदर कुमार प्रसव किया है। सीता यह सुन कर प्रसन्न नयन से संदर्शन पूर्व्वक आनन्द सागर में मग्न हुईं परंतु किञ्चित् काल पश्चात् फिर शोकाभिभूत हो कर अश्रु मोचन करने लगीं । यह देखकर मुनि तनयागण स्नेह वाक्य से पूछने लगीं । जानकी ऐसे आनन्द के समय तुम क्या दुःखित होती हो कातरता से उनका कंठ रोध हो गया था इसलिये किंचित् काल मौन हो कुछ उत्तर न दे सकीं फिर शोक संवरण कर कहा । प्रिये सखीगण ऐसे आनन्द के समय पूछती हो । कि मैं क्यों दुःखित हुई हूं क्या इसका कारण तुम नहीं जानती हो । पुत्र प्रसव करने से अवश्य स्त्री जाति को परमानन्द प्राप्त होता है इस में कुछ संदेह नहीं, पर कैसी अवस्था में यह आनन्द का समय उपस्थित हुआ है कि जब मेरा सब सुख इच्छा और आनन्द मिट गया। यद्यपि यह हत भाग्य कुमार मेरे गर्भमें न होते तो जिस समय लक्ष्मण ने आर्य्यपुत्र का परित्याग वाक्य सुनाया उसी काल जान्हवी जल में प्रवेश कर मैं प्राण परित्याग करती अथवा और किसी उपाय से आत्मघातिनी हो जाती । ऐसी अवस्था में प्राण रखना वा मुंह देखाना क्या उचित जानती हो ॥ ६ ॥

यह कह कर दुखित हो सीता प्रबल वेग से अश्रु विसर्जन करने लगीं । मुनिकन्यागण सीता का यह विलाप वाक्य श्रवण कर अत्यन्त दुःखिनी हुईं । एवं प्रणय वाक्य से कहने लगीं प्रियसखी शोक निवारण करो तुमने जो कहा सो सब यथार्थ है परन्तु और अधिक दिन तक तुमको इस अवस्था में न रहना पड़ेगा । महाराज रामचन्द्र की बुद्धि विपर्य्यय होगई थी इसलिये उन्हों ने अज्ञवत् तुम्हारे साथ निष्ठुर

आचरण किया। हम लोगों ने पिता बाल्मीकि के मुंह से सुना है कि थोड़ेही दिन में महाराज रामचन्द्र तुम को लेजायंगे। अतएव धीर्य्य धरो और शोक सम्वर्ण करो मुनि तनया मे यह वाक्य श्रवण कर सीता के युगल नयन मे प्रवल वेगकरि अश्रु धारा वर्षा होने लगी यह देखि मुनि तनयागण का कोमल हृदय पिघल उठा और दुःखित हो उनके साथ वे भी रोने लगीं ॥ ७ ॥

उस समय उन दोनों बालकों ने भी रोदन आरंभ किया स्नेह की कैसी चमत्कार महिमा और मोहनी शक्ति है कि उनके रोने का शब्द जानकी जी सुन्तेही तत्काल सब शोक भूल गईं और बैठकर दोनों को गोद में ले दूध पिलाने लगीं ॥ ८ ॥

वे दोनों कुमार शुक्लपक्ष के चंद्रमा की नाईं दिन २ बढ़ते चले और जानकी के नयन और मन को आनन्द प्रदान कर तपोवन शोभित करने लगे। जब वे दोनों कुमारसम्पृक्त वाक्य मे मा मा पुकारने लगे और जानकी उनके मुख में मोतियों की नाईं छोटे २ दांत देखने लगीं उनके अर्द्धोच्चारित मृदु मधुर वचन सुनने लगीं और उन्हें गोद में ले मुख चुम्बन स्नेहमे करने लगीं। उस समय सब शोक अपना भूल गईं उनका शरीर आनन्द मे परिपूर्ण और शीतल हो युगल नयन से आनन्दाश्रु वर्षा होने लगी ॥ ९ ॥

क्रमसे कुश और लव पांच वर्षके हुए तब महर्षि बाल्मीकि ने चूड़ा कर्म सम्पादन कर विद्या आरंभ कराया दोनों बालक असाधारण बुद्धि बल से थोड़े ही दिन में सर्व विद्या निधान और पूर्ण पण्डित हुए। इससे पहिले बाल्मीकि ने रावण बधान्त राम चरित्र अवलम्बन कर रामायण नामक एक महाकाव्य बनाया और पहिले अमृत रस वर्षी यह अपूर्व महाकाव्य उनदोनों बालकों को अध्ययन कराया दोनोंने थोड़ेही दिन में अभ्यास कर कंठ किया और अपनी माता के साम्हने मधुर स्वर मे गान कर उनका दुःख दूर करने लगे। ग्यारह वर्ष में महर्षि बाल्मीकि दोनों का उपनैन विधि सम्पादन कर वेदाध्ययन कराने लगे और एक वर्ष में दोनों भाई चारों वेद के पारगामी हुए १० ॥

क्रम से बारह वर्ष का वय पूरण हुआ, पर अबलों उन लोगों ने न

जाना कि हम कौन हैं अपने को ऋषि कुमार और माता को ऋषि पत्नी जानते रहे। फलित: जानकी भी जिसप्रकार से तपोबन में काल व्यतीत करती थीं उन्हें देख कर कोई ऋषिपत्नी से भिन्न कुछ निश्चय न करताथा। एवंउन दोनों भाइयों का आचार व्योहार देखने से ऋषि कुमारसे भिन्नकुछ और संभावना न होती थी वे दोनों बालक जानकीको केवल अपनी जननी जानते रहे, परन्तु उनको मिथिलाधिपति तनया और कौशलाधिपति महिषी न समझते थे। बाल्मीकि ने अनेक यत्न कर यह गोपनीय विषय उन दोनों से गोपन रक्खाथा। एवं तपोबन बासियों को भी ऐसा सावधान कर दियाथा कि कोई भ्रम से भी उनके साम्हने इस विषय का प्रसङ्ग प्रकाश न करता था और सीता को भी निषेध कर दिया था जिस्से वे अपना परिचय न देती थीं उन्हों ने रामायण में राम और सीताका वृत्तांत सविशेष पढ़ा परन्तु अपनी जननी को जनक नन्दनी सीता और राम पत्नी न जानते थे अबलौं कुश और लव आत्म स्वरूप जानने में सम्पूर्ण अज्ञ थे ॥११॥

यावत् काल माताके यत्न बिना बालकों का प्राण धारण नहींहो सक्ता था तावत् काल लों जानकी सब दुख सम्वर्ण कर और सर्व कर्म त्याग एकान्त मन से कुश और लव के पालन में नियुक्त रहीं। किञ्चित् पालन समय व्यतीत होने पर जब माता को विशेष यत्न की अपेक्षा न रही तब जानकी उनकी रक्षा मे निश्चिन्त हो ऋषि पत्नियों के संग तपस्या करने लगीं। सब प्रकार की तपस्या से प्रधान कामना रामचन्द्र का मङ्गल ही उद्देश था। यद्यपि रामचन्द्रने नितांत निर अपराध से त्याग किया, तथापि क्षण मात्र भी उन्हें उन पर क्रोध वा विराग न हुआ था यह जो उन पर ऐसी बड़ी विपत्ति पड़ी थी उसे केवल अपने भाग्य का दोष जानती थीं भ्रम से भी यह नहीं सोचती थीं कि इस विषय में किंचित मात्र रामचन्द्रका दोष है। फलत: रामचन्द्र पर जैसी पहिले उन्हें प्रीति और अनुराग रहा अब भी उसमें किंचित मात्र विपर्य्यय न हुई सर्वदा देवताओं से काय, मन और वाक्य से प्रार्थना करतीं हूं कि रामचन्द्र सर्वदा कुशल से रहैं और जन्मान्तर में मेरे पति हों दिन भर ऋषि कन्याओं के सङ्ग तपस्या में नियुक्त हो किसी प्रकार

से काल व्यतीत करती रहीं परन्तु रात्रि को एकाकिनी रहने से विषम शोकसागर में पड़ती रहीं। केवल रामचन्द्रकी चिन्ता में मग्नहो निरन्तर अश्रुपातकरती २ यामिनी यापन करती रहीं फलतः सीता जैसी पतिप्राणा रहीं अनायास जैसी उन्हों ने पति विरह यातना सहनकी यह किसी के मन में सम्भावना न हुई थी। काल पाय सबका शोक नष्ट हो जाता है, परन्तु जानकी का विचित्र शोक था कि प्रतिदिन नवीन होता रहा। इस प्रकारसे बारह वर्ष पर्य्यंत विरहानल से अन्तर दाह होते २ जानकी का अलौकिक रूप लावन्य नष्ट होगया। निदान शरीर में केवल अस्थि और चर्म मात्र अवशिष्ट रहगया॥ १२॥

सीता अत्यन्त सुशीला औ नितांत सरल हृदया थीं, उनके समान पतिपरायणा कामिनी कभी किसीने न देखा न सुना। वे अपने पवित्र चरित्र विषय में ऐसा पतिव्रता धर्म प्रदर्शन करा गईं जिस्से जान पड़ता है कि विधाता ने स्त्री जाति की पतिव्रता धर्म उपदेश करने के हेतु सीता को सृष्ट किया था फलतः उनके सदृश सर्वगुण सम्पन्ना कामिनी ने कभी भू मण्डल में न जन्म लिया अथवा इस प्रकार का अपूर्व सर्व गुण सम्पन्न पति लाभ कर उनकी नाईं कोई स्त्री दुःख भागिनी न हुई॥ १३॥ इति तृतीय परिच्छेद समाप्तः॥

—०—

उसी समय में महाराज रामचन्द्र ने अश्वमेध महायज्ञ काअनुष्ठान करने के हेतु सङ्कल्पवान होकर वशिष्ट, जाबालि, कश्यप और वामदेव आदि महर्षिगण के निकट अपना अभिप्राय प्रगट किया। वशिष्ठदेव ने सुनते ही रामचन्द्र को साधुवाद प्रदान कर कहा महाराज आपने अति उत्तम सङ्कल्प किया है। आपने सागर पर्य्यंत सब दीप पृथ्वी के एक मात्र अधिपति होकर सकल भू मण्डल में ऐसा एकाधिपति विस्तार किया कि पूर्वकालमें कोई नरपति इस प्रकार से न कर सका राम राज्य में जैसा प्रजा लोग सुख से काल व्यतीत करते हैं ऐसा न कभी किसी ने देखा न सुना। राज भार ग्रहण कर जिस २ विषय का अनुष्ठान करना उचितहै सो सब प्रायःआपने सम्पादित किया अब केवल अश्वमेध यज्ञ मात्र अवशिष्ट है वह भी सम्पन्न होने से और

कोई काम आप का अवशिष्ट न रहेगा। हम लोगों ने यह पहलेही सोचा था कि इस विषय में महाराज से निवेदन करें, परन्तु जब महाराज ने आपही इसका स्वयं अनुष्ठान किया फिर और इसमें हम लोगों को विलम्ब करना उचित नहीं। अब तुरंत तद उपयोगी द्रव्य आयोजन के हेतु अनुमति कीजिये। यह कहकर वशिष्ठदेव के निवृत्त होने पर रामचन्द्र ने पार्श्वस्थित भ्रातृगण की ओर देख कर कहा। बत्साण महर्षि ने जो कहा सो आप लोगों ने सुना है अब इस विषय में तुम्हारा अभिप्राय प्रगट होने पर जैसा कर्तव्य है वैसा निरूपण करेंगे। आज्ञानुसारी अनुज गण ने तत्कालही उसे हृदय से अनुमोदन किया। तब रामचन्द्र ने कुलोपरोहित वशिष्ठदेव को सम्बोधन कर कहा कि जब मेरी अभिलाषा आप लोगोंने स्वीकार किया और अनुज गण कर्तृक अनुमोदित हुए तो इस विषय के अनुष्ठान में और कुछ सन्देह नहीं अब मेरा अभिप्राय यह है कि गोमती तीर नैमिषारण्य में इस महायज्ञ का अनुष्ठान हो। १॥

पश्चात् रामचन्द्र ने भ्रातृगण से कहा कि और निष्फल काल व्यतीत करना प्रयोजन नहीं उचित है कि तुरतही इसविषय का आयोजन करो। अनुगत शरणागत और मित्र भावापन्न राजगण को निमंत्रण भेज दो और समय निर्धारण कर समस्त देश में सम्बाद प्रेरण करो। लङ्का समर संहायक बन्धुगण को परम समादर से कि वे लोग हमारे यथार्थ परम बन्धु हैं बुलाओ। हमारे हेतु उन्हों ने अनायास कितना क्लेश सहन किया जिस्का पारावार नहीं तो उनके आने से मैं अत्यन्त सुखी हूंगा और सब ऋषि लोगों को निमंत्रण भेजो उनके आने से मेरा आत्मा पवित्र होगा भरत तुम नैमिषारण्य में जाकर यज्ञभूमि निर्माण करने का उद्योग करो। लक्ष्मण तुम यहां से सब द्रव्य इकट्ठी कर वहां भेजो यज्ञ दर्शन के हेतु नैमिषारण्य में बहुत से लोग आवेंगे तुमको ऐसा आयोजन करना चाहिये कि किसी को किसी वस्तु की अप्राप्ति से दुख न हो तुम सब विषय के पारदर्शी हो और अधिक तुम्हें क्या उपदेश करें॥ २॥

यह कह कर राम निवृत्त हुए तब वशिष्ठ देव ने सम्बोधन कर

कहा महाराज सब विषय तो अधिक से अधिक आयोजन होगा इसमें सन्देह नहीं परन्तु मैं एक विषय का अत्यन्त अभाव देखताहूं उसमें क्या अनुमति है तब रामचन्द्र ने कहा आप किस विषय के अभाव की शंका करते हैं सो आज्ञा करें। वशिष्ठ ने कहा महाराज वेद में लिखा है कि स्त्री सहित धर्मानुष्ठान करना उचित है इस विषय में आपने क्या स्थिर किया है। यह सुनतेही रामचन्द्र का मुख कमल मलिन और युगल नयन अश्रुपूर्ण हुआ। पश्चात् किंचित् काल सिर झुकाकर मौन हो बैठे। तदनन्तर अश्रुजल मार्जन कर दीर्घनिश्वास त्यागि यह कहा। भगवान पहले इस विषय का मुझे स्मर्ण न रहा अब क्या करना उचित है सो आज्ञा कीजिये। वशिष्ठदेव ने बहु काल लों चिन्ता कर कहा। महाराज भार्य्यान्तर परिग्रह किये बिना और कोई उपाय नहीं देख पड़ता ॥ ३ ॥

वशिष्ठ का वाक्य सुन कर सब मौन हो रहे और राम का प्राण सीता में नितांत लगा था परंतु लोग विराग के भय से सीता को बनबास दिया इस्से जीवन मृत हो रहे थे। उन में राम का ऐसा अविचलित स्नेह और एकान्त अनुराग था जिस में अब तक किंचित् व्यतिक्रम न हुआ। सीता की मन मोहनी मूर्ति दिन रात उनके अन्तः-करण में जागती रही। उपस्थित कार्य के अनुरोध से वे दूसरी स्त्री परिग्रह करने में सम्मत होंगे यह किसी प्रकार से संभावना न थी। जो कुछ हो परन्तु वशिष्ठ देव स्त्री परिग्रह करने के विषय में बार-म्बार अनुरोध करते रहे किन्तु राम इस विषय में अत्यन्त अनिच्छा प्रगट कर सिर झुका मौन भाव हो बैठ रहे। पश्चात् अनेक प्रकार के वादानुवाद में यह निश्चित ठहरा कि सीता की सुवर्णमयी मूर्त्ति बना कर यज्ञानुष्ठान में साथ लेना सब से बढ़ कर श्रेय और मङ्गला-कारी है यह सिद्धान्त हुआ ॥ ४ ॥

इस प्रकार से सब स्थिर हुआ और भरत ने सब से पहिले नैमि-षारण्य में प्रस्थान किया और वहां पहुंच कर समुचित स्थान पर यज्ञ भूमि निरूपण कर यथावत् जगह पर पृथक्-२ प्रदेश में प्रत्येक मर्या-दिक लोगों के हेतु उनकी अवस्था के अनुसार बासश्रेणी निर्माण किया

लक्ष्मण ने भी बिना विलम्ब नाना प्रकार के अप्राप्ति अहार सामग्री शय्या और यानादि सम्पादन कर यज्ञ क्षेत्र में प्रेरण किया। पश्चात् रामचन्द्र ने लक्ष्मण को रक्षक नियुक्त कर यथा विधि यज्ञ अश्वमोचन पूर्व्वक मातृगण औ और और परिवार जन को साथ लेकर सेना सहित नैमिषारण्य में प्रस्थान किया ॥ ५ ॥

थोड़े दिन पीछे निमंत्रित लोगों का आना आरंभ हुआ। सैकड़ोंराजे और बहुतसी अनमोल सामग्री उपहार अनुचर गण और परिचारक वर्ग साथ लेकर उपस्थित होने लगे। सहस्र सहस्र ऋषि महात्मा लोग यज्ञ दर्शन की इच्छा से क्रम क्रम नैमिषारण्य में आगमन करने लगे। असंख्यात नगरवासी और जन पद बासी समागत हुए। भरत और शत्रुघ्न नृपति लोगों के परिचार्य्य में नियुक्त हुए। विभीषन ने ऋषिगण का किङ्कर कार्य ग्रहणकिया। सुग्रीव ने अपरापर यावत् निमंत्रित वर्ग के यथावत् कार्य कीआधिपत्यता अवलम्बन किया ॥ ६ ॥

इधर महर्षि बाल्मीक सीता की अवस्था देखि एवं कुश और लव की वयक्रम क्रम से बारह बर्ष का अवलोकन कर सर्वदा मन में सोचते रहे कि सीता की जैसी अवस्था है और कुछ दिन जीती ऐसिही रही तो और अधिक दिन नहीं जान पड़तीं। कुश औ लव राजाधिराज के पुत्र हैं यह चिरकाल तपोबन मेंहीं रहे यह भी उचित नहीं अब धनुर्वेद और राजकार्य्यसीखने का समय व्यतीत होता जाता है। अतएव यह उपाय सोचना उचित है जिस्से रामचन्द्र सपुत्रा जानकी को तुरत स्वीकार करें और उपाय सोचने का क्या प्रयोजन है, किसी शिष्य को प्रेरण कर रामचन्द्र को अपने आश्रम में बुलावें अथवा स्वयं जाकर पुत्रवती जानकी को ग्रहण करने की उनसे प्रार्थना करें। जान पड़ता है कि रामचन्द्र अवश्य मेरा वचन पालन करेंगे परन्तु वे अत्यन्त लोकानुराग को प्रिय जानते हैं केवल लोक के भय से सगर्भा जानकी को निरअपराध त्याग किया अब मेरे वाक्यसे ग्रहण करें वा न करें यह सन्देह है। जो होय कुछ सम्बाद न देना इस्से निश्चिन्त रहना उचित नहीं क्योंकि ए दोनों बालक आगे अवश्यही अयोध्या के राज्य सिंहासन पर बैठेंगे इस समय यदि पिता के पास जाकर नीति

शास्त्र न शिक्षा पावेंगे तो प्रजा रक्षण में असमर्थ हो राज्य मर्य्यादा पालनमें अयोग्य होंगे। और वशिष्ठ महाराज औ रामचन्द्र मुझको कोशल राज के हित साधन में यत्न हीन समझ कर निन्दा करेंगे। अतएव इस विषय में और अपेक्षा करना उचित नहीं इस समय का सम्बाद देना अवश्य है, अथवा पहले रामचन्द्र को सम्बाद न देकर वशिष्ठ वा लक्ष्मण के साथ इसका परामर्श करना उचित है देखें वे लोग इस विषय में क्या कहते हैं सो सुन्ना अवश्य है ॥ ७ ॥

एक दिन महर्षि सायं संध्या और संध्याकाल का होम विधि समाप्त कर अकेले आसन पर बैठे इस चिन्ता में मग्न थे कि ऐसे समय एक राज भृत्य ने आकर राजनाम अङ्कित अश्वमेध यज्ञ का निमंत्रण पत्र उनके हाथ में दिया। महर्षि ने पत्र पढ़ कर परम आनन्दित हो उसे विश्राम करने की आज्ञा दी। एवं एक शिष्य को उसके भोजनादि के निमित आदेश प्रदान कर मन में सोचने लगे कि मैं जिस विषय के लिए उत्कण्ठित था दैव ने अनुकूल होकर आपही उसकी सिद्धि का उपाय कर दिया अब बिना प्रार्थनाही कार्य्य सिद्ध होने का अवसर हुआ। कुश और लव को अपना शिष्य बनाकर वहां साथ ले जायंगे तबरामचन्द्र और इन दोनों के स्वरूप सदृश देख कर लोग निश्चिन्त जानेंगे कि ए रामचन्द्र के पुत्र हैं। एवं रामचन्द्र का हृदय भी इनके देखने से अवश्यही आनन्द से परिपूर्ण होगा। उस समय मेरेभी इष्ट सिद्धि की संभावना होगी ॥ ८ ॥

इस प्रकार से अपने मन में सिद्धान्त करि जानकी की कुटी में जा महर्षि ने उनसे कहा बत्से राजा रामचन्द्र ने गोमती तीर अश्वमेध महायज्ञ का अनुष्ठान कर मुझको निमंत्रण पत्र भेजा है सो कल्ह मैं प्रातः काल जाऊंगा और मेरी यह इच्छा है कि शिष्यों के सङ्ग तुम्हारे दोनों पुत्रों को भी ले जाऊं। यह सुनतेही सीता ने सम्मति दी महर्षि ने अपनी कुटी में आ शिष्यों को बुलाकर कहा कि तुम लोगों को भी मेरे साथ यज्ञ दर्शन के हेतु चलना पड़ेगा सो प्रस्तुत हो रहो फिर कुश और लव को भी सम्बोधन कर कहा देखो आजतक तुमलोग नगर का कुछ वृत्तांत नहीं जानते हो

अब रामायण के नायक महाराज रामचन्द्र ने अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान किया उसमें मुझे भी बुलाया है इसलिये मेरी यह बासना है कि तुम्हें भी आपने साथ यज्ञ दर्शन के लिए ले चलूं तो यज्ञदर्शन के हेतु से तुमको राजदर्शन भी प्राप्त होगा और उस स्थान में नाना देशीय असंख्य लोग एकत्र हुए होंगे उन्हें देखने से तुम लोग अनेक प्रकार के अलौकिक वृतान्त जान सकोगे वे दोनों सहोदर भाइयों ने रामायण में रामकी अलौकिक कीर्ति पढ़कर उन्हें सब प्रकार से अद्वितीय पुरुष निश्चय कर रक्खा था अब यह सोचकर कि उन्हें आखोंसे देखेंगे परम अह्लादित हुए और यज्ञानुष्ठान औ नानादेशीय लोगों के दर्शन के हेतु और भी अत्यन्त अभिलाषी हुए ॥ ९ ॥

बाल्मीकि के मुख से रामनाम श्रवणकर सीता का विरहानल प्रवल वेग से प्रज्वलित हुआ आंख से निराधार आंसू टपकने लगा किंचित्काल परे उनके मनमें यहभाव उपस्थित हुआ कि मुझे छोड़रामके दूसरी पत्नी नहीं और मुझे केवल लोकापवाद के भय से त्याग किया परन्तु अब यज्ञ अनुष्ठान किया चाहते हैं तो यह बिना भार्या के नहीं पूर्ण होसक्ता । अतएव मैं जानती हूं कि अवश्यही भार्यान्तर ग्रहण किया होगा यह सोचकर मृतवत् होगईं । हा ! एक तो अनायास परित्याग का दुख सहन किया पुनः फिर रामके पुनर्विवाह का शोक हृदय में न सहन होसका पहिले सीता ने अपने मन में यह सोचा था कि यदि मुझको राम ने निरअपराध त्याग किया परन्तु मुझपर जो उनकी प्रीति और स्नेह रही उसमें किंचित् व्यतिक्रम नहीं हुआ सो अब निश्चय होता है कि यदि आर्य्य ने दूसरी स्त्री ग्रहण किया तो मुझपर वह स्नेह और प्रीति जो रही सब अन्यथा होगई ॥ १० ॥

सीता यह चिन्ता करते २ व्याकुल होने लगीं कि तत्काल उसी समय कुश और लव आकर कहने लगे माता महर्षि ने आज्ञादी है कि कल्ह महाराज रामचन्द्र के यज्ञ दर्शन के लिए जाते समय हम लोगों को साथ लेजायंगे । जो निमन्त्रण पत्र लेकर आया था उस्से हम लोगों ने महाराज रामचन्द्र की कथा जिज्ञासा की तो कहने लगा कि महाराज की सब बातें अलौकिक हैं परन्तु एक बात सुनकर

हम लोग बड़े चकित हुए और रामायण पढ़कर जो हम लोगों को उनपर अत्यंत भक्ति हुई थी सो अब सहस्र गुन बढ़ गई । चर्चा में वह दूत कहनेलगा कि महाराज ने प्रजारंजन के हेतु निरअपराधिनी निज महिषी को बनबास दिया यह सुनकर हम लोगों ने उससे पूछा कि क्या यज्ञ अनुष्ठान के हेतु महाराज ने अब कोई दूसरादार परिग्रह किया है या नहीं तो यह कार्य कैसे सिद्ध होगा । उसने कहा कि वशिष्ठ देवने तो उन्हें पुनर्बिवाह की अनुमति दी थी परन्तु महाराज किसी प्रकार से इस करनेमें सम्मत न हुए तब सोनेकी सीता की मूर्ति बनी है उसी के साथ महाराज यज्ञानुष्ठान करेंगे तो देखो माता ऐसा कोई पुरुष किसी समय भूमण्डल में नहीं उत्पन्न हुआ । महाराज जैसे राजधर्म प्रतिपालन करने में निपुण हैं वैसेही दाम्पत्य धर्मपालन में भी तत्पर हैं । हम लोगों ने इतिहास ग्रंथों में अनेक राजे महाराजे और महापुरुषों के वृतान्त पाठ किया परंतु किसी प्रकार से किसी महाराज को रामचन्द्र के समान नहीं देखा । प्रजारंजन के अनुरोध से प्रियतमा भार्य्या को परित्याग कर और उस की प्रीति से जन्मभर भार्य्यान्तर परिग्रह में विमुख हो काल व्यतीत करना यह दोनों विषय कैसे अपूर्व व्यापार हैं जो उनमे बन पड़ते हैं और किसी से नहीं । जो हो मा रामायण पढ़ने से हम लोगों के मन में यह एकान्त बासना हुई कि एक बेर महाराज रामचन्द्र का दर्शन हो तो बहुत अच्छा हो सो उसके सफल होने के हेतु यह अच्छा उपाय हुआ इसलिये मा आज्ञा दो तो हम लोग महर्षि के साथ रामदर्शन के लिये गमन करें । सीता ने प्रसन्न हो आज्ञा दी और वे दोनों भाई आनन्दित हो महर्षि के निकट गए ॥ ११ ॥

इस चिन्ता से कि रामचन्द्र ने पुनर्बिवाह किया होगा सीता का सब शरीर विषम विषाद रूप विष से भस्म होता था सो हिरण्मय सीता का वृत्तान्त सुनकर वह विषम विषाद निवृत्त हुआ और जो विरहानल सर्वदा पहिले से दाहता रहा वहभी शान्त होगया फिर आंखों से आनन्दाश्रु बहने लगा और बनबास का दुख दूर हुआ एवं उनके मन में सौभाग्य का गर्व वृद्ध हो उठा ॥ १२ ॥

प्रभात होतेही दूसरे दिन महर्षि बाल्मीकि ने कुश लव और शिष्य गणको साथ लेकर नैमिषारण्य की ओर गमनकिया। तीसरे दिन संध्या समय वहां जा पहुंचे। वशिष्ठदेव ने परम समादर से उन्हें और उनके शिष्य गणों को बास करने के लिए समुचित स्थान दिया। कुश और लव दूर से रामचन्द्र के दर्शन कर परम आनन्दको प्राप्त हुए और हर्षित हो परस्पर कहने लगे देखो भाई रामायण में जो महाराज रामचन्द्रके सबआश्चर्य मय गुणकथितहुए हैं सो इनके आकारसेसब स्पष्टप्रतीत होते हैं। महाराज जैसे सुन्दर मूर्तिमान हैं वैसेही गम्भीर भी देखाई पड़ते हैं। हमारे गुरुदेव जैसे लोकातीत कवित्त शक्ति में युक्त हैं वैसेही महाराज रामचन्द्र भी लोकातीत गुण से सम्पन्न हैं अधिक क्या कहें यदि ऐसे पुरुष रामायण के नायक न होते तो भगवन् महर्षि प्रणीत महाकाव्य रामायण का ऐसा गौरव कैसे होता महाराज रामचन्द्र के लोकातीत गुण वर्णन में नियुक्त होने से महर्षि की अलौकिक कवित्त शक्ति सफल हुई। फलतः इतने दिन पर हमारे नयन महाराज के दर्शन से कृतार्थ हुए ॥ १३ ॥

क्रमसे सब निमंत्रित गण एकत्र हुए और नियमित समयपर महानुत्सव के साथ यज्ञ आरम्भ हुआ। असंख्य याचक गण यज्ञ क्षेत्र में आउपस्थित हुए अन्नार्थिगण ने अन्न, धनाभिलाषी धन और भूमिकामी ने बांछाधिक भूमि लाभ किया और जो जिस अभिलाष से आया वहां आने से उसका वह अभिलाष पूर्ण होगया फिर चारों ओर नृत्य, गीत, वाद्य प्रारम्भ हुआ समस्त जन मनोहर बेष और भूषण धारण कर चलने फिरने लगे सब का मुख देखने से संपूर्ण आनन्द का लक्षण लक्षित होता था किसी के अंतःकरण में किसी प्रकार से कोई क्षोभ न जान पड़ता रहा। उस काल में जो दीर्घ जीवी राजगण ऋषिगण अथवा और लोग यज्ञदर्शन के हेतु आये थे वे सब यज्ञदर्शन कर स्पष्ट एकवाक्य हो कहने लगे कि हम लोगों ने कभी ऐसा अपूर्व यज्ञ दर्शन नहीं किया। एवं त्रिकालवित् महर्षिलोग भी कहते थे कि ऐसा यज्ञ कभी किसी राजा ने नहीं किया इस प्रकार से नित २ महा उत्सव के साथ यज्ञ क्रिया होने लगे निमंत्रित गण सभा में एकत्र हो अलौकिक समृद्धि

और समारोह दर्शन करने लगे कुछदिन व्यतीत होनेपर महर्षि बाल्मीकि सोचने लगे कि अब किस उपाय से कुश और लव को रामचन्द्र के समीप ले जांय एक साथ दोनों भाइयों को ले चलें अथवा रामचन्द्र को किसी युक्ति से अपने यहां ले आवें और एकान्त में सब विषय प्रकाश कर कुश और लव को उनके साम्हने कर दें । एवं सीता के लिये भी पुनः प्रतिग्रह की प्रार्थना करें । अपने मन में ऐसी नाना प्रकार की कल्पना कर अन्त में यह निश्चय किया कि उत्तम उपाय यह है कि कुश और लव को रामायण गान करने के हेतु आदेश दें कि वे प्रतिस्थान में गान करते २ महाराज तक पहुंच जांय तब वे अवश्य अपने चरित्र श्रवण के हेतु आनन्दित हो इन दोनों बालकों को अपने निकट बुलावेंगे ऐसा करने से बिना प्रार्थना हमारा इष्ट सिद्ध हो जायगा ॥ १४ ॥

यह अपने मन में सिद्धान्त कर महर्षि ने कुश और लव को बुला के आज्ञा दी वत्स कुश, वत्स लव तुम लोग नित्यप्रति ऋषी लोग राजगण पुरवासी और जनपदवासी के बासस्थान के समीप जाकर एवं सभा भवन के निकट अनुराग से वीना बजा कर रामायण गान किया करो यदि महाराज सुन कर तुम लोगों को बुलावें और अपने साम्हने प्रसन्न हो निज चरित्र गाने की आज्ञा दें तो तत्काल सङ्गीत आरंभ करो और जब तक उनके निकट रहो किसी प्रकार की चपलता वा असंतुष्टता न प्रकाश करो क्योंकि राजा सबका पिता है । अतएव तुम लोग भी अपनी पितृ भक्ति देखा कर उन्हें प्रसन्न कीजियो यदि महाराज गान सुन हर्षित हो कुछ देनेकी इच्छा करें तो लोभ बश हो कर कदापि न ग्रहण कीजियो बरन विनय और भक्ति से निष्पृहता प्रकाश कर लेने में अपनी अनिच्छा प्रकट कीजियो और कहियो महाराज हमलोग बनबासी हैं हमको धनसे क्या प्रयोजन है तपोबल में रहने से फलमूल से प्राण रखाकर आनन्द से काल व्यतीत करते हैं यदि तुम से परिचय जिज्ञासा करें तो कहना कि हमलोग बाल्मीकि के शिष्य हैं १५ ॥

यह आदेश कर महर्षि मौन हुए और वे दोनों सहोदर ने आज्ञानुसार बीना बजाकर मधुर स्वर से रामायण गाना आरंभ किया जिसने

उनका सङ्गीत श्रवण किया वह मुग्ध और निष्पन्द भाव से खड़ा हो रोता रहा क्यों न हो प्रथम तो रामचन्द्र का चरित्र अति विचित्र और परम पवित्र द्वितीय बाल्मीकि की रचना शक्ति अति चमत्कारिणी, और मनो हारिणी है तृतिय कुश और लव का रूप माधुरी देखने से मन मोहित हो जाता तिस पर उनके स्वर ऐसे मधुर थे जिस्से तुलना करने में कोकिल का कलरव भी कर्कश बोध होता चौथे बिना यंत्र उनके अलौकिक गान की निपुणता ऐसी मनोरम थी कि वैसी कभी किसी ने न देखा न सुना था अतएव जिस सङ्गीत में ऐसे समुदाय विषय एकत्र हों उसे श्रवण कर किसका मन अकथनीय आनन्द से न परिपूर्ण होगा ॥ १६ ॥

किंचित् काल परे बहुत से लोग रामचन्द्र के निकट जाकर कहने लगे महाराज दो सुकुमार ऋषिकुमार बीना यंत्र के योग से आप का चरित्र ऐसा गान करते हैं कि जो सुनता है वह मोहित हो जाता है और हम लोगों ने तो इस जन्म में ऐसा मधुर सङ्गीत कभी नहीं सुना वे दोनों यमज सहोदर हैं महाराज मनुष्य देह में कभी किसी ने ऐसा सुन्दर स्वरूप न देखा होगा और स्वर की मधुरता तो क्या कहें, कि किन्नर गण भी यदि सुनेंतो अपना गुण भूल पराभाव मान लें और वे लोग जो काव्य गान करते हैं न जाने वह किसकी रचना है यह नहीं कह सके परन्तु ऐसी सुन्दर मनोहर रचना किसी कसी ने न देखा और न सुना होगा महाराज हम सबकी यह प्रार्थना है कि उन बालकों को राजसभा में बुलाकर अपने साम्हने सङ्गीत करने की आज्ञा दीजिए अधिक क्या कहें उनके दर्शन और सङ्गीत श्रवण से अवश्यही आप भी परम आनन्दित और मोहित होंगे ॥ १७ ॥

श्रवण मात्र से राम के अन्तःकरण में अत्यन्त कौतुक उत्पन्न हुआ तब उन्होंने एक सभासद ब्राह्मण को उन्हें बुलाने के हेतु आज्ञा दिया महाराज की बुलाहट सुन कर दोनों भाइयों ने तुरत विनीत भावसे से सभा में प्रवेश किया उन्हें देख कर रामचन्द्र के हृदय में ऐसा एक अनिर्वचनीय भाव उत्पन्न हुवा जिसे प्रीति रस व विषाद विष का मोह कहना चाहिये यह कुछ निश्चय प्रगट न हो सका और किंचित् काल

उन्मर्चित की नाईं दोनों कुमारों को निष्पन्न नयनमे निहारने लगे। एवं आकस्मात क्यों ऐसा भाव उत्पन्न हुआ इसका कारण न निश्चय होने से चित्रार्पितवत् स्थिर हो रहे ॥ १८ ॥

दोनों भाइयों ने क्रम से निकट जाकर महाराज का जय हो कह कर उचित स्थान पर उपवेशन कर यथोचित विनय और भक्ति योग से जिज्ञासा किया कि महाराज ने हम लोगों को क्यों बुलाया है निकट आने पर उनके शरीर में अपने और जानकी के अवयव का सम्पूर्ण लक्षण निरीक्षण कर राम का चित अत्यन्त विकल हुआ परन्तु उस काल सभा में बहुत से लोग उपस्थित थे इस हेतु किसी प्रकारसे चित की चपलता सम्बर्ण कर कहने लगे वत्स मैंने सुना है कि तुम लोग ऐसा अपूर्व सङ्गीत करते हो कि जो सुनता है मोमुग्ध हो जाता है इस्से मुझे भी तुम्हारे सङ्गीत सुनने की इच्छा है यदि तुम लोगों का अभिप्राय हो तो किंचित् गान कर मुझे प्रीत प्रदान करो तब दोनों भाइयों ने निवेदन किया महाराज हम लोग जो काव्य का सङ्गीत करते हैं सो अत्यन्त विस्तारित है उस में महाराज के समस्त उत्तम चरित्र सबिस्तर वर्णित हुए हैं अब हम लोग आपके साम्हने उस काव्य में से कहां और कौन अंश गान करें सो आज्ञा दीजिये ॥ १९ ॥

दोनों कुमारों को देख राम का चित्त ऐसा चपल और सीता का शोक प्रबल हुआ कि लोक लज्जा के भय से भी धैर्य्य अवलम्बन करने से असाध्य हो तत्काल सभाभङ्ग कर निर्जन स्थान में गमन करने के हेतु अत्यन्त उत्कंठित हुए इस लिये कहा कि आज तुम लोग अपनी इच्छा के अनुरूप जिस अंश में चाहो सङ्गीत करो कल्ह प्रभात से नित्य किंचित् २ तुम्हारे मुख से सम्पूर्ण काव्य श्रवण करूंगा उन लोगों ने जैसी महाराज की आज्ञा हो कह कर सङ्गीत आरंभ किया सभास्थ समस्त लोग गान करते ही मोहित हो मूकवत् हो रहे और अशेष प्रकारसे साधुवाद करने लगे रामचन्द्र ने कविकी पाण्डित्य और रचना चमत्कार देखकर चमत्कृत हो जिज्ञासा कियाकि, ऐसी मनोहर काव्य किसने रचनाकी है, और तुमने किस्से यह काव्य सङ्गीत करना सीखा है, दोनों बालकों ने निवेदन किया महाराज यह काव्य महर्षि

बाल्मीकिने रचना की है, और हम लोगों ने तपोबन में बासकर उन्हीं से शिक्षा पाया है तब महाराज रामचन्द्र ने कहा कि भगवान बाल्मीकि ने सरचित काव्य में अत्यन्त अद्भुत कवित शक्ति प्रकाश किया है थोड़ा सा सुन कर चित तृप्त नहीं होता परंतु आज तुम लोगों को बहुत परिश्रम हुआ और अधिक कष्ट देनेकी इच्छा नहीं होती आज अपने स्थान पर गमन करो ॥ २० ॥

यह कह कर दोनों भाइयों के बिदाकर उन्हें स्थान पर पहुंचवा दिया और तुरत सभा भङ्ग कर निर्जन बास भवन में प्रविष्ट हो अकेले बैठ यह चिन्ता करने लगे कि इन दोनों ऋषि कुमारों को देख कर क्यों मेरा मन इतना आकुल हुआ कुछ ध्यान में नहीं आता जैसे अपनी सन्तान को देखने से लोगों के चित में स्नेह और बात्सल्य रस उदय होता है जो इतिहास और बड़े लोगों से सुना है वैसाही मुझे भी इन्हें देखने से स्नेह और बात्सल्य उदय हुआ है परन्तु ऐसा होने का कोई कारण नहीं देख पड़ता क्योंकि ए दोनों ऋषिकुमार हैं यद्यपि ए दोनों ऋषिकुमार भी नहीं तो मेरे यह दुराशा करने का कोई संभावना नहीं इसलिये कि मैंने जिस अवस्था में प्रिय को बनबास दिया वह निश्चित दुसह शोक और दारुण अपमान से प्राणत्याग किए होंगी लक्ष्मण के परित्याग कर आने पर प्रायः वह आत्म घातिनी हुई होंगी नहीं तो महा आरण्य में कोई हिंसक जन्तु उन्हें भक्षण कर गया होगा वे ऐसी अवस्था में प्राण रख निर्विघ्न ऐसे सन्तान प्रसव कर लालन पालन से इतना बड़ा किया हो यह आशा मेरी निरी दुराशा है मैं जैसा दुर्भाग्य हूं इसमें ऐसे सौभाग्यका उदय होना कभी संभावना नहीं ॥ २१ ॥

यह कह कर बिकल हो रामचन्द्र रोने लगे किंचित काल परे शोक सम्बर्ण कर कहने लगे जो होय पर यह दोनों बालक देखने में स्पष्ट क्षत्रिय कुमार प्रतीत होते हैं एवं इनके शरीर में मेरे शरीर का सम्पूर्ण चिन्ह देख पड़ता है इसलिये सब को मेरे प्रतिरूप बोध होते हैं और प्रनिधान पूर्व्वक देखने से सीता के अवयव के सम्पूर्ण लक्षण लक्षित होते हैं भ्रू, नयन, नासिका, कर्ण, चिबुक, ओष्ठ और दांत सब

जानकी के अङ्ग से कुछ वैलक्षण नहीं बोध होते इतना सौसादृश्य कब अनमित घटना में परि समाप्त होगा और इन लोगों ने भी कहा कि हम बाल्मीकि के तपोबन में प्रतिपालित हुए हैं मैंने भी लक्ष्मण से बाल्मीकि के तपोबन में सीता को परित्याग करने की आज्ञा दिया था यह होना संभव है, कि महर्षि करुणा बश होकर जानकी को अपने आश्रम में लेगये हों और वे तपोबन में जाकर ऋषि पत्नियों के सङ्ग से शोक सम्बर्ण कर यमज कुमारों को प्रसव किया हो और प्रिया जब अयोध्या में थीं उनके लक्षण देखने से अन्तः पुर बासिनी गण सम्भावना करती थीं कि जानकी ने युगल गर्भ धारण किया है तो यह सब सम्भावना करने मे मेरी आशा दुराशा नहीं सम्भवित होती अथवा मैं मृग तृष्णा में जल का भ्रम कर अपने को अकारण क्लेश देने में उद्यत हुआ हूं जब मैंने निष्ठुर राक्षस की नाईं अत्यन्त निर्दय और ममता हीन हो प्राण प्रिया को निरअपराध बनबास दिया तब यह आशा केवल करना मेरी मूर्खता है । हा प्रिये ! तुम ऐसी साधु शीला और सरल हृदया होकर क्यों ऐसे दुश्शील और निष्ठुर हृदय के हाथ पड़ी जब मैंने तुमको नितांत पतिप्राणा और शुद्धाचारणी जान कर अनायास बनबास दिया और अब लों प्राण धारण कर सब काम कर रहा हूं फिर मुझ से बढ़ कर निष्ठुर और पाषाण हृदय दूसरा कौन है ॥ २२ ॥

इस प्रकार से आक्षेप कर दुसह शोक से अभिभूत हो राम चन्द्र हत चेतन हुए एवं अविरल धार से अश्रु विसर्जन करते २ बारम्बार दीर्घ निश्वास परित्याग करने लगे किञ्चित् काल परे शान्त होकर कहा महर्षि बाल्मीकि प्रियाको अपने आश्रम में ले गये और प्रिया नेवहां जाकर इन दोनों युगुल कुमारों को प्रसव किया कदापि यह दोनों ऋषि कुमार नहीं क्योंकि इसमें एक स्पष्ट प्रमाण मिलता है और इनके देखने से जान पड़ता है कि थोड़े ही दिन पहिले दोनों का उपनयन हुआ है अब इनका वय बारह बर्ष से अधिक नहीं इससे ठीक बोध होता है, कि ग्यारहवें बर्ष में इनका यज्ञोपवीत हुआ है यदि क्षत्रियकुमार न होते तो क्यों ग्यारहवें बर्ष इनका उपनयन होता यदि ऋषिकुमार

होते तो महर्षि अवश्य इन्हें आठवें बर्ष उपनयन देते. और जैसा वेष उपनीत ऋषि कुमारों का होता है वैसा इन दोनों को नहीं देखपड़ता यदि ए दोनों क्षत्रिय कुमार होंतो अवश्यही सीता के सन्तान होंगे क्योंकि और क्षत्रिय सन्तानका तपोबन में पालन पानेकी क्यासंभावना है एवं मेरी नाईं हतभाग्य के सन्तान ये न होते तो इस वयस में ऐसे सुकुमार कुमारों को ऐसी दुरवस्था होनेकी क्या संभावनाथी २३ ॥

मनमें ऐसे २ वितर्क और आक्षेप करि रामचन्द्र कहनेलगे यदि प्रिया अबतक जीतीहों और ए दोनों कुमार हमारे पुत्र हों तो ऐसा होनेसे कैसे अह्लाद के विषय हों हा ! प्रिये ! तुम फिर हमारे नयन और हृदय की आनंद दायिनी होवोगी यह ध्यान करते ही मेरा सब शरीर अमृत रस में अभिषक्त हो जाता है यह कह करि मनमें दृढ़ किया कि फिर सीता से निश्चित् समागम होगा और यह मनमें स्थिर कर कहने लगे कि इतने विरह के पश्चात् जब प्रथम मिलाप होगा तो अनुमान होता है कि मैं आनंद से अधीर हो जाऊंगा और प्रिया को भी आनंद की सीमा न रहेगी उस काल हम दोनों के नयन से आनंदाश्रु प्रवल बेग से पतित होंगे किंचित् काल यह चिन्ता करतेर आनंदाश्रु गिरने लगा पश्चात् यह चिन्ता हुई कि मैंने जैसा प्रिया के साथ यह निष्ठुर व्यौहार किया हैफिर उन सेमिलने में कैसे सन्मुख मुख देखाऊंगा परंतु वह साधुशीला और सरल हृदया हैं इस्सेजान पड़ता है कि अनायास मेरा अपराध मार्जन करैंगी अथवा मैं साक्षात् होते ही उनके चरण पर गिर के विनय बचन से क्षमा हेतु प्रार्थना करूंगा किंचित् काल परे फिर यह चिंता हुई कि प्रजा लोगों की निंदा और विराग के भय से मैंने प्रिया को बनवास दिया और अब ग्रहण करूं तो वे लोग समझेंगे कि जिस हेतु से इतने दिन तक प्रिया को दुसह विरहानल से दग्ध किया वह सब विफल हो जायगा और मूर्खता प्रकाशित रहेगी ॥ २४ ॥

यह सोच नितांत निरुपाय हो राम किंचित्काल अप्रसन्न हृदयहो बैठे पश्चात् क्रोधाविष्ट हो कहने लगे कि फिर मैं अमूलक लोकापवाद से डर करताहूं अब प्रिया के ग्रहण करने से यदि सब प्रजा असंतुष्ट

है.तोहों पर फिरभी उनके इच्छानुसार इसविषय में न चलूंगा मैं बहुत कुछ कर चुका राज्य भार ग्रहण करि मेरी नाईं कभी किसी ने अपने को दुःख न दिया होगा । पहिले ही प्रिया को बन बास देना अत्यन्त मूर्खता का काम हुआ अब मैं अवश्य प्रिया को ग्रहण करूंगा इस्से भी यदि लोग नितांत विरक्त हों तो भरत को राज्य देकर प्रिया के साथ बानप्रस्थ धर्म अवलम्बन करूंगा मैं अत्यन्त प्रिया विरहित हूं मुझे राज्य भोग करने से उनके साथ बनवास करना परम मंगल है २५ ॥

ऐसेही रामचन्द्र ने अहार, निद्रा परित्याग करि और नाना प्रकार की चिन्ता में मग्न हो रजनी व्यतीत की ॥ २६ ॥

महर्षि बाल्मीकि ने राम चरित्र अवलम्बन कर एक अनूपम काव्य रचना किया है उसे कोकिल कंठ तरुण वयस दोनों शिष्य अति मधुर स्वर से गान करते हैं कल्ह प्रभात समय वे दोनों राजसभा में आकर संगीत करेंगे यह सम्बाद नैमिषारण्य में समागत सब लोगों पर विदित हुआ अतएव रजनी व्यतीत होतेही ऋषिगण नृपतिगण औरअन्य२ निमन्त्रितगण समस्त लोग व्यग्र चित हो संगीत श्रवण के हेतु राजसभा में उपस्थित होने लगे और उस दिन सभा में एक बड़ा कोलाहल उत्पन्न हुआ तब रामचन्द्र राजसिंहासन पर विराजमान हुये उस समय भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और लङ्का समर सहाय सुग्रीव विभीषणादि बन्धु वर्ग महाराज रामचन्द्र के दक्षिण और बाम पार्श्व में यथायोग्य सब आसन पर आ बैठ गए कौशिल्या, केकयी, सुमित्रा, उरमिला, माण्डवी और श्रुति कीर्ति आदि राज परिवारगण अरुन्धती प्रभृत अर्थात्ऋषि पत्नियों के साथ अन्तःपुर में उचित स्थान पर उपस्थित हुईं इसरीति से राज सभा में समस्त लोग यथायोग्य स्थान पर उपविष्ट होकर नवीन काव्य और युगल सुकुमार गायक की चर्चा करने लगे एवं अत्यन्त उत्सुक चितसे उनके समागम की प्रतीक्षा करते रहे ऐसे समय महर्षि बाल्मीकि कुश और लव को साथ लेकर सभाद्वार पर उपस्थित हुए उन लोगों को देखकर सभामण्डल में आकस्मात एक बड़ा कोलाहल उत्पन्न हुआ जिन्होंने पहिले दिन कुश और लव को देखाथा वे लोग अंगुलीसे निकट वासियों को उन्हें देखाने लगे सभा में बाल्मीकि के प्रवेश करतेही सब

महानुभावों ने सम्बर्द्धना को महर्षि और उनके दोनों शिष्यों के हेतु पृथक् २ स्थान पहलेही से निरूपित होचुके थे उन लोगों ने वहां जाकर उपवेशन किया उस समय समस्त लोग नवीन संगीत श्रवण करने के हेतु ऐसे उत्कंठित हुए और तदाकार शोचरूप हो कब आरंभ होगा मनन करने लगा २७ ॥

किंचित् काल परे महर्षि बाल्मीकि ने सभा में चारों ओर देख महाराज रामचन्द्र से निवेदन किया कि समस्त लोग संगीत श्रवण के हेतु उत्कंठित हैं अतएव यदि आप आज्ञा दें तो संगीत प्रारंभ हो पश्चात् रामचन्द्र के आज्ञानुसार कुश और लव ने बीना यंत्र के योग से गान आरंभ किया बाल्मीकि ने पहिलेही दोनों को शिक्षा दिया था कि रामायण में जहां जहां राम सीता का परस्पर स्नेह और अनुराग वर्णन है तुम लोग आज उन्हीं समस्त अंशों में गान करो तदानुसार उन के किंचित् गान करने पर राम का हृदय द्रवीभूत हुआ एवं प्रबल वेग से अश्रु धारा वर्षा होने लगी रामचन्द्र जितना अधिक उन्हें देखते थे उनके हृदय में यह विश्वास दृढ़ होता गया कि अवश्य यह दोनों सीता के तनय हैं भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न उन बालकों के शरीर में राम और जानकी के सम्पूर्ण अवयव का सौसादृश्य अवलोकन करि नाना प्रकार के तर्क करतेरहे सभास्थ समस्त लोग एक वाक्य हो कहने लगे क्या चमत्कार है कि ए दोनों ऋषि कुमार ठीक महाराज रामचन्द्र के प्रति कृति स्वरूप देख पड़ते हैं यदि वेष और वयस में वैलक्षण्य न होते तो राम और इन कुमारों में किंचित् मात्र वैषम्य न जान पड़ता बोध होता है कि रामचन्द्र ने इन का स्वरूप धारण करि ऋषि कुमार का वेष अवलंबन किया है इस वयस में जैसी राम की आकृति और रूप लावण्य की माधुर्य्य थी ठीक वैसीही इन दोनों की भी देखपड़ती है जोहो समस्त सभास्थ लोगोंमें मुग्ध हो निष्स्पन्द भाव से बैठएकाग्र चित्त हो संगीत श्रवण और अनिमिष नयन से निरीक्षण करने लगे ॥ २८ ॥

किंचित्काल परे रामचन्द्रने लक्ष्मण से कहा भाई इनदोनों बालकों को एक सहस्र सुवर्ण मुद्रा पुरस्कार देव युगुल कुमार ने यह सुन कर

विनय पूर्व्वक निवेदन किया महाराज हम लोग बनबासी हैं भोगाभिलाषी नहीं अनायास लब्ध फल मूल भोजन कर और बलकल बसन पहिन कुटी में शयन करते हैं तो कांचन लेकर हम लोग क्या करेंगे आपके पवित्र चरित्र बड़े यत्न और श्रम से अभ्यास किया था, इसलिए आप के साम्हने कीर्तन किया आप महाराज और बर्णाश्रम के प्रतिपालक हो इस्से हम लोगों का यत्न और परिश्रम सफल हुआ और आप सुनकर प्रसन्न हुए हमारे अहो भाग्य जिस्से हम चरितार्थ हुए, बालकों की यह प्रवीनता और निषपृहता देख सब लोग चकृतहुए॥२६॥

किंचित् काल कुश और लव को अनिमिष नयन से निरीक्षण करने में कौशल्या देवी के अन्तःकरणमें यह निश्चय हुआ कि ए दोनों बालक अवश्य सीता देवी के तनय हैं यह सोच कौशल्या ने स्थिर चित हो दीर्घ निश्वास परित्याग कर हा,वत्से जानकी कहि भूतल पर पतित हो मुर्छित हुईं, यहदेख अन्य अन्तःपुर वासिनी लोग विकल हुईं और अनेक यत्न कर उन्हें चेतन किया पश्चात् किंचित् काल लौं संगीत श्रवण कर स्थिर चित हो रहीं इस प्रकार से सीता का शोक सब के मन में इतना प्रवल हुआ कि अविरल धार से अश्रु विसर्जन और बारम्बार दीर्घनिश्वास परित्याग करने लगीं कौशिल्या अत्यंत अधीर हो उन्मता की नाईं कहने लगीं कि उन दोनों कुमारों को मेरे पास ले आओ मैं उन्हें गोद में लेकर एक बेर उनका मुख चुम्बन करूं वे मेरी जानकी के तनय हैं उन्हें देख कर मेरा प्राण विकल होता है बन पड़े तो उनको मेरे साम्हने ले आओ नहीं तो मैं उनके निकट आप जाती हूं एक बेर दोनों को गोदमें लेने और मुख चुम्बन करने से जानकी का शोक मेरे जीमें अत्यन्त निवारण होगा यह देखो उनके शरीर में मेरे राम और जानकी का सम्पूर्ण लक्षण देख पड़ता है उन कुमारों ने जब सभा में प्रवेश किया उस समय मुझे जान पड़ा कि किसी ने मेरे कान में आकर कहा कि तुम्हारे रामके दोनों सुकुमार आते हैं तब से मेरा प्राण उनके हेतु विकल हो रहा है। बारह बर्ष व्यतीत होने पर मैं प्रायः सीता को भूल गई थी अब इन दोनों कुमारों को देख कर फिर मुझको सीता का शोक नवीन हो गया॥

हा बत्से जानकी! तुम कहां हो और तुम्हारी क्या अवस्था है आज तक तुम जीती हो अथवा पाप मय नरलोक त्याग कर परधाम पुण्य लोक में सिधारी हो कुछ जान नहीं पड़ता। यह कह दीर्घनिश्वास परित्याग कर कौशिल्या पुनः मूर्छित हुईं फिर सबने उन्हें यत्नसे चेतन किया तब कौशिल्या अधीर हो कहने लगीं कि अबतक तुम लोग उन्हें मेरे पास नहीं लाईं यदि तुम सब न ला सको तो मेरा नाम लेकर कोई लक्ष्मण से जा कहो कि वह मेरे गोद में उन्हें लादे ॥ ३० ॥

इस प्रकार से कौशिल्या की स्थिरता और कातरता देख अरुन्धती की आज्ञा से एक निकट वर्त्तिनी दासी ने जाकर लक्ष्मण से कौशिल्या का अभिप्राय निवेदन किया लक्ष्मण ने उस दिन किसी युक्तिसे सङ्गीत निवृत कर सभा भङ्ग किया कुश और लव को साथले कौशिल्या के निकट लेगए। कौशिल्या दोनों भाइयों को गोद में ले स्नेहसे बेर बेर दोनोंका मुख चूंबने लगीं एवं हा बत्से जानकी! तुम कहां हो कह कर अत्यंत कातरता पूर्वक ऊंचेस्वर से रोने लगीं। यह देख सुमित्रा उर्मिला आदि अंतःपुर बासिनीगण अश्रुपात का बिलाप और परिताप करने लगीं। कुश और लव यह सब वृत्तांत देख और सुन कर चकृत हो रहे ॥ ३१ ॥

किंचित् काल परे कौशिल्या ने कुछ शोक सम्बर्ण करि संशय दूर करने के हेतु इन दोनों बालकों से जिज्ञासा किया कि तुम्हारे माता पिता का क्या नाम है उन्हों ने बिनय पूर्वक अपना २ नाम बताकते निवेदन किया कि हमारा पिता कौन है अबतक हम नहीं जानते और न देखा है केवल हमारी जननी वर्त्तमान है सो तपस्विनी है परंतु उसका नाम भी हमने अबतक नहीं सुना न किसी ने हम से कहा और न हम लोगों ने कभी उनसे पूछा है। हमलोग महर्षि बाल्मीकि के शिष्य हैं उन के तपोवन में प्रतिपालित हो उन से विद्या सीखी है यह सब वाक्य चंचल चित्त से श्रवण करि कौशिल्या का यद्यपि बहुत संशय दूर हुआ परंतु उन्हों ने संपूर्ण तृप्त न होकर फिर जिज्ञासा किया कि तुम्हारी जननी का आकार कैसा है उन्हों ने उनका आकार यथावत् बर्णन किया तब उन लोगों ने उन्हें

सीता का तनय निश्चित बोध किया। तब कौशिल्या प्रभृति सकल राज परिवार का शोक सागर अनिवार्य्य वेगसे वर्द्धित हुआ। किंचित् काल पश्चात कौशिल्याने कुश और लव से जिज्ञासा किया कि तुम्हारी जननी कैसी है उन्हों ने उत्तर दिया कि प्रति दिन जीवनमृत के तुल्य उन्हें देखता हूं। विशेषतः दिन २ ऐसी क्षीण होती जाती हैं जिस्से बोध होता है कि अधिक दिन न बचैंगी ॥ ३२ ॥

कुश और लव से यह वाक्य श्रवणकर सबकी सब अत्यन्तविलाप और परिताप करने लगीं उस समय कौशिल्या देवी ने किंचित् धीर्य्य अवलम्बन कर सर्व प्रकार से सन्देह दूर करनेके हेतु लक्ष्मणको आज्ञा दिया कि वत्स तुम जाओ और एकवेर महर्षि बाल्मीकि को मेरेपास ले आओ किंचित् काल पश्चात् लक्ष्मण आज्ञानुसार बाल्मीकिजी को साथ लेकर वहां उपस्थित हुए तब सब लोगों ने समुचित भक्ति से ऋषिको प्रणाम कर परम समादर से दिव्य आसन पर बैठाया पश्चात कौशिल्या ने हाथ जोड़ जिज्ञासा किया भगवन आप के ए दोनों शिष्य कौन हैं, कृपा कर आज्ञा कीजिए बाल्मीकि ने जबसे लक्ष्मण सीता को परित्याग कर आएथे अब तक आदि अंत समस्त वर्णन किया एवं राम विरह में सीता की जैसी अवस्था हुई सब यथावत् निरूपण किया। यह सुनकर सब के वक्षस्थल अश्रु जल से भीग गए कौशिल्या शोक से नितांत अभिभूत होकर हा, वत्से जानकी! विधाता ने तुम्हारे कपाल में इतना दुःख लिखा था कह करविलाप करने लगीं जो हो पर सीता अब तक जीती हैं एवं कुश और लव उनके तनयहैं इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ ३३ ॥

इतने दिन पश्चात् आत्म परिचय लाभ कर कुश और लव के अन्तःकरण में नाना प्रकार के अनिर्वचनीय भाव उदय होने लगे तब बाल्मीकि ने कहा बत्स कुश बत्स लव तुमअपने पितामही और पितृव्य पत्नियों के चरण पर गिरो वे लोग तत्कालही कौशिल्या केकयी और सुमित्रा एवं उर्मिला माण्डवी और श्रुतकीर्ति के चरण पर साष्टाङ्ग प्रणिपात हुए फिर महर्षि ने कहा कि तुम लोगों ने रामायण में लक्ष्मण नामक महापुरुष के गुण कीर्तन पढ़ा है सो यही हैं और

ए तुमारे तृतीय पितृव्य हैं यह कहकर लक्ष्मण को देखा दिया लक्ष्मण का नाम सुनतेही विस्मित नयन हो पांव से मस्तक पर्यंत अवलोकन कर अत्यन्त भक्ति योग से उनके चरण में प्रणाम किया ॥ ३४॥

इस प्रकार से किंचित काल व्यतीत होने पर कौशल्य ने लक्ष्मण से कहा बत्स तुम त्वरित जाव और वशिष्ठ देव को इहां ले आओ। सुनतेही लक्ष्मण राम और वशिष्ठ देव को लेकर वहां फिर उपस्थित हुए तब कौशिल्या ने अश्रु पूर्ण लोचन और गद्गद बचन से उनलोगों को कुश और लवका परिचय दिया एवं, सीता अब लौं जीती हैं यह भी कहि दिया। कुश और लव के विषय में रामचन्द्र के अन्तः करण में जो सन्देह रहा सो सम्पूर्ण रूप से दूर हो गया उन्हें पहिचान कर सीमा रहित बात्सल्य और निष्यन्द नयन से निरीक्षण कर अश्रु विसर्जन करने लगे। पश्चात कौशिल्या ने सपुत्रा जानकी के ग्रहण करने के हेतु राम से अनुरोध कर कहा इसपर रामचन्द्र मौन अवलम्बन कर रहे कौशिल्या जी ने उन्हें मौनभाव देख सम्मति जान सीता को बुलाने के हेतु बाल्मीकि से प्रार्थना किया बाल्मीकिने त्वरित अपने वासस्थान पर जाकर कौशिल्या प्रेरित सिविका यान के साथ अपने एक शिष्य को प्रेरण किया और कहा कि तुम जानकी को इस यान पर चढ़ाकर यहां लेआओ ॥ ३५ ॥

क्रम से सब निमंत्रित गण अवगत हुए कि रामायण गायक युगल कुमार महाराज रामचन्द्र के तनय हैं। सीता ने परित्यक्त हो बाल्मीकि के आश्रममें इनदोनों कुमारोंको प्रसव किया और अब तक वे जीती हैं, महाराज फिर उन्हें ग्रहण करेंगे इसलिए उन्हें लाने के हेतु लोग प्रेरित हुए हैं इस सम्बाद के फैलतेही अनेक साधु लोगों को प्रीति प्राप्त हुई परन्तु उन में से कोई २ लौकिक व्यौहारवाले कहने लगे कि हमारे महाराज अत्यन्त स्थिर चित्त हैं यदि जानकी को फिर ग्रहणही करने को इच्छा थी तो क्यों परित्याग किया जानकी जैसी उस काल में थीं वैसेही अब भी हैं जिस कारण से परित्याग किया था अब भी वह संशय बना ही है। अतएव बड़ों का चरित्र समझना बड़ा कठिन है वे समर्थ है जो चाहें कर सक्ते हैं ॥ ३५ ॥

राम ने जानकी के परिग्रह करने का निश्चय किया था परंतु यह सब लोक कथा परम्परा सुनने पर चंचल चित हो मन फिर गया पहिले यह सोचे थे कि अब जानकी के ग्रहण करनेमें कोई प्रजागण आपत्ति न करेंगे पर अब लौं उनके हृदय मे सीता के पवित्र चरित्र में दुस्संशय दूर न हुआ यह जानकर राम विषाद सागर में मग्नहुए और अब क्या करें यह कुछ निश्चय न कर सके पश्चात् लक्ष्मण को बुला कर परामर्श करने लगे अनेक तर्क बितर्क करने पर यह निश्चय किया कि सबके सामने जानकी फिर आत्म शुद्ध विषयमें परीक्षा दें तो उन्हें ग्रहण करना चाहिये राम की आज्ञानुसार लक्ष्मण ने यह बृतान्त वाल्मीकि से जाकर कहा ॥ ३० ॥

लक्ष्मण से यह कथा श्रवण कर बाल्मीकि तुरत उठ कर राम के समीप उपस्थित हुए और यह बर्णन किया कि सीता सम्यक्शुद्धाचारणी है इस विषय में राम को बहुत कुछ समझाया पर रामचन्द्र ने कहा कि भगवन्! सीता के शुद्धचरित्र के विषय में मुझे किंचिन्मात्र सन्देह नहीं परंतु मैं राज भार ग्रहण करने से नितांत पराधीन हो रहा हूं आपही लोग उपदेश देते हो कि प्राणापन करने से भी प्रजा रंजन करना राजा का परम धर्म है किसी प्रकार राजों का प्रजारंजन से उदासीन होना इस काल में निन्दायोग रहना और पर काल में नर्कगामी होना पड़ता है अब प्रजा लोगों के अन्तःकरण में सीता के चरित्र का विषम संशय उपस्थित हुआ है जब तक वह दूर न हो मैं किस प्रकार से उन्हें ग्रहण करूं जब से मैंने सीता को परित्याग किया तब से मेरा सब सुख जाता रहा यह नहीं कह सका कि अब तक मैं कैसे जीता हूं अत्यन्त पराधीनता से मुझे जानकी को परित्याग करना पड़ा प्रथम यह सोचाथा कि प्रजा लोग असंतुष्ट हों तो हों परन्तु मैं उनके अनुरोधसे फिर सीताको परित्याग न करूंगा पर इसमें देखता हूं कि मेरा धर्म नष्ट होताहै। अतएव इस सङ्कल्पसे भी निवृतहुआ फिर सोचा कि भरत को राजदेकर राजकार्य्य के दुस्भार से निवृतहो जाऊं तो जानकी के प्रतिग्रह करने में कुछ प्रतिबन्धक न हो पश्चात् बहुत कुछ सोचने परयह उपाय भी उत्तम न समझ पड़ा। अब देखता हूं कि मैंने जो

जानकी पर निष्ठुर आचरण किया उस्से जान पड़ता है कि मुझे महा पातकी होना पड़ा अतएव इस जन्म में केवल मैं दुःख भोग करने के हेतु नर लोक मे आया रहा और अब जो मुझे विषम कष्ट भोगकरना पड़ता है सो मेरा आत्मही जानता है यदि इस क्षणमें मेरा प्राणजाय तो मैं परमानन्द को प्राप्तहोऊं ॥ ३८॥

यह कह कर अत्यन्त व्याकुल हो रामचन्द्र प्रबल धार मे अश्रु विसर्जन करने लगे किंचित काल परे कुछ शान्त हो हाथजोड़ बाल्मीकि के साम्हने बिनय वाक्य मे निवेदन किया भगवन्! आप से यह मेरी प्रार्थना है कि सीता के यहां आने पर आप उनको साथ लेकर सभा में आइए और कृपा कर उनके परिग्रह करने के विषय में सबकी सम्मति जिज्ञासा कीजिए यदि परिग्रह करना सबकी सम्मति होतो मैं तत्काल उन्हें ग्रहण करूंगा नहीं तो सीताही परीक्षा देकर प्रजागण का सन्देह दूर करैं बाल्मीकिने रामसे यह बात सुन कर अपनीइच्छा के बिरुद्ध सम्मति कर बिषण्ण बदन हो आत्मसदनमें गमन किया॥ ३९॥

इधर जानकी कौशल्या प्रेरित शिविका यान देख और महर्षि प्रेरितशिष्य के मुख से आदेश सुन कर मन में कहने लगीं जान पड़ता है कि बिधाता ने इतने दिन पीछे प्रसन्न हो मेरा दुःख शान्त करने का उद्योग कियाहै जब तो सासने शिविका भेजी तो सोचती हूं कि फिरि मैं परिग्रहीत हूंगी इसमें कुछ सन्देह नहीं इसी कारण बोध होता है कि मेरी बांई आंख फरक रही है मैं आर्य्यपुत्र का स्नेह, दया, और ममता जानती हूं वे अत्यन्त कृपालू हैं और नितांत पराधीन होकर मुझे परित्यागकिया है जैसी मैं उनके बिरह में कातर होरही हूं वैसेही वे भी मेरे बिरह में कातर हुए होंगे इस में कुछ सन्देह नहीं यदि मुझ पर उनका स्नेह न्यून होता तो कदापि वे भार्य्यान्तर परिग्रह में प्राङ्मुख न होते उन्हों ने मेरी जगह पर स्वर्ण की प्रतिकृति स्थापन कर यज्ञ आरंभ किया है इस्से जान पड़ता है कि मेरे ऊपर उन्हें निश्चित सम्पूर्ण स्नेह है यह देख कर मेरा सब शोक निवारण हुआ यह मैं स्वप्न में भी न सोची थी कि फिर मैं आर्य्य पुत्र का सहवास लाभ करूंगी ॥ ४० ॥

यह मन में गुनावन करते २ जानकी के युगल नयनसे आनन्दाश्रु प्रबल वेग से गलित होने लगा उनके शीर्ण शरीर में बल अप्रसन्न चित्तमें प्रमाद और अनुत्साहित मनमें उत्साह उत्पन्न हुआ यह सोचकर कि फिर मैं रामसे परिग्रहीत हुई जानकी का हृदय अनिर्वचनीय आनन्द से परिपूर्ण हुआ आशा के अश्वासिनी शक्ति की सीमा नहीं फिर जानकी ने आशा पर आश्रय कर मन में नाना प्रकार के सङ्कल्प बिकल्प करना आरंभ किया राम के संगसमागम होने मे जैसी अवस्था होने की संभावना थी सो अपने चित्त में चित्रित करने लगीं। यह ध्यान हुआ कि राम के साथ निश्चित समागम हुआ यह तन मयता से देख कर अनिर्वचनीय आनन्द भोग करने लगीं एक बेर ऐसा सोचीं कि मैं राम के सन्मुख उपस्थित हुई और राम लज्जा से मुख सामने कर बोलने में लज्जित हुए फिर सोचीं कि राम अश्रुपूर्ण नयन से स्नेह पूर्व्वक संभाषण करते हैं मैं कुछ नहीं बोलती और अभिमान से बदन बिरस कर खड़ी हूं फिर सोचीं कि पहिले पहिल मिलन में हम दोनों ही जड़वत हो रहे हैं और स्थिर नयन से देखते हैं एवं आंसू से हृदय भीज रहे हैं पुनः सोचीं कि उभय एक आसनपर बैठकर परस्पर दीर्घ बिरह के दुःख वर्णन करते २ अज्ञानता में रजनी व्यतीत होगई पुनः सोची कि मेरे सासगण के सम्मुख उपस्थित होने और चरण बन्दना करने पर वे लोग अश्रुपूर्ण नयन हो मेरा मुख चुम्बन करने लगीं और मुझे अस्थिमात्र शेष देखकर बहुत परिताप करतीभईं पुनः सोची कि मैं सासगण के निकट बैठ उनके जिज्ञासा बिषयका उत्तर देती हूं उस समय देवरगण ने आकर अश्रुपूर्ण लोचन और गदगद बचन से आर्य्ये प्रणाम करताहूं कहकर प्रणाम किया फिर सोची कि भग्निगण ने भी आकर प्रणाम किया और परस्पर देखने से शोक सागर बढ़ने पर सब एकत्रहुईं और अश्रुपूर्ण लोचन हो विलाप करनेलगीं पुनः सोची कि हिरण्यमयी प्रतिकृति दूर हुई और मैं राम के बाम बैठ कर यज्ञक्षेत्र में सहधर्मिनी कार्य्य करतीहूं ॥ ४१ ॥

इस प्रकार के नाना तरङ्ग मन में उठाती हुई आनन्द से पुलकित हो जानकी ने शिबिका में आरोहन किया और दूसरे दिन संध्या

समय नैमिषारण्य में उपस्थित हुई बाल्मीकि ने देखकर कहा बत्से, महाराज रामचन्द्र फिर तुमको गृहण करने में सम्मत हुयेहैं कल्ह जब वे फिर सभा मंडप में बैठैंगे तब उस समय मैं सबके सम्हने उनके हाथ में तुमको सौंपदूंगा बाल्मीकि जी के मनमें यह निश्चय रहा कि सीता के परिग्रह करने के विषय में मेरी प्रार्थना करने पर कोई साहस कर सभा में असम्मति प्रकाश न कर सकेगा इस लिये महर्षि को शुद्ध चरित्र के प्रमाण देने की भी यद्यपि सम्भावना थी पर उसकथा का कुछ उनसे प्रसङ्ग न कहा पश्चात् जानकी निर्जन स्थान में बैठकर कुश और लवके मुंहसे सकल बृत्तांत श्रवण कर अपने परिग्रह के विषयमें सर्वथा निस्सन्देह हुई आनन्द से अधीराहोकर प्रति क्षण प्रभात होने की प्रतिच्छा करने लगी और समस्त रात्रि में एक पलभी उनकी पलक न झपकी ॥ ४२ ॥

रजनी व्यतीत होनेपर महर्षि स्नानआन्हिक समाप्तकर सीता, कुश लव और शिष्यवर्ग को साथ लेकर सभा में उपस्थित हुये सीता को अस्थिमात्र अवशेष देखकर रामका हृदय दुःख से विदीर्ण होने लगा पर उन्हों ने बड़े यत्नसे शोक वेग संवर्ण किया और यह सोचा कि आज प्रजालोग न जाने मेरेसाथ कैसा व्योहार करैंगे अत्यन्त आकुल हो काल व्यतीत करने लगे। उस समय सीता की अवस्था देखकर सबके अन्तःकरण में करुणा उदय हुई तत्काल बाल्मीकि जातेही खड़ेहोकर कहने लगे कि इस सभा में नानादेशीयग नृपति गण कोशल राज के प्रधान २ प्रजागण और सहस्र २ महात्मा व ऋषि गण उपस्थित हैं सबपर विदित है कि महाराज रामचन्द्र ने अमूलक जन अपबाद से चंचल चित हो अत्यंत निरअपराधिनी जानकी को परित्याग किया था अतएव अब मैं तुम सब महानुभावों से अनुरोध करता हूं कि जानकी के परिग्रह करने के हेतु आप सब लोग प्रशस्त मन होकर अनुमोदन कीजिये क्योंकि जानकी अपने चरित्र विषय में संपूर्ण भांति से पवित्र हैं इस बिषय में मैं जानता हूं कि किसी को संदेह नहीं ॥ ४३ ॥

यह कहकर महर्षि निवृत्त हुये और सभामण्डल में एक अत्यन्त

कोलाहल उपस्थित हुआ किंचित्काल पश्चात् नृपतिगण और प्रधानर प्रजागण ने हाथ जोड़ खड़े हो निवेदन किया कि हम लोग अकपट हृदय से कहते हैं कि यदि महाराज रामचन्द्र फिर सीता देवी को गृहणकरें तो हमलोग अत्यंत संतुष्ट होंगे परतु यह सुनकर अन्यर लोग सिर झुकाकर मौनही रहे अब लौं रामचन्द्रको यह संशयथा कि सबलोग क्या कहेंगे पर अब स्पष्ट जान पड़ा कि लोग सीता के परिग्रह करने में सम्मत नहीं। इसलिये वे म्लान बदन और मृतकवत् हो हतबुद्धि की नाईं स्थिर नैन से बाल्मीकि का मुंह निहारने लगे तब बाल्मीकिने अत्यन्त उत्साह हीन हो और कुछ उपाय न देख सीता से कहा कि वत्स तुम्हारे चरित्र विषय में प्रजालोगों को जो संशय हुआ था वह आज तक दूर नहीं हुआ अतएव तुम फिर सबके सामने कुछ परीक्षा देकर इनके मन से संशय दूर करो सीता बाल्मीकि के दाहिण ओर खड़ी हो आकुल मन से प्रतिक्षण अपने परिग्रह की प्रति करती रहीं यह सुनतेही बज्रहत की नाईं हत चेतना हो प्रचण्ड बाताहत लता की नाईं भूतल में गिर पतित हुईं ॥ ४४ ॥

कुश और लव जननी की यह दशा देख अत्यन्त कातर हो उच्चस्वर से रोदन और बिलाप करने लगे राम ने भी जो अब तक अत्यन्त लोकानुराग से प्रियतमा के मिलने में धीर्य्यावलम्बन किया था जानकी को भूतलशायिनी देख एवं कुश और लव का रोदन सुन दीर्घ निश्वास परित्याग कर हा ! प्रियेसी कहि मूर्छित हो सिंहासन से भूतल में पतित हुए यह देख कौशल्या भी शोक से अधीर हो हा। बत्से जानकी कहि मूर्छित हुईं इस पर सीता की भग्निगण भी दुसह शोक से अभिभूत होकर हाहा कार मचाती हुईं उच्चस्वर से रोनेलगीं यह सब बिषय देख सभासत समस्तलोग अस्तब्ध और हतबुद्धि हो चित्रपट की नाईं स्थिर हो रहे बाल्मीकि अब तक सीता को चेतन करने के हेतु यत्न में प्रवृत रहे पर सब यत्न उनका बिफल हुआ पश्चात् महर्षि ने यह जाना कि सीता देवी ने मानवलीला सम्बर्ण कर संसार से विरक्त हो परमधाम को गमन किया ॥ ४५ ॥

सीता अत्यन्त सुशीला और सरल हृदया रहीं उनके तुल्य पति

प्रायणा कामिनी किसी के देखने वा सुनने में नहीं आई वह अपने विशुद्ध चरित्र और पतिभक्ति की सीमा चमत्कृत दिखा गईं बोध होता है कि बिधाता ने स्त्री जाति को पतिव्रता धर्म्म उपदेश करने के हेतु सीता को सृष्टि किया था कि उनके तुल्य सर्वगुण सम्पन्ना कामिनीने किसी काल में पृथ्वी पर जन्म नहीं ग्रहण किया पर कैसे खेद की बात है कि ऐसी सर्व्वगुण सम्पन्न हो और ऐसा सर्वगुण सम्पन्न पतिलाभ करे कभी कोई कामिनी इनके तुल्य दुःख भागिनी न हुई होगी॥ ४६ ॥

इति सीता बनबास चतुर्थ परिच्छेद समाप्तः॥

दोहा। पतिव्रत धर्म प्रकाशिनी राजनीति को सार।
सीता को बनबास यह करुणारस आगार॥ १ ॥
प्रजापाल श्रीराम सम पतिव्रत धर्म सिसीय।
भयो न है नहिं होयगो कीरति अति कमनीय॥ २
राजनीति को बर्त्तनो पतिव्रत धर्म अचार।
नर नारिन उपदेश हित राम सीय अवतार॥ ३

इति॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वमोक्षधर्म्मवदानधर्म	नाटक	जगद् विनोद	सुतफ़र्क़ात
११ अश्वमेध आ-	प्रबोध चन्द्रोदय	राग	शनिश्चरकी कथा
श्रम वासक मुशल	राजा भिषेक	राग प्रकाश	ज्ञानमाला
पर्व्व महा प्रस्थान	आनन्द रघुनन्दन	लावनी	गोपीचन्द भरतरी
स्वर्गारोहण	वेदान्त	शृंगार बत्तीसी	कथा श्री गंगा जी
१२ हरिवंश पर्व्व	योग वाशिष्ठ	क़िस्सा वग़ैरह	अवध यात्रा
रामायण राम बिला-	आनन्दाऽमृतवर्षिणी	नानार्थनी संग्रहावली	भरतरी गीत
सरामायणतुलसीकृ-	काव्य	ब्रह्मसार	दानलीला व नागलीला
रामायण सटीकमये	सूरसागर	शिवसिंह सरोज	दोहावली रत्नावली
मानसदीपिका कोष	कृष्णसागर	भक्तमाल	गोकर्ण माहात्म्य
आदितथा जिल्दबंधी	विश्रामसागर	इन्द्रसभा	श्रीगोपाल सहस्रनाम
तथा मोटे अक्षरोंकी	प्रेमसागर	विक्रम बिलास	कथा सत्यनारायणस-
मये तसवीर व क्षेपक	ब्रज विलास बड़ा व छोटा	वैताल पच्चीसी	हनुमान् बाहुक
रामायण तुलसीकृत	कथाप्रिया	सिंहासन बत्तीसी	जनक पच्चीसी
सातोंकाण्ड	विजय मुक्तावली	पद्मावती खंड	हरिहर सगुण -
१ बालकाण्ड	अनेकार्थ	शुक बहत्तरी	निर्गुण पदावली
२ अयोध्याकाण्ड	छन्दोर्णव पिंगल	वकावली सुमन	बनयात्रा
३ अरण्य काण्ड	कविकुल कल्पतरु	चहार दरवेश	कायस्थवर्ण निर्णय
४ किष्किंधाकाण्ड	रसराज	क़िस्सा हातमताई	बिहार विन्द्रावन
५ सुन्दरकाण्ड	सतसई मूल तथा स-	अपूर्व कथा	समर विहार विंद्रावन
६ लङ्काकाण्ड	सभा बिलास	क़िस्सा गुलसनोवर	कल्प भाष्य
७ उत्तरकाण्ड	तुलसी शब्दार्थ	सहस्र रजनी चरित्र	दरसी
रामायण शब्दार्थको	भजनावली	राबिन्सन्का इतिहास	अक्षरावली
रामायण काइतिहास	प्रेमरत्न	वैद्यक भाषा	स्वयम्बोध
रामायण मानसदीपि-	युगल बिलास	निघण्टु	ज्ञान चालीसी
रामायण कवितावली	चित्र चन्द्रिका	अमर विनोद	दोहावली
रामायण गीतावली	बारहमासा बलदेवकृ-	वैद्य जीवन	बालाबोध
रामायण गीतावलीस-	मनोहर लहरी	औषधिसंग्रह कल्पवली	विद्यार्थीकी प्रथम पु-
विनयपत्रिका वा मो-	गंगा लहरी	अमृत सागर बड़ा व छो-	किताब जंत्री
विनयपत्रिका वा शि-	यमुना लहरी	वैद्य मनोत्सव	गणित कामधेनु

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
लीलावती	१भाग तथा २	किष्किन्धा काराड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत
पटवारियों की पुस्त-	भाषा तत्त्वदीपिका	सुन्दरकाराड	२६ सन् १८६७ ई०
क चार भाग	भाषा चन्द्रोदय	लङ्का काराड	मजमूआ ऐक्ट अवध
सरिश्ते तालीम	भूगोल तत्त्व	उत्तरकाराड	लगान १९ सन् १८६८
की पुस्तकें	भूगोल दर्पण	गुटका १भा० व २ व ३	ई० पुरखादारी २६
संस्कृत	इतिहास तिमिरनाशक	हिदायतनामा सुदर्शि-	सन् १८६६ ई० वग़ैरह
ऋजुपाठ १भा० २ व ३भा०	१भा० व २ व ३ भाग	सान्	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ा-
धात्वर्थ	अवधदेशीय भूगोल	पशु चिकित्सा	त १८६९ ई० ऐक्ट
नागरी व कैथी	इंगिलस्तान का इतिहास	पट्टा बख़्त कैथी	ताल्लुक़दारान् मक़-
वर्णमाला कैथी १भा०	भारतवर्षीय इतिहास	तथा क़बूलियत	रूज़ अवध २४ सन्
व २ भाग	हितोपत्रिका	रजिस्टर दाख़िल ख़ा-	१८७० ई०
तथा कैथी फारसी	बाला भूधरा	रिज तुलबा मदर्सा	ऐक्ट चोपायों का
नागरी	पद्य संग्रह	रजिस्टर हाज़िरी पाठशाला	मदारवलत बेजा
हरूफ़ मुफ़र्दात	भाषा काव्य संग्रह	क़ानून कैथी	१ सन् १८७७ ई०
अक्षरारम्भ	कवित्त रत्नाकर १भा०	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट मजमूआ ज़ाब-
वर्णप्रकाशिका	२ भाग	उर्दू कैथी महाजनी	ता फ़ौजदारी १०
१ भाग २ भाग	मंगल कोष	टिकट कैलाइसन्स का	सन् १८७२ ई०
सूर्ज पुर की कहानी	अंक प्रकाश	ऐक्ट २ सन् १८७८ ई०	ऐक्ट मालगुज़ारी
धर्म्म सिंह का वृत्तान्त	गणित प्रकाश १भा०	नागरी	मग़रबी व शिमाली
शिक्षावली	तथा २भा० व ३ व ४	ऐक्ट लगान मग़रबी	१९ सन् १८७३ ई०
शिशुबोध	गणित क्रिया	व शिमाली १० सन्	तरमीम मजमूआ
पत्र हितैषिणी	क्षेत्र प्रकाश	१८५९ ई०	ज़ाबिता फ़ौजदारी
पत्र दीपिका	क्षेत्र चन्द्रिका २ भाग	इण्डियन पिनल	११ सन् १८७४ ई०
विद्या चक्र	सकील दायरा	कोर्ट मजमूआ ज़ा-	तक़ावी के क़ायदे स-
विद्याङ्कुर	रेखागणित १भाग २	बिता फ़ौजदारी ऐक्ट	वालजवाब पुलिस
पदार्थ विद्यासार	बीजगणित १भा० व २	२५ सन् १८६१ ई०	अवध रुहेलखंड रूल-
पदार्थ ज्ञान विषय	रामायण तुलसी कृत	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्	वेकादस्तूरुल अमल
भोज प्रबन्ध सार	बालकाराड	१८६२ ई०	
राजनीति	अयोध्याकाराड	ऐक्ट रजिस्टरी २०	इति
भाषा लघु व्याकरण	आरण्य काराड	सन् १८६६ ई०	